बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda
विजया VIJAYA
देना DENA

# अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका

जनवरी–मार्च, 2022 अंक

## प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी की अध्यक्षता में तिमाही राजभाषा बैठक संपन्न

बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री संजीव चड्ढा की अध्यक्षता में दिनांक 22 फरवरी, 2022 को बैंक की केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन किया गया. इस अवसर पर बैंक के कार्यपालक निदेशकगण श्री विक्रमादित्य सिंह खीची, श्री अजय के खुराना, श्री देबदत्त चांद, मुख्य महाप्रबंधकगण, महाप्रबंधकगण, तथा उच्च कार्यपालकगण उपस्थित रहे. बैठक में बैंक में तिमाही के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन की संक्षिप्त प्रस्तुति और भविष्य में बेहतर राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा पर विस्तृत चर्चा की गई. इस अवसर पर बैठक की शुरुआत मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री अजय कुमार खोसला के सम्बोधन के साथ हुई. राजभाषा विभाग की ओर से प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह ने प्रस्तुति दी.

## हिन्दी ई–टूल्स पर ऑनलाइन कार्यशाला

दिनांक 04 फरवरी,2022 को हमारे बैंक और वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के समन्वय और संयोजन में बैंकों, बीमा कंपनियों एवं वित्तीय संस्थानों में कार्यरत स्टाफ सदस्यों के लिए हिन्दी ई–टूल्स पर ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस अवसर पर भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग के उप सचिव (राजभाषा) श्री संजय कुमार एवं उप निदेशक (राजभाषा) श्री भीम सिंह तथा बड़ौदा अंचल के प्रमुख श्री राजेश कुमार सिंह की विशेष रूप से उपस्थिति रही. इस कार्यक्रम में बैंकों/बीमा कंपनियों के लगभग 1700 स्टाफ सदस्यों ने प्रतिभागिता की.

# प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

पत्रिका के नवीनतम अंक के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए हमेशा से सुखद रहा है. इस कॉलम के माध्यम से मुझे बैंक की प्रमुख पहलों, प्राथमिकताओं के संबंध में अपने विचार साझा करने का अवसर प्राप्त होता है.

नैतिकता एवं नैतिकतापूर्ण आचरण एक व्यक्ति के साथ-साथ एक संगठन के लिए भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है. सांगठनिक नैतिकता का संबंध संगठन को सामान्य रूप से संचालित करने तक ही सीमित नहीं बल्कि संगठन को प्रत्येक दृष्टि से उत्कृष्ट बनाने से है. नैतिकता, संगठन में हमारी कार्य प्रणाली को बेहतर बनाने के साथ हमारे भविष्य का मार्ग प्रशस्त करती है और हमें निष्पक्षता के साथ कार्य करने के लिए बल प्रदान करती है. नैतिकता के रास्ते पर चलना सदैव ही एक बेहतर विकल्प होता है. संगठन में नैतिकता के माध्यम से अपने हितधारकों की अपेक्षाओं के अनुरूप नैतिक आचरण के सर्वोच्च मानकों को प्राप्त करने के साथ-साथ अपने व्यावसायिक लक्ष्यों को भी सहजता से पूरा किया जा सकता है. संगठन की लाभप्रदता का भी नैतिकता के साथ गहरा नाता है. इससे समाज में संगठन की दीर्घकालिक ब्रांड इक्विटी को विकसित करने में मदद मिलती है जिससे अंततः व्यवसाय और लाभ में वृद्धि होती है. अपने ग्राहकों को उनकी आवश्यकताओं के आधार पर सर्वश्रेष्ठ उत्पाद और सेवाएं उपलब्ध कराने के प्रति पूरी ईमानदारी, जबावदेही, पारदर्शिता, विश्वसनीयता से हम ग्राहक संतुष्टि से आगे बढ़कर ग्राहक आनंद की संभावनाएं पैदा करते हैं.

नैतिकतापूर्ण आचरण व्यक्ति एवं संस्थान दोनों में ही विश्वसनीयता लाते हैं, फलस्वरूप उनके प्रति भरोसे में वृद्धि होती है. बैंकिंग जैसे संस्थान के लिए विश्वास एवं भरोसा सबसे महत्त्वपूर्ण घटक हैं. ग्राहकों के विश्वास एवं भरोसे पर ही बैंकिंग व्यवसाय का आधार टिका हुआ है. अतः आवश्यक है कि इस पहलू पर विशेष ध्यान देते हुए कार्रवाई की जाए. आपका बैंक उन अग्रणी बैंकों में से एक है जिसने नैतिकतापूर्ण आचरण के संस्थानिक महत्त्व को गंभीरता से समझा है और इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं. हमने वर्ष 2017 में बैंक के बुनियादी मूल्य **सत्यनिष्ठा, ग्राहक केंद्रीयता, साहस, उत्साहपूर्ण स्वामित्व, नवोन्मेषिता एवं उत्कृष्टता** निर्धारित किए. इसी प्रकिया में आगे बढ़ते हुए अगस्त, 2021 माह में कार्पोरेट नैतिकता विभाग की स्थापना की और दिनांक 21.05.2022 को बेंगलुरू में आयोजित वार्षिक व्यवसाय सम्मेलन के दौरान 'हमारी नैतिक आचरण संहिता' की शुरूआत की. बैंक में बुनियादी मूल्यों को स्थापित करने और नैतिकता को बढ़ावा देने के लिए हमारे बैंक द्वारा तैयार की गई ''हमारी नैतिक आचरण संहिता'' बैंक की एक अभूतपूर्व पहल है.

बैंक की सेवाओं का लक्ष्य हमारे ग्राहकों एवं हितधारकों के जीवन में गुणात्मक बदलाव लाना है. अतः यह अनिवार्य है कि हम हर समय नैतिकतापूर्ण आचरण के पवित्रतम स्वरूप का प्रदर्शन करें. हमारी नैतिक आचरण संहिता में हमारे सहकर्मियों, ग्राहकों, अन्य हितधारकों आदि के साथ किए जाने वाले व्यवहारों के लिए मार्गदर्शी नीति निर्धारित की गई है. साथ ही इसमें हमारे साथ कार्य करने वालों से हमारी अपेक्षाएं भी निर्धारित की गई हैं. उनसे हमारी यह अपेक्षा है कि वे इस तथ्य को समझें कि यह संहिता हमारे द्वारा किए जाने वाले हर कार्य का आधार है और हमारे साथ काम करने के लिए उन्हें भी इस संहिता के मूल सिद्धांतों के अनुरूप कार्य करना होगा. हमारी नैतिक आचरण संहिता यह बताती है कि हममें से प्रत्येक अपने द्वारा किए गए कार्यों हेतु स्वयं जिम्मेदार है और यह भी कि नैतिकता के रास्ते पर चलना हमेशा सबसे अच्छा विकल्प होता है.

'हमारी नैतिक आचरण संहिता' बैंक में बुनियादी मूल्यों को स्थापित करने और नैतिकता को बढ़ावा देने पर केंद्रित है. यह नैतिक आचरण संहिता अपेक्षाओं से कहीं बढ़कर है जो कर्मचारियों के साथ-साथ ग्राहक केंद्रित भी है और हितधारक केंद्रित दृष्टिकोण पर आधारित है. नैतिक आचरण संहिता में बैंक के बुनियादी मूल्यों के साथ-साथ अनुकूल एवं प्रतिकूल व्यवहारों को उदाहरणों के साथ स्पष्ट किया गया है. इस संहिता का उद्देश्य संगठन में अनैतिक प्रथाओं के विरुद्ध अपनी आपत्तियों को व्यक्त करने की संस्कृति को बढ़ावा देना है और कर्मचारियों, ग्राहकों, आपूर्तिकर्ताओं, वेंडरों, भागीदारों, एजेंटों, प्रतिनिधियों और बैंक की ओर से कार्य करने वाले अन्य लोगों को हमसे अपेक्षित नैतिक आचरण के सिद्धांतों को स्पष्ट रूप से उपलब्ध कराना है. हमें इस संहिता में शामिल सभी बातों का अक्षरशः पालन करना चाहिए तथा नैतिकतापूर्ण आचरण करने के संबंध में कभी भी कोई प्रश्न एवं दुविधा की स्थिति पैदा हो तो हमें इसका संदर्भ अवश्य लेना चाहिए.

मुझे पूरा विश्वास है कि आप बैंक की उन्नति के लिए कार्य करते हुए हमारी नैतिक आचरण संहिता के सिद्धांतों का निरंतर पालन करेंगे और बैंक को देश के सर्वाधिक भरोसेमंद बैंक के रूप में स्थापित करेंगे.

**संजीव चड्ढा**
**प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी**

## कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

*'अक्षय्यम्'* के माध्यम से आप सभी से संवाद करना मेरे लिए एक विशेष अवसर होता है. पिछली तिमाही देश की अर्थव्यवस्था और बैंकिंग क्षेत्र के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण रही है. इस दौरान देश के आर्थिक विकास को गति देने के लिए बजट 2022 में भारत सरकार द्वारा कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए. आज जब पूरा देश भारत की आज़ादी के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में *''आज़ादी का अमृत महोत्सव''* मना रहा है, ऐसे में देश के विकास को नई गति प्रदान करने संबंधी भारत सरकार के निर्णय को वास्तविकता में अमल में लाना हम सभी का अहम दायित्व है.

फरवरी 2022 में घोषित बजट में सरकार द्वारा चार प्राथमिकताओं पर बल दिया गया है – **1. पीएम गतिशक्ति, 2. समावेशी विकास, 3. उत्पाद संवर्धन एवं निवेश, सनराइज ऑपर्चुनिटी, नवीकरणीय ऊर्जा एवं 4. जलवायु परिवर्तन संबंधी निवारक कार्य. पीएम गतिशक्ति** का सीधा संबंध देश के इन्फ्रास्ट्रक्चर को गति देने से है. **समावेशी विकास** की बात करें तो इस दिशा में कृषि, एमएसएमई, कौशल विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि के क्षेत्र में समुचित विकास के लक्ष्य पर कार्य करना है. **सनराइज ऑपर्चुनिटी** के तहत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ड्रोन तकनीक, ग्रीन ऊर्जा जैसे क्षेत्रों के विकास पर बल देना है. **नवीकरणीय ऊर्जा** के तहत उच्च दक्षता वाले सौर मॉड्यूल्स् के निर्माण तथा डिकार्बनाइजेशन हेतु बायोमास का उपयोग शामिल है. इन सभी क्षेत्रों में निर्धारित लक्ष्य को हासिल करने के लिए वित्तीय सहायता की आवश्यकता होगी और यह बैंकों के माध्यंम से ही संभव है. इसलिए इन लक्ष्यों पर कार्य करने में बैंकों की भूमिका अहम है. इसके अलावा सरकार ने इस बजट में बैंकिंग क्षेत्र के लिए भी महत्वपूर्ण पहलें की हैं जैसे कि 1.5 लाख डाकघरों को शत-प्रतिशत मुख्य बैंकिंग प्रणाली में शामिल किए जाने की योजना और अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकोंद्वारा 75 जिलों में 75 डिजिटल बैंकिंग इकाइयां (डीबीयू) स्थापित करने की योजना. सरकार की इस पहल से बैंकिंग क्षेत्र और भी व्यापक और डिजिटल होने जा रहा है जिससे अंततः समावेशी विकास और देश के आर्थिक विकास को गति मिलेगी.

देश के विकास के लिए केंद्र सरकार के निर्णयों को लागू करने के अलावा हम बैंक स्तर पर भी समाज के हित में उपयोगी कदम उठाते रहे हैं. बैंक ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर पिछले दिनों #SaluteHerShakti Contest के 2022 एडिशन का शुभारंभ किया और इसके जरिए समाज में महिलाओं की भूमिका के महत्व को उजागर किया. इसके अलावा बैंक ने तकनीक के जरिए महिलाओं को वित्तीय समावेशन का लाभ पहुंचाने के लिए रिज़र्व बैंक इनोवेशन हब के साथ *Swanari TechSprint* पहल पर कार्य करने का समझौता किया है. ऐसी पहलें निश्चित रूप से समाज में आधी आबादी को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण और निर्णायक साबित होंगी.

मुझे विश्वास है कि नए वित्तीय वर्ष में आप सभी शुरूआत से ही बैंक के व्यवसाय विकास के लिए समर्पित प्रयास जारी रखेंगे और टीम भावना से कार्य करते हुए बैंक को नई ऊंचाइयों पर स्थापित करेंगे.

**शुभकामनाओं सहित,**

**विक्रमादित्य सिंह खीची**

## कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिन्दी पत्रिका *'अक्षय्यम्'* के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए हमेशा से एक सुखद अनुभूति रही है. ग्राहकों को आसान एवं त्वरित बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में बैंक द्वारा कॉर्पोरेट स्तर से लेकर शाखा स्तर तक किए जा रहे नवोन्मेषी कार्यों और विभिन्न गतिविधियों के साथ-साथ हमारे स्टाफ सदस्यों की रचनाधर्मिता से आप सभी को अवगत कराने का यह एक सशक्त माध्यम है. पिछले 2 वर्षों में विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी बैंकिंग जगत में कई महत्वपूर्ण और सकारात्मक बदलाव हुए हैं. इसका सबसे बड़ा असर हमें डिजिटल रूपांतरण के रूप में देखने को मिला है और हाल के दिनों में इस डिजिटल रूपांतरण की गति पहले से अधिक तेज हुई है.

इस तिमाही की समाप्ति के साथ हम नए अनुभव और नई व्यावसायिक एवं आर्थिक सफलताओं के साथ नए वित्तीय वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं. नया वित्तीय वर्ष अपने साथ पूर्व की सफलताओं को दोहराने और नए कीर्तिमान स्थापित करने की चुनौती लेकर आया है. हमने अपने ग्राहकों के लिए आसान और सुलभ बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध कराने तथा 'कभी भी, कहीं से भी' अर्थात् सुदूर स्थानों से भी बैंकिंग की सुविधा उपलब्ध कराने की दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रगति की है. डिजिटलीकरण की ओर लोगों में बढ़ती रूचि को देखते हुए बैंक ने अपनी डिजिटल सुविधाओं में कई महत्वपूर्ण, भविष्योन्मुख और अनूठी चीजें जोड़ी हैं जिनमें प्रमुख रूप से हमने अपने मोबाइल बैंकिंग ऐप **'बॉब वर्ल्ड' के चार स्तंभों ''बचत'', ''उधार'', ''निवेश'' और ''ख़रीदारी''** के माध्यम से एक क्लिक में सभी बैंकिंग, निवेश और ऑनलाइन खरीद की गतिविधियों को सुविधाजनक, सुरक्षित और त्वरित बनाया है.

इसके अलावा, हम अपने ग्राहकों की सुविधा के लिए अपने अधिकांश डिजिटल उत्पादों को हिन्दी सहित कई अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराने का प्रयास कर रहे हैं. चूंकि बैंकिंग व्यवसाय आर्थिक और सेवा दोनों क्षेत्रों से जुड़ा है अत: विकास के लिए ग्राहकों को बैंक से जोड़े रखना एवं बैंकिंग संबंधी उनकी जरूरतों का ध्यान रखना हमारे मजबूत अस्तित्व और भविष्य के लिए अत्यंत आवश्यक है. बैंकिंग चाहे डिजिटल हो या भौतिक, ग्राहकों से संबंध मजबूत बनाने में 'ग्राहक-संतुष्टि' को एक विशेष घटक माना जाता है. अत: ग्राहक-संतुष्टि के लिए यह आवश्यक है कि उनसे समुचित संवाद किया जाए और वह संवाद उनकी अपनी भाषा में हो.

अपने ग्राहकों की अपेक्षाओं और आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए हमने हाल ही में, अपनी व्हाट्सएप बैंकिंग सेवा में भी हिन्दी भाषा का समावेश किया है. इसके साथ ही इन सुविधाओं के प्रति ग्राहकों में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से विभिन्न सोशल मीडिया साइट्स एवं बैंक की वेबसाइट पर इन सुविधाओं से संबंधित वीडियो हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जा रहे हैं. भारतीय भाषाओं में उपलब्ध बैंकिंग सुविधाओं के प्रति ग्राहकों का निरंतर आकर्षण बढ़ता जा रहा है जो कि बैंक की आमजनों के बीच लगातार गहरी होती पैठ का प्रतीक है.

मेरा मानना है कि 'उत्कृष्टता की कोई सीमा नहीं है', अत: निरंतर उच्चतम गुणवत्ता वाले उत्पादों एवं उन्नत तकनीक के साथ हमें अपने ग्राहकों के लिए बाधारहित बैंकिंग सुविधाएं प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए. मुझे विश्वास है कि हम अपनी समर्पित टीम के सहयोग से उत्कृष्टता के साथ अपने ग्राहकों को सेवाएं प्रदान करते रहेंगे और बैंक की उत्तरोत्तर प्रगति तथा वित्तीय वर्ष 2022-23 में श्रेष्ठ व्यावसायिक प्रदर्शन के लिए समर्पित प्रयास करेंगे.

शुभकामनाओं सहित,

**अजय के खुराना**

## कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी पत्रिका **'अक्षय्यम्'** के नवीनतम अंक **जनवरी–मार्च, 2022** के माध्यम से आप सभी से संवाद करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता और हर्ष की अनुभूति हो रही है. यह संयोग है कि इस वर्ष नए विक्रम संवत् का शुभारंभ और नए वित्तीय वर्ष 2022–23 में प्रवेश समानांतर रूप से हुआ है. सर्वप्रथम मैं आप सभी को नए विक्रम संवत् एवं नए वित्तीय वर्ष में नई सफलता और उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु शुभकामनाएं देता हूं.

हमने तमाम बाधाओं को पार करते हुए जनहित में अपनी उत्कृष्ट बैंकिंग सेवाएं जारी रखी हैं. इसी का प्रतिफल है कि आज हम फिर से एक बेहतर कल के लिए मजबूती से कार्य कर रहे हैं. सार्वजनिक क्षेत्र का अग्रणी बैंक होने के नाते जन–जन तक बहुत ही सहजता के साथ बैंकिंग सुविधाएं पहुंचाना हमारा मुख्य उद्देश्य है. इस मूल उद्देश्य की प्राप्ति के क्रम में आज डिजिटल माध्यम ने हमें नई गति एवं दिशा प्रदान की है. बैंक के डिजिटल चैनलों के माध्यम से जहां एक ओर हम हर वर्ग तक बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में समर्पण और सेवा भाव के साथ डटे हुए हैं वहीं दूसरी ओर डिजिटल चैनलों ने बैंकिंग सेवाओं में मितव्ययिता के साथ ग्राहक आधार में वृद्धि सुनिश्चित करने का अवसर भी प्रदान किया है. इसके साथ ही हमें उत्कृष्ट ग्राहक सेवा के माध्यम से समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने के अवसर का पूरा लाभ उठाना चाहिए.

बैंक के लिए कार्य करते हुए हमारा प्रमुख लक्ष्य व्यवसाय वृद्धि तो अवश्य ही होना चाहिए परंतु इसके साथ–साथ हमें अपने परिवेश के प्रति भी सजग रहना चाहिए. हमें अपने स्वास्थ्य, सहयोगियों के साथ समन्वय का भाव, समाज के प्रति जिम्मेदारी जैसे विषयों पर भी ध्यान देना चाहिए. डिजिटल युग में डिजिटल सुविधाओं के इस्तेमाल के साथ–साथ व्यक्तिगत संपर्क एवं संवेदनाओं को बचाकर रखना भी एक चुनौती है. व्यक्तिगत संपर्क एवं संवेदनाएं ऐसी अमूल्य निधि हैं जिनकी हर दौर में आवश्यकता रहती है और खासकर हम जैसे सेवा संस्थानों के लिए. विशेष रूप से हमें अपने पुराने एवं श्रेष्ठ ग्राहकों के साथ निरंतर संपर्क और संवाद बनाए रखना है ताकि उनकी बैंकिंग आवश्यकताओं एवं समस्याओं के संबंध में सूचना मिलती रहे और हमारे संबंध में और प्रगाढ़ता आए.

मेरा मानना है कि सफलता या लक्ष्यों की प्राप्ति क्षणिक प्रयासों के परिणाम नहीं हैं बल्कि इसकी पृष्ठभूमि में प्रत्येक दिन के प्रयास, समन्वय, लक्ष्यों के प्रति समर्पण और सभी स्तरों पर टीम भावना के साथ सतत् रूप से कार्य करने की सद्भावना शामिल है. बैंकिंग क्षेत्र से संबद्ध होने के नाते व्यवसाय और लाभार्जन हम सभी का मुख्य उद्देश्य है. इसके साथ–साथ हमें टीम भावना से कार्य करते हुए एक दूसरे के प्रति सदभाव और आपसी सामंजस्य को भी लगातार महत्व देना जारी रखना चाहिए. जब हम टीम भावना और उत्कृष्ट ग्राहक सेवा की सोच लेकर कार्य करते हैं तो अपेक्षाओं के अनुरूप परिणाम अवश्य ही प्राप्त होते हैं.

मुझे पूरा विश्वास है कि आप सभी बैंक की प्रगति के लिए सदैव प्रयासरत रहेंगे. आपके जीवन में नए अवसर, सुख, समृद्धि और संपन्नता आए, ऐसी मेरी कामना है.

शुभकामनाओं सहित,

देबदत्त चांद

**देबदत्त चांद**

## कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की तिमाही पत्रिका *'अक्षय्यम्'* के नवीनतम अंक के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता का विषय है. अब हम नए वित्तीय वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं जिसमें नई चुनौतियां और नए लक्ष्य हमारे सामने हैं. पिछले वर्ष कठिन परिस्थितियों के बावजूद भी हम सभी ने प्रतिबद्धता से कार्य किया. यह बैंक के प्रति हमारी कर्तव्यनिष्ठा एवं सक्रियता को दर्शाता है. हमें इसे आगे भी जारी रखना है.

व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन की यात्रा में मैं आप सभी से कहना चाहूंगा कि आप सभी कार्यालयीन और व्यक्तिगत जीवन के बीच सामंजस्य बना कर चलें. लक्ष्य प्राप्ति के लिए व्यापक दृष्टिकोण अपनाएं. समय का सही प्रबंधन और इसका सदुपयोग ही हमें लक्ष्य तक पहुंचाता है. मौजूदा समय में भारतीय बैंकिंग अपनी नवोन्मेषिता एवं उन्नत उत्पादों के कारण परंपरागत बैंकिंग से भिन्न है. सम्पूर्ण बैंकिंग क्षेत्र में व्यापक स्तर पर ग्राहक केन्द्रित पहलें की जा रही हैं. इसने बैंकिंग क्षेत्र को और प्रतिस्पर्धात्मक बना दिया है. इस बढ़ी हुई प्रतिस्पर्धा एवं हाल में हुए परिवर्तनों ने बैंकों के साथ–साथ विनियामकों के समक्ष भी अनुपालन संबंधी कई महत्वपूर्ण चुनौतियां पेश की है. किसी भी बैंक के लिए दीर्घकालिक सफलता एवं सुदृढ़ता हेतु अनुपालन एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है. हमारे लिए यह अनिवार्य है कि अपने व्यवसाय में अंतर्निहित जोखिमों को समुचित रूप से समझें, सजग रहें तथा उनके अनुपालन हेतु तदनुरूपी कारगर कदम उठाएं.

हमारा बैंक समय के अनुरूप अपने उत्पादों को बेहतर और ग्राहकोन्मुखी बनाता रहा है. इस दिशा में कार्य करते हुए हमने बैंकिंग सुविधाओं को सबसे आसान और सरल तरीके से ग्राहकों तक पहुंचाने हेतु बॉब वर्ल्ड ऐप में एक ही प्लैटफ़ार्म पर बैंकिंग और हमारी आवश्यकताओं से जुड़ी सारी प्रमुख ख़रीदारी का विकल्प उपलब्ध कराया है. यह न केवल लोगों के समय की बचत करेगा बल्कि हमारे लिए तुलनात्मक और किफ़ायती दरों पर ख़रीदारी के व्यवहार को भी विकसित करेगा. हमारा बैंक अपने बैंकिंग दायित्वों के निर्वहन के साथ–साथ सामाजिक दायित्वों को पूरा करने के प्रति भी प्रतिबद्धता से कार्य कर रहा है. इसी दिशा में कार्य करते हुए हाल ही में बैंक ने एमएसएमई और महिला उद्यमियों को आय अर्जन वाले लघु ऋण सुविधा तक आसान पहुंच सुनिश्चित करने के लिए एक प्रमुख एनबीएफसी के साथ समझौता किया है. इससे समाज में छोटे व्यवसाय, महिला उद्यमियों, कृषि और संबद्ध उद्यमों के उत्थान में सहायता मिलेगी.

मौजूदा परिस्थिति में वैश्विक अर्थव्यवस्था महामारी के कारण उत्पन्न संकट से उबरने की प्रक्रिया में थी कि रूस–यूक्रेन संकट के कारण विश्व भर की अर्थव्यवस्था में पुनः एक अनिश्चितता का माहौल उत्पन्न हुआ है. बहरहाल, भारत के परिप्रेक्ष्य में इसका अभी बहुत अधिक प्रभाव नहीं दिख रहा है. अर्थव्यवस्था के अधिकांश सेक्टर में वृद्धि दिखाई दे रही है. इसका हमें अधिक से अधिक लाभ उठाते हुए बैंक के व्यवसाय में गुणात्मक एवं मात्रात्मक बढ़ोतरी करनी है.

मुझे विश्वास है कि हम सभी के समन्वित प्रयास, नीतिपरक कार्यप्रणाली और कठिन परिश्रम से हम अपने व्यावसायिक लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त करेंगे एवं बैंक की प्रतिष्ठा में और वृद्धि करेंगे.

शुभकामनाओं सहित,

जयदीप दत्ता राय

**जयदीप दत्ता राय**

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

# अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका

वर्ष – 18 * अंक – 69 * जनवरी–मार्च, 2022

–: कार्यकारी संपादक :–

संजय सिंह

प्रमुख – राजभाषा एवं संसदीय समिति

–: संपादक :–

पुनीत कुमार मिश्र

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति)

–: सहायक संपादक :–

अम्ब्रेश रंजन कुमार

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

डॉ. सुमेधा

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

–: संपर्क :–

राजभाषा विभाग

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, बड़ौदा भवन, पांचवी मंजिल,
आर सी दत्त रोड, अलकापुरी, बड़ौदा – 390007

फोन : 0265–2316581

ईमेल : rajbhasha.ho@bankofbaroda.com
akshayyam@bankofbaroda.com

राजभाषा विभाग, बैंक ऑफ़ बड़ौदा,
पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड, अलकापुरी,
बड़ौदा – 390007 से संपादित एवं प्रकाशित.

रुपांकन एवं मुद्रण

मे. प्रिंट प्लस प्रा.लि.,
212, स्वस्तिक चेंबर्स, एस.टी. रोड,
चेंबूर, मुंबई 400071.

प्रकाशन तिथि : 27/04/2022

**सूचना :**

बैंक के स्टाफ सदस्य पत्रिका में प्रकाशन हेतु अपनी रचनाएं/ सामग्री ई–मेल: akshayyam@bankofbaroda.co.in पर भेज सकते हैं.

# अनुक्रमणिका

## इस अंक में

'भावनाओं को अभिव्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम अपनी मातृभाषा ही है' ..... 8–10

साइबर अपराध एवं साइबर सुरक्षा ..... 11–14

स्वतंत्रता के 75 वर्ष: बैंकिंग क्षेत्र की उपलब्धियां एवं चुनौतियां ..... 15–18

कृत्रिम भाषाएं – संक्षिप्त समीक्षा..... 19–20

भाषा बहता नीर आइये ! सीखें भारतीय भाषाएं .... 26–27

तरबूज ..... 28–30

वृन्दावन की अविस्मरणीय यात्रा..... 31–33

महिला सशक्तिकरण..... 35–38

भारत की आज़ादी के आंदोलन में हिंदी की भूमिका. 39–41

अपने ज्ञान को परखिए ..... 48

बैंकिंग शब्द मंजूषा..... 49

चित्र बोलता है..... 50

अक्षय्यम्, बैंक ऑफ़ बड़ौदा की सभी शाखाओं/कार्यालयों में नि:शुल्क वितरण के लिये प्रकाशित की जाती है, इसमें व्यक्त विचारों से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.

# कार्यकारी संपादक की कलम से

*'अक्षय्यम्'* के नवीनतम अंक के माध्यम से आपसे रू-ब-रू होना मेरे लिए प्रसन्नता की बात है. प्रसिद्ध अमरीकी लेखक एवं **पूर्व एडमिरल विलियम एच मैकरेवन** ने अपनी चर्चित पुस्तक - *मेक योर बेड* के माध्यम से पाठकों के साथ अपने अनुभवों को साझा करते हुए प्रत्येक दिन की शुरूआत में ही दिन के किसी कार्य को पूर्ण करने की आवश्यकता पर बल दिया हैं. यदि हम दिन के पहले पहर ही एक छोटे से कार्य को पूरा कर लेते हैं तो हमारे दिन की शुरूआत संतुष्टि और सकारात्मकता के साथ होती है. इस तरह हम पूरे दिन में छोटे-छोटे लक्ष्यों वाले कई कार्य को अंजाम दे सकते हैं. दरअसल *टास्क कंप्लिशन* या किसी कार्य का पूर्ण होना हमारे जीवन में सकारात्मकता के संचार से जुड़ा है और *टास्क कंप्लिशन* के लक्ष्य के साथ काम करना हमारे कार्यों में आने वाले व्यवधान को दूर करता है. यह बहुत ही सामान्य सी लगने वाली युक्ति है परंतु व्यवहार में लाने पर कार्य जीवन में नई ऊर्जा एवं स्फूर्ति का संचार कर देती है.

संघर्ष और सहनशीलता अस्तित्व के लिए जरूरी है. हम मानव समाज की ही बात करें तो हम देखते हैं कि मानव समाज ने हजारों वर्षों से अपने संघर्ष के जरिए परिस्थितियों पर जीत पाकर अपने अस्तित्व को बरकरार रखा है. मानव समाज को वर्तमान में भी अपनी यात्रा जारी रखने के लिए कई चुनौतियों और संघर्षों का सामना करना पड़ रहा है और संघर्ष पर जीत पाकर हम भविष्य में अपने अस्तित्व को बेहतर बनाने की दिशा एवं दृष्टि के साथ आगे बढ़ रहे हैं. पिछली तिमाही हम सभी के लिए भाषाई दृष्टि से विशेष रही है. इस दौरान हमने बैंक के देश एवं विदेशों में स्थित कार्यालयों में विश्व हिंदी दिवस को मनाया तथा इस अवसर पर सभी स्टाफ सदस्यों के लिए 'हिंदी का सरताज' प्रतियोगिता भी आयोजित की गई. इसके अलावा 21 फरवरी को भी हम सभी ने मिल कर **अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस** मनाया एवं इस अवसर पर बैंक द्वारा प्रदान की जाने वाली भारतीय भाषाओं में ट्रांजेक्शन एसएमएस की सुविधा हेतु ग्राहकों द्वारा अधिक से अधिक रजिस्ट्रेशन के लक्ष्य के साथ महा लॉगिन दिवस मनाया जिसे अच्छा प्रतिसाद मिला. हमारे उच्च कार्यपालकों एवं स्टाफ सदस्यों ने आगे बढ़कर स्वयं इस सुविधा के लिए पंजीकरण किया. इस सुविधा को हमारे ग्रामीण एवं अर्द्धशहरी क्षेत्र के ग्राहकों अथवा भारतीय भाषाओं में ज्यादा सहजता महसूस करने वाले ग्राहकों के बीच प्रचारित-प्रसारित करने की आवश्यकता है. यह बैंकिंग की परिदृश्यता, ग्राहकों की साइबर हमलों से सुरक्षा एवं ग्राहकों से घनिष्ठ संबंध स्थापित की दृष्टि से आवश्यक है. भारतीय भाषाएं हमारे पास मुफ्त में उपलब्ध ऐसा संसाधन है जिनके बल पर हम देश के हर व्यक्ति के साथ अपना जुड़ाव स्थापित करते हुए अपनी सेवाओं एवं उत्पादों की अधिकतम बिक्री कर सकते हैं. बैंक ने बॉबवर्ल्ड को हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध करने के साथ-साथ व्हाट्सेप बैंकिंग की हिन्दी सेवा भी आरंभ की है जिसे ग्राहकों का अच्छा प्रतिसाद मिल रहा है. हमें भारतीय भाषाओं में इन सभी बैंक के उत्पादों एवं सेवाओं को अधिक से अधिक प्रचारित-प्रसारित करने की आवश्यकता है ताकि भारतीय भाषाओं को बोलने समझने और ऐसा करने में सहूलियत महसूस करने वाली देश की लगभग 97% से 98% जनसंख्या का बड़ा हिस्सा हमारे बैंक के साथ जुड़ सके.

पत्रिका के इस अंक में हमने महिला सशक्तिकरण की दिशा में उल्लेखनीय कार्य करने वाली **पद्मश्री छुटनी देवी** के साक्षात्कार को शामिल किया है. इसी अंक में बैंक के मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) **श्री अजय कुमार खोसला** के आलेख *'साइबर सुरक्षा है जरूरी'* को प्रकाशित कर रहे हैं. इस आलेख में बैंकिंग में साइबर सुरक्षा की अहमियत और उपाय का विस्तृत वर्णन है. अंक में शामिल **गौतम सागर** का लेख *'भारत की आज़ादी के आंदोलन में हिंदी की भूमिका'* भारतीय स्वतंत्रता में हिंदी की भूमिका को उजागर करता है. श्री शिव शंकर मित्रा द्वारा लिखित बैंकिंग संस्मरण को पढ़ते हुए आपकी आंखे निश्चित तौर पर नम हो जाएंगी.

मुझे विश्वास है कि यह अंक आपको अवश्य ही पसंद आएगा और आप अपने अभिमत से हमें अवगत कराएंगे.

**शुभकामनाओं सहित,**

**संजय सिंह**
**प्रमुख - राजभाषा एवं संसदीय समिति**

## इस अंक में


साक्षात्कार - पद्मश्री छुटनी देवी..... 8-10

साइबर अपराध एवं साइबर सुरक्षा ..... 11-14

स्वतंत्रता के 75 वर्ष: बैंकिंग क्षेत्र की उपलब्धियां एवं चुनौतियां ..... 15-18

महिला सशक्तिकरण..... 35-38

भारत की आज़ादी के आंदोलन में हिंदी की भूमिका. ..... 39-41

'बैंकिंग में साइबर अपराध' विषय पर अखिल भारतीय सेमिनार .....46

साक्षात्कार

# [illegible]

*"इतने बैंकों में से एकमात्र बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने ही मुझसे संपर्क किया एवं मेरे संस्थान का खाता खोलने के लिए हर प्रकार सहयोग प्रदान करने का विश्वास दिलाया."*

*वर्षों से हमारे समाज में मौजूद कई कुप्रथाओं में से अंधविश्वास पर आधारित डायन प्रथा आज भी हमारे समाज में विद्यमान है. इस प्रथा का मुख्य शिकार महिलाएं ही रही हैं. इस प्रथा से पीड़ित महिलाओं के जीवन के संघर्षों को और नजदीक से जानने के लिए डायन प्रथा का दंश झेल चुकी झारखंड के सरायकेला-खरसावां जिले के बीरबांस गांव की रहने वाली पद्मश्री छुटनी देवी से* ***सुश्री मौमिता दास साहा, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा),*** *जमशेदपुर क्षेत्र एवं* ***श्री विश्वंभर सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक एवं शाखा प्रमुख,*** *कांड्रा शाखा, जमशेदपुर क्षेत्र ने बातचीत की. छुटनी देवी को 26 वर्ष पहले डायन बताते हुए गांव से निकाल दिया गया लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी तथा अंधविश्वास और डायन प्रथा के खिलाफ निरंतर संघर्ष किया और इसके खिलाफ प्रभावी अभियान चलाती रहीं हैं. आपके इस अभियान की वजह से देश के विभिन्न हिस्सों से डायन प्रथा की शिकार महिलाएं आपसे मदद मांगने आती हैं. आपने अभी तक लगभग 155 महिलाओं को डायन प्रथा के अभिशाप से मुक्त किया है. आप वर्ष 2001 से बिना किसी पारिश्रमिक के पूरी लगन से इस काम में लगी हैं. डायन प्रथा उन्मूलन ही आपका मूल लक्ष्य है. समाज सुधार के अथक प्रयासों हेतु भारत सरकार ने आपको वर्ष 2021 के लिए पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया है. अक्षय्यम् के इस अंक में हम उनसे हुई बातचीत के प्रमुख अंश अपने पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं.* ***– संपादक***

**कृपया आप अपने बारे में बताएं.**

वर्तमान में मैं सरायकेला – खरसावां जिले के गम्हरिया प्रखंड की बीरबांस पंचायत के भोलाडीह गांव में रह रही हूं जो कि मेरा मायका और मेरे संघर्ष का सबसे बड़ा सहारा भी है. मेरी बहुत ही कम उम्र में शादी कर दी गई थी. मेरा ससुराल गम्हरिया प्रखंड के अंतर्गत महतंडी गांव में था. मेरा आरंभिक जीवन एक साधारण ग्रामीण औरत के जीवन की तरह घरेलू कामकाज करने में ही व्यस्त रहा. दैनिक दिनचर्या ग्रामीण जीवन की तरह ही बीतती

गयी – गाय भैंस पालन, खेती–बाड़ी आदि में ही मैं व्यस्त रहा करती थी. मेरी कुल चार संतान– तीन बेटे और एक बेटी हैं. इन चारों को लेकर ही मैंने अपनी लड़ाई लड़ी. मुझे पढ़ना–लिखना नहीं आता है, पर जीवन के इस छोर पर पहुंच कर थोड़ा समझ जरूर लेती हूं.

### समाज में आपको किन संघर्षों से गुजरना पड़ा?

मेरा संघर्ष लंबा रहा है. मेरे माथे की इस चोट को देखिए जो मेरे ससुराल वालों ने मुझे दी है. (एक गहरी चोट को दिखाते हुए) आज मेरी उम्र 60 बरस से ज्यादा है और मेरी शादी बारह साल की उम्र में हो गई थी. शादी के करीब 16 साल बाद 1995 में एक पारिवारिक मतभेद के बाद जब हमारे एक पड़ोसी की नवजात बच्ची बीमार हुई तो ग्रामीणों ने शक जताया कि मैंने उस पर जादू–टोना कर दिया है. इसके बाद मेरे साथ जो प्रताड़ना का दौर शुरू हुआ उसको याद करते मेरी आंखें भर आती हैं (घटना को याद कर रो पड़ती हैं). पुराने दिनों को याद करती हूं तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं. ग्रामीणों ने मुझे डायन मान लिया. मुझे पेड़ से बांधकर पीटा, गांव से भी बाहर निकाल दिया. तब मेरे पति की भी हिम्मत नहीं हुई कि वो मेरा साथ दें. उन्हें उसी गांव में रहना था और चुपचाप ग्रामीणों के फैसले को मान लिया, खेत–जमीन, गाय, भैंस देख–रेख करनी थी. यह बात 25 सितंबर, 1995 की है, उसी रात मेरा खात्मा मतलब मृत्यु निश्चित थी. सभी लोग मुझे खत्म करने की योजना बना रहे थे. पर मैंने भी इतनी यातना सहने के बाद भी मन ही मन ठान लिया था कि किसी तरह मुझे बचना है. मैं गांव के मुखिया के पास भी मदद मांगने गई पर वहां से भी मुझे भगा दिया गया. उस समय मेरे पास एक घड़ी थी उसी को लेकर रात के बारह बजने का इंतजार करती रही. उस समय मेरी उम्र लगभग 30–32 साल की होगी. गांव देहात की बात है. सभी सो गए थे, मैं अपने बच्चों को ले कर गांव से निकल गई, मैंने अपने साथ बस अपने जमीन के कागज ले लिए थे. एक रिश्तेदार के यहां रुकी, पर वहां भी मुझे लोगों से खतरा था. मैं नाले से होते हुए उफनती हुई खरकई नदी पार कर किसी तरह आदित्यपुर में अपने भाई के घर पहुंची. पर वहां भी मेरी मां को जब सब बात पता चली तब वह भी सदमे से कुछ दिनों में चल बसी. मैंने गांव के ही बाहर एक पेड़ के नीचे झोपड़ी बनाकर सिर छिपाने का किसी प्रकार बंदोबस्त किया. सितंबर से अप्रैल लगभग 8 महीने तक मेहनत–मजदूरी करके किसी तरह अपना और बच्चों का पेट पालती रही. मेरे पूरे संघर्ष में मेरे भाइयों ने मेरा पूरा साथ दिया. इन सबसे उबरने में मुझे पांच साल लग गए और आज मैं ऐसी महिलाओं के लिए काम करती हूं जो मेरी ही तरह पीड़ित हैं जिन्हें सहयोग की जरूरत है. डायन प्रथा उन्मूलन ही मेरा मूल लक्ष्य है. यह प्रथा एक अंधविश्वास है जो समाज में प्रचलित है. जैसे हवा बहती है वैसे यह अंधविश्वास और मान्यताएं भी बहती हैं. पर सभी को अंधविश्वास पर भरोसा करने से पहले इसके अनुचित परिणामों के बारे में गहराई से सोचना चाहिए.

### कृपया आप अपने जीवन की उपलब्धि हमसे साझा करें.

मेरे जीवन की उपलब्धि अगर कुछ है तो वह खुशी और आत्मसंतुष्टि है, जो मुझे तब मिलती है जब मैं किसी पीड़िता की सहायता करने में या उन्हें अत्याचार मुक्त करने में सक्षम हो पाती हूं. उनकी आंखों में जो प्रेम, स्नेह एवं आस्था की झलक दिखती है, उसी से मुझे परम शांति मिलती है. कोई पीड़िता अपने सामान्य जीवन में लौट पाए, निडर होकर समाज में पांव रख पाए मेरे इसी लक्ष्य को आगे बढ़ाने के लिए मैं एक गैर सरकारी संस्थान (NGO) जिसका नाम 'अंधविश्वास उन्मूलन संस्थान' के नाम से स्थापित करने की योजना बना चुकी हूं. मेरी पूरी टीम भी बन चुकी है जिसका मूल मंत्र डायन प्रथा का जड़ से निवारण करना होगा. अपने इस प्रयास को और व्यापक रूप देने के लिए इस गैर सरकारी संस्थान (NGO) में सदस्य के रूप में जोड़ने के लिए पीड़ित महिलाओं को ही शामिल करने का निर्णय लिया है. क्यूंकि जिस पर खुद बीती है वही दूसरे के दर्द को अच्छे से समझ पाएंगी और इस महत्वपूर्ण उद्देश्य को सफल बनाने में पुरजोर योगदान देंगी. आज तक मैंने 155 महिलाओं को डायन प्रथा के अभिशाप से मुक्त किया है. जो भयमुक्त हो कर बिना किसी आरोप के सामान्य जीवन जी रही हैं और प्रताड़ित होने से बच गईं हैं. मैं बिना किसी पारिश्रमिक के साल 2001 से पूरी लगन से इस काम में लगी हूं. पहले मैं अकेली थी पर आज मेरे पास महिला सदस्यों का परिवार है जिसकी मुझे खुशी है.

### सामाजिक उत्थान तथा समाज की नारी की स्थिति के बारे में आपका क्या मत है?

सामाजिक व्यवस्था पर मैं अपना विचार इस तरह रखना

चाहूंगी कि हमारा समाज अभी भी इतना पिछड़ा हुआ है कि महिलाओं के लिए आगे बढ़ना अपेक्षाकृत अधिक चुनौतीपूर्ण है. इसमें हमारे घर की महिलाओं का भी काफी हद तक दोष है. वह मान लेती हैं कि वह कमजोर हैं, ज़ोर-जुल्म सहती रहती हैं. सोचती हैं नारी जन्म सहने के लिए ही हुआ है. जो घर पर सास हैं वह अपनी बहुओं को राशन, सामान तक लेने बाहर नहीं निकलने देतीं हैं. गांवों में कितनी सारी आंगनबाड़ी सेविकाओं की जरूरत है वहां भी घर से समर्थन न मिलने पर कई सेविकाएं जो इससे जुड़ने की इच्छा रखती हैं, जुड़ नहीं पाती हैं. मेरा मानना है कि समाज में बदलाव लाने के लिए हमें अपनी सोच को बदलना होगा.

**मौजूदा नारी संघर्ष में तकनीक ने क्या भूमिका निभाई है?**

इस दिशा में मैं कहना चाहूंगी कि तकनीक का लाभ शहरों को अधिक मिल रहा है. हमारे गांव-देहात में बस एक ही फायदा हुआ है कि अभी हम सब के पास मोबाइल फोन उपलब्ध हैं जिससे कहीं पर कोई पीड़िता के केस की सूचना आती है तो तत्काल स्थानीय थाने से संपर्क या स्थानीय प्रशासन से संपर्क कर मदद मिल जाती है और उसपर कार्रवाई की जाती है. तकनीक के बढ़ते प्रभाव के कारण वर्ष 1996 में 26-27 मई को मेरी जीवनी के कुछ अंश पर आधारित चलचित्र 'आखिर कब तक' बनाया गया था.

**अंधविश्वास उन्मूलन के संबंध में गांव तथा समाज में किस तरह जागरूकता लाई जा सकती है?**

इसके लिए यह जरूरी है कि सभी लोग अंधविश्वास को त्याग दें. हमें अंधविश्वास को जड़ से मिटाना होगा. किसी की तबीयत खराब होती है तो वह ओझा-गुनिन के पास जाने के बजाए पढ़े-लिखे डॉक्टरों के पास जाएं ताकि उनका सही इलाज हो सके. कोई बेबुनियाद और मनगढ़ंत बातों पर न जाए. इसलिए एक बार मैंने स्थानीय प्रशासन की सहायता से लोक जागरूकता के लिए कई ओझाओं की बैठक रखी थी. जहां सभी के समक्ष उनके झूठ का पर्दाफाश किया था और यह स्वीकार करवाया था कि किस प्रकार वो इलाज के नाम पर लोगों से भारी पारिश्रमिक वसूलते हैं.

**अंधविश्वास उन्मूलन में भाषाओं की भूमिका को आप कैसे देखती हैं?**

मैं मानती हूं कि अंधविश्वास उन्मूलन आंदोलन में भाषा की बहुत ही अहम भूमिका है. इसकी मैं स्वयं ही उदाहरण हूं. मैं पढ़ी-लिखी नहीं हूं. पर अपनी लड़ाई मैंने खुद अपनी भाषा में ही लड़ी. जहां भी अपनी अर्जी ले कर गई चाहे वह पंचायत हो या एसडीओ का कार्यालय हो सभी जगह मैंने अपनी भाषा में ही बात रखी और सभी को अपना दर्द समझाया. मेरी भाषा बांग्ला, हिन्दी एवं संथाली भाषा का सम्मिश्रण है. भावनाओं को अभिव्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम अपनी मातृभाषा ही होती है.

**आज की नारी के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगी?**

आज की नारी के लिए मैं यही संदेश देना चाहूंगी कि महिलाएं अपने आप को कमजोर न समझें. अपने हक, अधिकारों के लिए जरूरत पड़े तो लड़ें. परंतु घर परिवार का ध्यान रखना प्राथमिकता रहे. अपना मूल मंत्र यही बनाएं कि 'जुल्म नहीं सहेंगे, नहीं करेंगे'. अपने को सशक्त समझें. घरेलू हिंसा दूर करें. दिशा व दशा में बदलाव करें.

**महिला सशक्तिकरण पर आपके क्या विचार हैं?**

समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार होगा तो ही हमारा समाज उन्नत होगा. महिलाओं को अपने आप को सशक्त बनाने के लिए खुद ही प्रयास करना होगा. समाज की पिछड़ी हुई महिलाओं को विशेष रूप से बताना चाहती हूं, *''नमक - रोटी खाओ, माड़-भात खाओ, पर पढ़ाई चलाए जाओ.''* हर पंचायत में आंगनबाड़ी सेविकाएं हैं, हमारे गावों की सभी महिलाओं से आह्वान करती हूं कि आगे आएं और समाज में महिलाओं की स्थिति की सुधार में हर दिशा में आगे बढ़ें.

**''बैंक ऑफ़ बड़ौदा'' का नाम सुनकर आपके मन में क्या विचार आते हैं?**

''बैंक ऑफ़ बड़ौदा'' के नाम से मुझे एक विशेष आस्था का स्थान लगता है. क्यूंकि देश में इतने बैंकों में से एकमात्र बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने ही मुझसे संपर्क किया एवं मेरे संस्थान का खाता खोलने के लिए हर प्रकार का सहयोग प्रदान करने का भरोसा दिलाया. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में मुझे अतिथि के रूप में आमंत्रित कर सम्मानित भी किया. मैं बैंक ऑफ़ बड़ौदा की बहुत आभारी हूं.

* * *

# साइबर अपराध एवं साइबर सुरक्षा

**संकलन एवं प्रस्तुति:**
**अजय कुमार खोसला**
मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन)
प्रधान कार्यालय, बड़ौदा

मौजूदा दौर में पूरा विश्व दो अलग-अलग दुनिया में जी रहा है, एक भौतिक दुनिया तो दूसरी वर्चुअल दुनिया. वर्चुअल दुनिया ने हमें एक तरह से एक्स्टेंडेड वर्ल्ड का उपहार प्रदान किया है जो असीमित, आभासी और तकनीकी है. पिछले कुछ दशकों में वर्चुअल वर्ल्ड और भी अधिक व्यापक और सघन हुआ है. इस आभासी दुनिया में मानवीय हस्तक्षेप बड़ी तेज गति से बढ़ा है और इसका सर्वोत्तम लाभ उठाने के लिए यह जरूरी है कि वर्चुअल वर्ल्ड की गतिविधियों को संतुलित और नियंत्रित रखने के लिए उपयुक्त उपाय किए जाएं. वर्चुअल वर्ल्ड को साइबर वर्ल्ड के नाम से भी जाना जाता है और इस असीमित दुनिया के क्रियाकलापों को दुरूस्त रखने के लिए साइबर सुरक्षा और कानून का सहारा लिया जाता है. आज व्यवसाय जगत सहित अन्य क्षेत्रों में तकनीक का बोलबाला है, इन क्षेत्रों की गतिविधियों में पारदर्शिता और निष्ठा बनाए रखने के लिए हमारे लिए साइबर नीतियों और इसके तहत निर्धारित मानकों का पालन करना अत्यंत जरूरी है.

## बैंकिंग में साइबर अपराधों के स्वरूप और सुरक्षात्मक उपाय

साइबर हमलों से संबंधित अपराधों को दो तरह से वर्गीकृत किया जा सकता है. ऐसे अपराध जिनमें कंप्यूटर/ डिवाइस को एक लक्ष्य के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, उदाहरण के लिए हैकिंग, मालवेयर आदि. दूसरा ऐसे अपराध जिनमें कंप्यूटर/ डिवाइस को एक हथियार की तरह इस्तेमाल किया जाता है, उदाहरण के लिए साइबर आतंकवाद, क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी आदि.

तकनीक की उन्नत सुविधाओं की उपलब्धता ने इसके दुरूपयोग की संभावनाओं को भी बढ़ाया है. तकनीक के दुरूपयोग के कारण ही साइबर अपराध जैसी समस्याएं सामने आ रही हैं. ऐसी गतिविधियों में विभिन्न प्रणालियों जैसे कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि पर अवैधानिक तरीके से किये गए कार्य शामिल हैं. इनके उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- उपयोग में लाई जा रही प्रणालियों में व्यवधान उत्पन्न करना,
- लोगों/ संस्थाओं को किसी भी रूप में क्षति पहुंचाना,
- संस्थाओं या ग्राहकों के खाते से धनराशि का धोखाधड़ी के माध्यम से आहरण करना

### साइबर अपराध के स्वरूप निम्नलिखित हैं:

- **विशिंग–** इसका प्रयोग वाईस ओवर टेलीफोन सर्विस में होता है. ग्राहकों को फोन करके गोपनीय बैंकिंग जानकारी प्राप्त कर उनके खातों से राशि आहरण कर ली जाती है.
- **फ़िशिंग –** फ़िशिंग के तहत विवरण लेने हेतु ग्राहकों को नकली वेबसाइट के यू.आर.एल. पर डाइरेक्ट किया जाता है. इसके लिए की-लागर, स्क्रीन-लागर जैसे सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया जाता है.
- **ट्रोजन हार्स –** यह अपनी पहचान छुपाते हुए कंप्यूटर को संक्रमित कर देता है.
- मालवेयर/ मेलेशियस कोड-जैसे:
- वायरस प्रोग्राम जो कंप्यूटर के फाइलों को नष्ट करता है.
- वर्म मेलेशियस कोड जो अपनी प्रतिलिपियां बनाते हुए सिस्टम को धीमा कर देते हैं.
- रैनसमवेयर के माध्यम से कम्प्यूटर की फाइलें एन्क्रिप्ट कर दी जाती हैं और आगे इसके डिक्रिप्शन हेतु राशि की भी मांग की जाती है.
- सोशल इंजीनियरिंग के माध्यम से अपराधी, ग्राहकों को प्रलोभन देकर या भय दिखाकर धोखे से उनकी बैंकिंग संबंधी संवेदनशील जानकारी प्राप्त कर उनके खाते से धोखाधड़ी के माध्यम से राशि आहरण कर लेते हैं.
- **स्मिशिंग–** संक्षिप्त संदेश सेवा (एस.एम.एस.) पद्धति का उपयोग धोखाधड़ीपूर्ण टेक्स्ट संदेश भेजने के कपटपूर्ण उद्देश्य हेतु किया जाता है.
- स्पूफिंग से मतलब 'पहचान की चोरी' के उद्देश्य से किया गया हमला है. ई-मेल स्पूफिंग में छद्मरूपी ई-मेल से अनुचित तरीके से लाभ प्राप्त किया जाता है.
- हैकिंग के माध्यम से सिस्टम में किसी की व्यक्तिगत/ गोपनीय जानकारी को प्राप्त करने के उद्देश्य से अनधिकृत पहुंच बनायी जाती है.

- डिनायल ऑफ सर्विस (डी.ओ.एस./DoS) के जरिए विभिन्न स्रोतों से ट्रैफिक लाकर साइट को डाउन कर ऑनलाइन-सेवा की उपलब्धता समाप्त कर दी जाती है.
- कार्ड क्लोनिंग के अंतर्गत मूल-कार्ड का प्रतिरूप/ क्लोन तैयार किया जाता है जिसमें स्किमिंग तकनीक का प्रयोग होता है. इस प्रकार कार्ड क्लोनिंग के माध्मय से धोखाधड़ी की घटना को अंजाम दिया जाता है.

साइबर वर्ल्ड में हमारी बढ़ी हुई गतिविधियों ने विश्व की विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं को काफी करीब ला दिया है और किसी एक अर्थव्यवस्था के घटनाक्रम का असर दूसरी अर्थव्यवस्था पर तत्काल देखा जा सकता है. हम जानते हैं कि दुनिया भर की सभी अर्थव्यवस्थाओं में बैंकिंग क्षेत्र की भूमिका अहम है. यह कहना भी कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि बैंकिंग क्षेत्र विश्व की सभी अर्थव्यवस्थाओं की बुनियाद है. इस तरह से यह जरूरी हो जाता है कि हम बैंकिंग क्षेत्र की गतिविधियों को सुरक्षित करें. हाल के दिनों में दुनिया भर में साइबर हमलों की संख्या बढ़ी है. यह उल्लेखनीय है कि हैकर्स का पसंदीदा क्षेत्र वित्तीय या बैंकिंग क्षेत्र ही है जिससे उन्हें अनुचित तरीके से वित्तीय लाभ प्राप्त होता है और इसका विपरीत असर आम ग्राहकों, व्यापारियों अथवा संस्थानों पर पड़ता है. इसलिए यह आवश्यक है कि हम बैंकिंग क्षेत्र को ऐसे साइबर हमलों से सुरक्षित रखें और यह बैंकिंग क्षेत्र की प्रतिष्ठा के लिए भी अत्यंत आवश्यक है, विशेषकर उन परिस्थितियों में जबकि पूरी दुनिया में इंटरनेट के यूजर्स की संख्या लगातार बढ़ रही है.

भारत की बात करें तो 2020 में भारत में लगभग 74.5 करोड़ इंटरनेट उपयोगकर्ता थे. 2021 की अंतिम तिमाही तक इनकी संख्या 82.5 करोड़ हो गई है. डिजिटल ट्रांजैक्शन में हुई बढ़ोत्तरी और तेज़ी से विकसित हो रही डिजिटल अर्थव्यवस्था के कारण साइबर हमले और इसके लिए उपयुक्त सुरक्षा संबधी उपाय वैश्विक स्तर पर गंभीर चिंता का विषय है. आंकड़ों पर नजर डालें तो वर्ष 2017 में साइबर अपराधों के 21796 मामले सामने आए थे जो 2022 तक 50000 से भी अधिक हो चुके हैं. ऐसे साइबर हमलों के माध्यम से राजनीतिक अस्थिरता पैदा करने तथा वित्तीय व्यवस्था को ठप्प करने का प्रयास किया जाता है. फेडरल ब्यूरो ऑफ़ इन्वेस्टिगेशन के इंटरनेट क्राइम कम्प्लेंट सेंटर (आईसी3) की हाल की रिपोर्ट के अनुसार कोरोना काल में डिजिटल बैंकिंग पर बढ़ती निर्भरता के कारण साइबर हमले 65% बढ़ गए हैं और साइबर अपराधों के मामले में भारत विश्व में तीसरे स्थान पर है. नैशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़ों पर गौर करें तो वर्ष 2017 की तुलना में डेबिट कार्ड/ क्रेडिट कार्ड, एटीएम, ऑनलाइन बैंकिंग तथा ओटीपी के माध्यम से धोखाधड़ी की घटनाओं में तीन गुना से भी अधिक बढ़ोत्तरी हुई है.

**संचार माध्यमों से किए गए आईपीसी अपराध**

| वर्ष | डेबिट कार्ड/ क्रेडिट कार्ड | एटीएम | ऑनलाइन बैंकिंग फ्रॉड | ओटीपी |
|---|---|---|---|---|
| 2017 | 395 | 1534 | 798 | 329 |
| 2018 | 309 | 1280 | 965 | 319 |
| 2019 | 365 | 2066 | 2091 | 549 |
| 2020 | 1193 | 2160 | 4028 | 1091 |

स्रोत : राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो ncrb.gov.in

मौजूदा हालात यह है कि आज साइबर स्पेस को सुरक्षित रखना किसी भी देश की संप्रभुता से जुड़ा मामला है. आपसी वैमनस्य की स्थिति में कई देश अब प्रत्यक्ष युद्ध की बजाय साइबर हमलों के माध्यम से दूसरे देश की वित्तीय व्यवस्था पर चोट पहुंचाना या संवेदनशील जानकारी हासिल करना आदि पर अधिक जोर दे रहे हैं. साइबर स्पेस दरअसल सूचना परिवेश के अंतर्गत एक वैश्विक डोमेन है जिसमें इंटरनेट, टेलीकॉम नेटवर्क, कंप्यूटर सिस्टम इत्यादि जैसी आईटी संरचना शामिल होती हैं. बैंकिंग जगत में आज साइबर अपराधों के नये स्वरूप व प्रकार उभर कर सामने आ रहे हैं जैसे स्पैम ईमेल, हैकिंग, वायरस का प्रसार, सॉफ्टवेयर पायरेसी, फर्जी बैंक कॉल, सोशल नेटवर्किंग साइटों पर झूठी जानकारी प्रसारित करना आदि.

आने वाले दिनों में साइबर वर्ल्ड में बैंकिंग क्षेत्र की भागीदारी और भी व्यापक होगी. इसलिए यह बहुत ही जरूरी है कि भविष्य की बैंकिंग को सुरक्षित रखने के लिए पुख्ता साइबर सुरक्षा उपाय अमल में लाई जाए तथा मौजूदा नियमों को भी साइबर सुरक्षा के लिहाज से मजबूत बनाया जाए. इस लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने में हमारे लिए यह भी आवश्यक है कि हम साइबर हमलों की वजहों की भी पड़ताल करें और उनके कारणों के जड़ तक जाएं. यहां यह उल्लेखनीय है कि तकनीक पर हमारी निर्भरता मात्र से ही साइबर अपराध नहीं बढ़े हैं. इसके लिए मनुष्यों में तुरंत कुछ हासिल करने की इच्छा, मंहगाई, बेरोज़गारी, खाली दिमाग या समय में असामाजिक गतिविधियों के प्रति रूझान आदि जैसी प्रवृति साइबर अपराधों का कारण बनती हैं. इसके अलावा साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूकता में कमी, लापरवाही, जानकारी का अभाव आदि भी लोगों को साइबर ठगी का शिकार बनाता है. इसलिए यह आवश्यक है कि हम अपने आसपास साइबर अपराध से जुड़ी गतिविधियों के प्रति लगातार जागरूक रहें और लोगों को भी जागरूक करें. जैसे-जैसे समय आगे बढ़ेगा साइबर सुरक्षा का विषय हमारे लिए उतना ही महत्वपूर्ण होगा. इस संबंध में हमारे लिए अन्य उपायों के साथ-साथ निम्नलिखित उपाय बेहद ही कारगर होंगेः

1. साइबर सुरक्षा जोखिमों के संबंध में ग्राहकों को नियमित रूप से जागरूक और शिक्षित करना.
2. सभी संबंधित पक्षों को फिशिंग मेल/फिशिंग साइटों के बारे

में जानकारी प्रदान करना एवं इनसे बचने के कारगर उपाय पर कार्य करना.

3. किसी दूसरे के साथ अपने लॉगिन क्रेडेंशियल्स/पासवर्ड शेयर नहीं करना तथा ऐसा करने पर इसके दुष्परिणामों के बारे में लागों को विभिन्न माध्यमों के जरिए जागरूक करना.
4. ईमेल अथवा एसएमएस के जरिए प्राप्त प्रलोभन संदेशों को इग्नोर करना.
5. शाखा में सुरक्षित डिजिटल लेनदेन संबंधी बिंदुओं को नोटिस बोर्ड या किसी प्रमुख स्थान पर प्रदर्शित करना.
6. उपयोग में लाए जाने वाले उपकरणों के पासवर्ड को गोपनीय रखना तथा इसे नियमित रूप में बदलते रहना.

### बैंकों में प्रभावी साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करने के उपाय:

बैंक साइबर खतरों से अपने डाटा को सुरक्षित करने हेतु साइबर सुरक्षा फ्रेमवर्क के तहत साइबर सुरक्षा पर प्रभावी तरीके से कार्य कर रहे हैं, जैसे कि:

- सुव्यवस्थित डाटा बैकअप व्यवस्था,
- सक्रिय सुरक्षा सूचना-तंत्र,
- बाह्य सेवाओं की नियमित निगरानी,
- डिजास्टर रिकवरी एवं व्यवसाय निरंतरता योजना,
- साइबर सुरक्षा लेखा-परीक्षा,
- सूचना सुरक्षा से सम्बन्धित ISO-27001 व ISO-27002 सर्टिफिकेट

इसके अतिरिक्त साइबर सुरक्षा जागरूकता में बैंकों की भूमिका और भी अहम है.

बैंकों द्वारा डिजिटल बैंकिंग सेवा प्रदान करने की प्रक्रिया में अंतिम उपयोगकर्ता ग्राहक ही होते हैं. इंटरनेट के माध्यम से ग्राहक को सेवा प्राप्त होने के समय बीच में कोई मध्यस्थ बैंककर्मी नहीं होते और ग्राहक सीधे अपनी इच्छानुसार लेनदेन की कार्रवाई आरंभ भी करते हैं और कार्रवाई समाप्त भी करते हैं. ग्राहक स्वयं से लेनदेन करने में तभी सुविधा महसूस करते हैं जब कि उन्हें अपने बैंक पर विश्वास होता है. जरा सी धोखाधड़ी की घटना भी उनके इस भरोसे को तोड़ सकती है, अतः बैंक द्वारा अपने ग्राहकों को साइबर अपराधों से सुरक्षित रखना उनकी प्राथमिकता होनी चाहिए. यह भी सत्य है कि अभी भी साइबर सुरक्षा के बारे में लोगों में विवेक व सतर्कता के स्तर में कमी है. जरूरत है कि जागरूकता के इस स्तर को बढ़ाया जाए.

ग्राहकों को यह बताना होगा कि यूज़र-आई.डी. एवं पासवर्ड डिजिटल बैंकिंग की दुनिया के प्रवेश द्वार हैं इसलिए इन्हें गोपनीय रखना बहुत ही महत्वपूर्ण है. किसी भी बैंक या संस्था का कोई भी अधिकारी फ़ोन, ईमेल या किसी अन्य तरीके से कभी भी अपने ग्राहक की यूज़र-आई.डी. अथवा पासवर्ड नहीं मांग सकते हैं. यदि कोई ऐसा करता है तो अवश्य ही संदेह की स्थिति उत्पन्न होती है. ग्राहक को भी यह सतर्कता बरतनी चाहिए कि अपने प्रत्येक डिवाइस का यूज़र-आईडी तथा पासवर्ड अनिवार्यतः अलग-अलग रखें ताकि इसे कोई भेद न सके.

उपर्युक्त कुछ उपायों के जरिए हम काफी हद तक साइबर अपराधों से स्वयं को और दूसरों को भी सुरक्षित रख सकते हैं. मुख्य बात यह है कि हमें अपने दैनिक व्यवहार में ऐसे अपराधों से बचने के लिए किताबी ज्ञान के अतिरिक्त व्यावहारिक बुद्धिमत्ता को अपनाने और इसे अमल में भी लाने की जरूरत है. इसके अलावा यह भी जरूरी है कि साइबर सुरक्षा संबंधी विषयों पर गहन चर्चा-परिचर्चा हेतु नियमित कार्यक्रम एवं संगोष्ठियां आयोजित की जाएं जिससे अलग-अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञ एक साथ मिलकर इन विषयों पर चर्चा करें और अपने विचार साझा करें जिन्हें उपयुक्तानुसार अमल में लाया जाए. यह निश्चित ही हमारे सामूहिक प्रयासों का एक हिस्सा होगा और लंबे समय के लिए लाभकारी भी सिद्ध होगा.

### भारत में साइबर कानून : प्रभावशीलता एवं सुधारों की आवश्यकता

भारत के संदर्भ में साइबर कानून का उल्लेख सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 (आईटी अधिनियम) में निहित है. यह अधिनियम 17 अक्टूबर, 2000 को लागू हुआ था. इस साइबर कानून को अपनाने के साथ भारत वर्ष 2000 में साइबर कानून व्यवस्था अपनाने वाला दुनिया का 12वां राष्ट्र बन गया. साइबर कानून व्यवस्था इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेजों को विधिक मान्यता प्रदान करता है और ई-फाइलिंग और ई-कॉमर्स लेनदेन को आगे बढ़ाने के लिए एक प्लेटफॉर्म प्रदान करता है और साथ ही साथ साइबर अपराधों को कम करने तथा रोकने के लिए एक कानूनी आधार के रूप में कार्य करता है.

साइबर कानून सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 की कुछ प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

- अधिनियम इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेजों को विधिक मान्यता देता है.
- अधिनियम डिजिटल हस्ताक्षरों को मान्यता देता है.
- यह अपराधों, दंडों के स्वरूप और उल्लंघनों की व्याख्या करता है.
- यह साइबर अपराधों के लिए न्याय व्यवस्था प्रणाली की

रूपरेखा देता है.

- अधिनियम डिजिटल वर्ल्ड में की जा रही गतिविधियों की सीमा को निर्धारित करता है.

इस अधिनियम को बैंकिंग के अन्य अधिनियमों के तहत इलेक्ट्रोनिक रूप में रखे जानेवाले दस्तावेजों को भी कानूनी मान्यता मिलती है और संबद्ध कानूनों के तहत इलेक्ट्रोनिक रूप में रखे जाने वाले दस्तावेजों की गोपनीयता सुरक्षित करने के लिए उचित कदम उठाए गए हैं. इसके तहत डेटा पॉलिसी, सोशल मीडिया पॉलिसी, ऑनलाइन या मोबाइल बैंकिंग से संबंधित नियम एवं शर्तें शामिल हैं. अधिनियम बैंकरों को साक्ष्य अधिनियम, 1891 और भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 के तहत खातों की पुस्तकों को इलेक्ट्रॉनिक रूप में रखने के लिए एक अवसर और कानूनी मान्यता प्रदान करता है. अधिनियम से पूरे देश भर में लागू होने से साइबर अपराध संबंधी गतिविधियों से निपटने में कार्रवाई आसान होती है. परंतु भारत से बाहर किए गए ऐसे साइबर अपराध जो भारत से संबद्ध हो उसे भी कवर किए जाने हेतु कुछ उपाय जरूरी हैं. उल्लेखनीय है कि यह अधिनियम विभिन्न साइबर अपराधों को अधिक स्पष्टता प्रदान करता है और परिभाषित भी करता है.

आईटी अधिनियम के तहत, यह भी अनिवार्यता है कि संस्थान अपने यहां उचित सुरक्षा प्रथाओं और प्रक्रियाओं को लागू करें ताकि डेटा को अनधिकृत पहुंच, क्षति, उपयोग, संशोधन, प्रकटीकरण से सुरक्षित रखा जा सके. हालांकि, तकनीक के लगातार बदलने के साथ, 2008 में आईटी अधिनियम 2000 में संशोधन किया गया जो कि 27 अक्टूबर 2009 को प्रभावी हुआ. इस संशोधन से सूचना सुरक्षा अधिनियम और भी अधिक प्रभावशाली हो गया. संशोधन के मुख्य अंश नीचे दिए गए हैं:

- यह गोपनीयता के बिंदुओं पर केंद्रित है.
- इसमें सूचना सुरक्षा पर जोर दिया गया है.
- इसमें साइबर मामलों पर सख्त निगरानी पर बल दिया गया है.
- इसके तहत डिजिटल हस्ताक्षर की परिभाषा को विस्तृत किया गया.
- साइबर क्राइम से संबंधी नई बातें जोड़ी गईं.
- साइबर अपराधों की जांच के लिए अधिकार का निर्धारण किया गया.

सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम सबसे महत्वपूर्ण माध्यम हैं जो देश को साइबर अपराधों से निपटने में मदद करता है. फिर भी यह विचारणीय है कि भारत में सख्त साइबर कानून होने के बावजूद, 2020 में साइबर अपराध के 50,035 मामले दर्ज किए गए. पिछले साल की तुलना में ऐसे अपराधों में 11.8% की बढ़ोतरी हुई. असल में साइबर अपराध हर क्षण नए तरीकों से जन्म ले रहा है. रिपोर्ट किए गए आँकड़े और वास्तविकता में काफी अंतर है. यह समझने वाली बात है कि कई बार तो साइबर अपराध को लोग रिपोर्ट तक नहीं करते जिसके कारण न्यायालय तक पहुंचने वाले साइबर अपराधों की संख्या बहुत ही कम है. वास्तव में भारत की आईटी अधिनियम में सुधार लाने की सख्त आवश्यकता है.

दुनिया भर में तकनीक में तेजी से परिवर्तन हो रहा है. सबसे अधिक प्रौद्योगिकियां–बिग डेटा, डेटा एनालिटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (I), और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) हैं. तेजी से बदलते डिजिटल युग में दिन प्रतिदिन नए–नए प्रकार के साइबर अपराध भी सामने आ रहे हैं. ऐसे भी कई मामले हैं कि जब भारत आज भी 20–21 साल पुराने अधिनियम के बल पर साइबर अपराध को नियंत्रित कर रहा है. इस प्रकार से समय से साथ कानून को भी समयानुकूल बनाने की जरूरत है.

बिग डेटा, डेटा एनालिटिक्स की बात करें तो इसमें यकीनन बेहतर विधिक सुरक्षा कदमों की आवश्यकता है. आईटी अधिनियम की अपनी सीमाएं हैं. मौजूदा कानून के तहत ग्राहकों को डेटा उल्लंघन की सूचना देना अनिवार्य नहीं हैं. कई बार बड़े पैमाने पर साइबर सुरक्षा की घटनाओं को तभी रिपोर्ट किया जाता है, जहां लागू कानूनों के तहत यह अनिवार्य है. आज डेटा संरक्षण अधिनियम के अधिनियमन को मुस्तैदी से ट्रैक करना और एक मजबूत और प्रभावी डेटा संरक्षण प्राधिकरण स्थापित करना जरूरी है.

साइबर अपराध से निपटने में प्रवर्तन एजेंसियों को विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है. अपराध में शामिल असामाजिक तत्वों पर प्रतिबंध लगाना और उन्हें पकड़ना बहुत चुनौतीपूर्ण है. साइबर वर्ल्ड में आपराधिक घटनाओं के विरूद्ध प्रभावी ढंग से मुकदमा चलाने के लिए गंभीर अपराधों (साइबर अपराध सहित) की उचित जांच और अभियोजन के लिए डिजिटल डेटा अनिवार्य है.

साइबर अपराधों के सबंध में अधिक स्पष्टता की जरूरत है. विदेशों में स्थित व्यक्ति साइबर अपराधों के लिए प्रत्यर्पण और अभियोजन से बच जाते हैं क्योंकि मूल देश में ऐसे अपराध की परिभाषा एवं व्याख्या अलग है.

अलग–अलग अधिनियम में अपराध की परिभाषा और सीमा में सूक्ष्म अंतर से भी साइबर अपराधी को बच निकलने में आसानी होती है. इसलिए ऐसी घटनाओं पर गहन अध्ययन की जरूरत है और कोशिश यह की जानी चाहिए कि किसी भी अधिनियम के तहत बने कानूनों के बीच सूक्ष्म अंतर के कारण भी अपराधी को छूट न मिल सके.

एक अनुमान है कि 2027 तक 900 मिलियन से अधिक भारतीयों के पास डिजिटल प्लेटफॉर्म की पहुंच होगी. यह भी लाज़मी है कि साइबर स्पेस में हमारी दखल जितनी बढ़ेगी हमें स्वयं को भी उसी सक्षमता के साथ साइबर अपराधों से निपटने को तैयार रहना होगा और इस लक्ष्य के लिए हमें अपने कानून को अपराध से निपटने के अनुकूल बनाना होगा.

# [illegible] 75 [illegible]: [illegible]



**जया मिश्रा**
मुख्य प्रबन्धक एवं शिक्षण प्रमुख
बड़ौदा अकादमी, नई दिल्ली

सदियों की पराधीनता और संघर्ष के बाद जब भारत को 15 अगस्त, 1947 को स्वाधीनता मिली तो देशवासियों के सामने बेहतर भविष्य के वादों और उम्मीदों से भरा एक सवेरा था लेकिन देश के सामने गरीबी, निरक्षरता और कुपोषण जैसी अनेक चुनौतियां भी थीं. देश में औद्योगिक व वैज्ञानिक दृष्टि के मजबूत आधार का अभाव था लेकिन आज भारत स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे कर चुका है और हम अभाव का लंबा सफर तय कर विश्व की उभरती शक्तियों में शामिल हो चुके हैं. क्रय शक्ति की दृष्टि से हम दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था हैं और विश्व की अनेक विकसित अर्थव्यवस्थाएं भी आज हमारी तरफ देखती हैं. यद्यपि आज हम आईटी व अन्य कई क्षेत्रों में विश्व में अपना डंका बजा चुके हैं लेकिन ऐसे कई क्षेत्र हैं जहां हमें आत्ममंथन करने की आवश्यकता है.

हम इस वर्ष आजादी का पचहत्तरवां वर्ष मना रहे हैं तथा अभाव और समस्याओं का लंबा सफर काफी हद तक तय कर चुके हैं लेकिन यह समय विश्लेषण का समय है कि हमने इस 75 वर्ष में क्या खोया और क्या पाया.

किसी भी देश के विकास के लिए वहां रोजगार का होना आवश्यक है क्योंकि बिना पैसों के जीवन की आवश्यकताएं पूरी नहीं हो सकती. यहां तक कि जीवन की आधारभूत सुविधाओं, जिसमें भोजन प्रमुख है, के लिए भी पैसे की आवश्यकता है. किसी भी देश के विकास के लिए वहां के नागरिकों का सम्पन्न होना आवश्यक है क्योंकि सम्पन्न और खुशहाल जनता ही किसी भी देश के विकास की बुनियाद होती है.

भारत में भी जनता को विभिन्न प्रकार के रोजगार उपलब्ध हैं और हम रोजगार देने वाले सभी क्षेत्रों को तीन क्षेत्रों में बांट सकते हैं जिसमें प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र व सेवा क्षेत्र आते हैं.

**प्राथमिक क्षेत्र :** प्राथमिक क्षेत्र में मुख्यतः कृषि क्षेत्र आता है. कृषि क्षेत्र की महत्ता पर जितनी भी चर्चा की जाए वह कम होगी क्योंकि कृषि से ही हमें खाद्य सामग्री प्राप्त होती है. भोजन हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है और इसके बिना हम जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते. स्वतंत्रता के समय कृषि क्षेत्र में यद्यपि जनसंख्या के सबसे बड़े हिस्से का योगदान था लेकिन यदि उत्पादकता व तकनीक की बात करें तो हम बहुत पिछड़े हुए थे और हम इतनी भी उपज नहीं कर पा रहे थे कि देश की खाद्य आवश्यकता को पूरा कर सकें. इस संदर्भ में 1946 में जब देश की



जनता को इस शताब्दी के सबसे भयंकर अकाल, जिसे बंगाल का अकाल नाम दिया गया, का सामना करना पड़ा था तब गांधीजी ने 1946 में नोआखाली में कहा था–

***'भूखे के लिए रोटी ही भगवान है और स्वतन्त्र भारत का कर्तव्य है कि वह यह सुनिश्चित करे कि हर व्यक्ति अपनी दैनिक आवश्यकता की रोटी अर्जित कर सके.'***

आजादी के बाद से भारत ने कृषि के क्षेत्र में काफी प्रगति की है. भारतीय कृषि क्षेत्र में आजादी के समय वृद्धि दर 1 प्रतिशत प्रति वर्ष थी जो स्वतंत्रता के बाद के युग में लगभग 2.6 प्रतिशत प्रति वर्ष मापी गई है. इन 75 वर्षों में हमने कृषि की उत्पादकता बढ़ाने पर कार्य किया. हरित क्रांति ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और कृषि की उत्पादकता कई गुना बढ़ गई. हरित क्रांति के पश्चात हम परंपरागत कृषि से व्यावसायिक कृषि की राह पर आ गए हैं. कृषि क्षेत्र के विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि आयातित खाद्यान्नों पर हमारी निर्भरता समाप्त हो गई है.

**द्वितीयक क्षेत्र :** इस क्षेत्र में कच्चे माल को विनिर्माण की प्रक्रिया के माध्यम से तैयार माल में बदला जाता है. इस गतिविधि को औद्योगिक गतिविधि भी कहा जाता है. द्वितीयक क्षेत्र को हम माध्यमिक क्षेत्र के नाम से भी जानते हैं. उद्योग किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है और बिना विकसित उद्योग के विकसित देश की कल्पना भी नहीं की जा सकती. यही कारण है कि भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने तो उद्योगों को मंदिर तक कह डाला था. भारत में यद्यपि बड़े उद्योगों की कमी नहीं है लेकिन उद्योगों में वह क्षेत्र जिसने जनसंख्या के बहुत बड़े हिस्से को रोजगार दिया है एमएसएमई क्षेत्र है. इस क्षेत्र ने न केवल बड़े उद्योगों की तुलना में कम पूंजीगत

लागत पर बड़े रोजगार के अवसर प्रदान किए हैं, बल्कि ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों के औद्योगिकीकरण में मदद भी की है. सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम पर विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट के अनुसार आर्थिक विकास, नवाचार और रोजगार के लिए सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम सबसे मजबूत चालकों में से एक है. एमएसएमई सेक्टर ने लगभग 63.38 मिलियन के विशाल नेटवर्क के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण योगदान सुनिश्चित किया है. यह मेन्युफैक्चरिंग आउटपुट के क्षेत्र में 45%, निर्यात के क्षेत्र में लगभग 40% और भारत की जीडीपी में लगभग 28% का योगदान करता है. इस क्षेत्र में लगभग 111 मिलियन लोग कार्यरत हैं, जो कृषि क्षेत्र के बाद रोजगार प्रदान करने वाला दूसरा बड़ा क्षेत्र साबित हुआ है.

**तृतीयक क्षेत्र :** स्वतंत्रता के समय हम इस क्षेत्र में बहुत पीछे थे या यूं कहें हम अपनी शुरुआत भी नहीं कर पाये थे क्योंकि अंग्रेजों की नीति ही थी कि वो हमारे देश से कच्चा माल निर्यात करें और उन्हीं कच्चे माल से वस्तुएं तैयार कर हमें ऊंचे दाम पर बेचें. इसीलिए स्वतंत्रता के पूर्व हमारे देश में उद्योग ही विकसित नहीं हो पाया तो सेवा क्षेत्र की तो बात ही बहुत दूर थी. स्वतंत्रता के पश्चात हमारा पूरा ध्यान खाद्य उत्पादों में आत्मनिर्भरता व बड़े उद्योगों पर था. इसलिए स्वतंत्रता के कुछ दशकों तक भी हम सेवा क्षेत्र में कोई बड़ी कामयाबी हासिल नहीं कर पाये थे लेकिन 1980 के बाद हमने इस क्षेत्र पर ध्यान केन्द्रित किया. इस क्षेत्र में प्रमुख विकास टेली-सेवाओं और सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से हुआ है. भारत में एक विशाल जन समुदाय उपस्थित है जो तकनीकी रूप से काफी समृद्ध है. यही कारण है कि विश्व के कई विकसित देशों की कई बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत में अपनी टेली सेवाएं और आईटी सेवाएं आउटसोर्स करती हैं. भारत चिकित्सा व पर्यटन में भी बहुत आगे है. वर्तमान में 23% भारतीय कार्यबल सेवा क्षेत्र में कार्यरत है जबकि यह प्रक्रिया 1980 के दशक में शुरू हुई थी. 60 के दशक में इस क्षेत्र में रोजगार 4.5% था. केंद्रीय सांख्यिकी संगठन के अनुसार, 2008 में सेवा क्षेत्र की भागीदारी भारतीय सकल घरेलू उत्पाद में 63% था और यह आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है.

**बैंकिंग क्षेत्र :** सेवा क्षेत्र की बात करें और बैंकिंग की बात न करें तो यह संभव नहीं है क्योंकि किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ वहां की बैंकिंग प्रणाली होती है. भारत में बैंकिंग का इतिहास बहुत पुराना है. आधुनिक काल में भारत में बैंकिंग प्रणाली की नींव ब्रिटिश राज में रखी गई थी. उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने 3 बैंक शुरू किए - 1806 में बैंक ऑफ बंगाल, 1840 में बैंक ऑफ बॉम्बे और 1843 में बैंक ऑफ मद्रास. आजादी के बाद इन 75 वर्षों में बैंकिंग प्रणाली काफी बदल गई है और बैंकिंग व्यवस्था ने कई नए आयाम देखे हैं. आजादी के इस 75 साल की यात्रा में बैंकिंग क्षेत्र ने विभिन्न क्षेत्रों के विकास में अहम भूमिका निभाई है. कृषि, उद्योग, सड़क, बिजली, दूरसंचार, शिक्षा, रियल एस्टेट के विकास में बैंकों का बहुत बड़ा योगदान है. 1947 में जहां 664 निजी बैंकों की करीब 5000 शाखाएं थीं, आज 12 सरकारी बैंकों, 22 निजी क्षेत्र के बैंकों, 11 लघु वित्त बैंकों, 43 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों और 46 विदेशी बैंकों की करीब 1 लाख 42 हजार शाखाएं हैं.

### स्वतंत्रता के पश्चात इन 75 वर्षों में भारत में बैंकिंग का सफर:

**भारतीय रिज़र्व बैंक :** भारतीय रिज़र्व बैंक की स्थापना 1935 में, आरबीआई अधिनियम 1934 के तहत, जॉन हिल्टन यंग कमीशन की सिफारिशों पर की गई थी, जिसे भारतीय मुद्रा और वित्त पर रॉयल कमीशन के रूप में भी जाना जाता है. केंद्रीय बैंक का 1 जनवरी, 1949 को राष्ट्रीयकरण कर दिया गया. रिज़र्व बैंक मुख्य रूप से सरकार के व्यापारिक लेनदेन से संबंधित है.

यह मुद्रा जारी करता है, बैंकिंग के संचालन और प्रबंधन को नियंत्रित करता है, नए बैंकों को लाइसेंस देता है और समय-समय पर बैंकों को ऋण देता है.

**स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया :** 1806 में कोलकाता में बैंक ऑफ कलकत्ता की स्थापना हुई जो बाद में बैंक ऑफ बंगाल के नाम से जाना गया. 1921 में बैंक ऑफ मुंबई और बैंक ऑफ मद्रास का बैंक ऑफ बंगाल में विलय हो गया जो मिलकर इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया बना. 1 जुलाई, 1955 को इम्पीरियल बैंक का नाम बदलकर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया रख दिया गया था. साल 1955 में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया एक्ट पारित हुआ और अक्टूबर में स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद इसका पहला सहयोगी बैंक बना. कालांतर में नरसिंहम् समिति की सिफारिश पर कार्यवाही करते हुए केन्द्र सरकार ने सभी सहयोगी बैंकों का एसबीआई में विलय कर दिया. अपने स्थापना काल में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की केवल कुछ शाखाएं थी जबकि आज स्वतंत्रता के 75 वर्ष बाद 24000 से ज्यादा शाखाओं के साथ स्टेट बैंक देश का सबसे बड़ा बैंक है.

**बैंकों का राष्ट्रीयकरण :** 19 जुलाई, 1969 को देश के 14 प्रमुख बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया और इसी श्रृंखला में पुनः वर्ष 1980 में 6 और बैंक राष्ट्रीयकृत कर दिये गए. राष्ट्रीयकरण के बाद बैंकों की शाखाओं में बढ़ोतरी हुई. भारत की बैंकिंग सेवा का विस्तार क्लास बैंकिंग से मास बैंकिंग तक हो गया और इसका विस्तार शहरों से गांवों तक हो गया. आंकड़ों के मुताबिक़ जुलाई 1969 को देश में इन बैंकों की सिर्फ 8322 शाखाएं थीं जबकि 2021 के आते आते यह आंकड़ा लगभग 87 हजार का हो गया है. देश के विकास में इन राष्ट्रीयकृत बैंकों की अहम भूमिका रही है और इन बैंकों ने कृषि, उद्योग, सड़क, बिजली, टेलिकॉम, शिक्षा, रियल एस्टेट सभी क्षेत्रों के विकास के लिये भरपूर सहयोग किया है. भारत में बैंक डी.आर.आई. जेसे छोटे ऋणों से लेकर बड़े-बड़े प्रोजेक्ट्स के लिय ऋण प्रदान करते हैं.

**बैंकों का कंप्यूटराईज़ेशन :** वर्ष 1980 में बैंकिंग में कंप्यूटर की आवश्यकता महसूस हुई और 1988 में रिज़र्व बैंक ने डा. रंगराजन की अध्यक्षता में एक कमेटी का गठन किया जिसने बैंकों में कंप्यूटर लगाने की सिफारिश की और 1993 में बैंकों में कंप्यूटर लाने के लिए सहमति बनी. बैंकों का कंप्यूटरीकरण किया गया और समय के साथ-साथ सॉफ्टवेयर को अद्यतन भी किया गया. बदलाव सतत चलता रहा और आज कंप्यूटर के बिना बैंकिंग संभव ही नहीं लगती. यद्यपि ऐसा प्रतीत होता है कि कंप्यूटरीकरण से रोजगार कि संभावनाएं क्षीण हुई हैं लेकिन यदि हमें विकास करना है तो हम तकनीक से दूर रह कर ऐसा नहीं कर सकते. यदि हमें विकास की दौड़ में शामिल होना है तो तकनीक का उपयोग कर एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का माहौल बनाना ही होगा जिससे हम विश्व स्तर पर सहभागिता कर सकें और अपने देश को विकसित देशों की सूची में शामिल कर सकें.

**को-ऑपरेटिव बैंक:** भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सहकारी बैंकों का महत्वपूर्ण योगदान है. इन सहकारी बैंकों का विकास मुख्य रूप में कृषकों को सस्ती दर पर ऋण उपलब्ध कराने के उद्देश्य से किया गया है. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सहकारिता आन्दोलन अधिक तेजी से विभिन्न दिशाओं में फैला. सरकार द्वारा नियुक्त अखिल भारतीय ग्राम-ऋण समिति 1954 एवं बैकुण्ठलाल मेहता समिति 1960 के सुझावों ने सहकारिता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया. यद्यपि पिछले कुछ सालों से भारत में सहकारी बैंकों की वित्तीय हालत काफी गिर गयी है और कई घोटाले भी सामने आ चुके हैं जैसे पंजाब और महाराष्ट्र को-ऑपरेटिव बैंक, यस बैंक और शिम्भोली सुगर मिल्स बैंक स्कैम इत्यादि. इन्हीं घटनाओं को देखते हुए भारत सरकार ने जून 2020 में अध्यादेश पारित कर देश के सभी को-ऑपरेटिव बैंकों को रिज़र्व बैंक के दायरे में ला दिया है. हाल ही में केंद्र सरकार द्वारा 'सहकार से समृद्धि' (सहकारिता के माध्यम से समृद्धि) के दृष्टिकोण को साकार करने और सहकारिता आंदोलन को एक नई दिशा देने के लिये एक अलग 'सहकारिता मंत्रालय' बनाया गया है. वर्तमान में देश में 1482 शहरी को-ऑपरेटिव बैंक हैं, जबकि 58 मल्टी स्टेट को-ऑपरेटिव बैंक हैं और इन 1540 बैंकों में क़रीब 8.6 करोड़ जमाकर्ताओं के 4 लाख करोड़ 84 लाख रुपए जमा हैं.

**क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक:** 2 अक्तूबर, 1975 को सरकार ने बैंकिंग सुविधाएं गांव-गांव तक पहुंचाने के लिए क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की स्थापना की. देश भर में आज करीब-करीब 43 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक काम कर रहे हैं जिनकी 22000 शाखाएं हैं. ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में इन बैंकों की महत्वपूर्ण भूमिका है.

**न्यू जनरेशन प्राइवेट बैंक:** वर्ष 1991 के आर्थिक संकट के उपरान्त बैंकिंग क्षेत्र के सुधार के लिए जून 1991 में एम. नरसिंहम् की अध्यक्षता में नरसिंहम् समिति की स्थापना की गई

और इस समिति ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए व्यापक स्वायत्तता प्रस्तावित की. समिति ने बड़े भारतीय बैंकों के विलय के लिए भी सिफारिश की थी. इसी समिति ने नए निजी बैंकों को खोलने का सुझाव दिया जिसके आधार पर 1993 में सरकार ने इसकी अनुमति प्रदान की.

वर्ष 1994 में नये प्राइवेट बैंकों का युग प्रारम्भ हुआ. आज देश में कई न्यू प्राइवेट जनरेशन बैंक, ओल्ड जनरेशन प्राइवेट बैंक और स्माल फाइनेंस बैंक काम कर रहे हैं. 2018 में सरकार ने इण्डिया पोस्ट पेमेंट बैंक की स्थापना की जिसका मकसद पोस्ट ऑफिस के नेटवर्क का इस्तेमाल कर बैंकिंग को गांव-गांव तक पहुंचाना था. इसके साथ-साथ और कई प्राइवेट पेमेंट बैंकों की भी शुरुआत हुई.

**बैंकों का मर्जर:** विश्व स्तर पर भारत के बैंकों को प्रतियोगी बनाने के लिए बैंकों के आकार को बड़ा करने की आवश्यकता थी और इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए वर्ष 2019 में तीन

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda
विजया VIJAYA
देना DENA

बैंकों, जिसमें बैंक ऑफ़ बड़ौदा, विजया बैंक और देना बैंक शामिल थे, का समामेलन किया गया तथा इसी क्रम में 1 अप्रैल 2020 को सिंडीकेट बैंक का केनरा बैंक में, ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया को पंजाब नैशनल बैंक में और इलाहाबाद बैंक, कारपोरेशन बैंक और आंध्रा बैंक को इंडियन बैंक में विलय कर दिया गया. इसके पश्चात वर्तमान में सरकारी क्षेत्र के 12 बैंक रह गये हैं. अगले चरण में सरकार की कुछ बैंकों को निजीकरण करने की भी योजना है.

**बैंकिंग के नए आयाम:** इस वर्ष हम स्वतन्त्रता के 75 वर्ष पूरे करने जा रहे हैं और बैंकिंग व्यवस्था भी पारंपरिक बैंकिंग से एक विकसित बैंकिंग व्यवस्था तक पहुंच चुकी है. आज बैंक बैंकिंग के अलावा इससे संबद्ध अन्य सेवाएं ग्राहकों को प्रदान कर रहे हैं. बैंकों का कार्यक्षेत्र बड़े-बड़े प्रोजेक्टों को ऋण देने से लेकर अत्यंत कम आय वाले लोगों को बीमा देने तक विस्तृत है. सरकार की कई योजनाओं का लाभ लाभार्थी तक पहुंचाने का कार्य भी बैंकों के ही जिम्मे है. आज बैंक परंपरागत बैंकिंग से लेकर विकसित बैंकिंग, जिसमें, **ट्रेड्स (टीआरईडीएस), ब्लॉकचेन, हाइब्रिड बैंकिंग/नीयो बैंक, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस** आदि प्रमुख हैं, तक पहुंच चुका है. इतना ही नहीं भारत की बैंकिंग व्यवस्था नित नई अवधारणा और तकनीकों का उपयोग कर जनता को और बेहतर सुविधा प्रदान करने को प्रतिबद्ध है.

**अन्य क्षेत्र:** भारत ने न केवल अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में सफलता के नए आयाम गढ़े हैं बल्कि और भी कई ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ विश्व में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है. अन्तरिक्ष, कला एवं साहित्य, सिनेमा, स्वास्थ्य, आदि क्षेत्रों में भी बहुत अच्छा कार्य किया है. कोरोना के विकट समय में इतने बड़े जन सैलाब को टीका उपलब्ध करा देना विश्व में एक बड़ी उपलब्धि के रूप में देखी गई.

आज हम स्वतन्त्रता के 75 वर्ष पूरे कर चुके हैं. विभिन्न क्षेत्रों में काफी सफलता हासिल कर चुके हैं. विश्व में भारत को एक ऐसे मजबूत विकासशील देश के रूप में देखा जा रहा है जो निकट भविष्य में विकसित देशों की सूची में शामिल होने का दावेदार भी है लेकिन इतने विकास के बाद भी क्या हम देश के प्रत्येक व्यक्ति को रोटी, कपड़ा और मकान के साथ एक अच्छा जीवन उपलब्ध करा पाये हैं? क्या हम अपने हर नागरिक को समुचित शिक्षा प्रदान कर पाये हैं? क्या चिकित्सा सुविधा हर व्यक्ति को सहज उपलब्ध है? क्या हम हर शिक्षित व्यक्ति को उचित रोजगार उपलब्ध करा पाये हैं? इन सभी प्रश्नों का उत्तर दिया जाना भी लाज़मी है. निःसन्देह हम विश्व में एक अच्छे और मजबूत देश की छवि बना पाये हैं लेकिन इन सभी प्रश्नों पर आत्म मंथन करने की आवश्यकता है. स्वतंत्रता के पश्चात इन 75 वर्षों में विभिन्न सरकारों ने जनकल्याण के विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा उपरोक्त सम स्याओं का निराकरण करने का प्रयास किया है. पुरुष और स्त्री की समानता के लिए हमने बहुत प्रयास किए हैं, अच्छे परिणाम भी दृष्टिगोचर हो रहे हैं. हम निरंतर विभिन्न प्रयासों द्वारा हर व्यक्ति की पहुँच आधारभूत सुविधाओं तक बनाने में लगे हुए हैं लेकिन इस विशाल जन समुदाय को एक अच्छा जीवन प्रदान करने के लिए अभी और भी प्रयास करने होंगे. विकास चूंकि एक सतत प्रक्रिया है और इसे केवल कुछ समय में सुनिश्चित नहीं किया जा सकता इसलिए निराश होने की भी आवश्यकता नहीं है. स्वतंत्रता के समय जो भारत हमें मिला वह बहुत ही कमजोर और समस्याओं से भरा हुआ था. अन्तरिक्ष, विज्ञान, तकनीक आदि की तो क्या बात की जाए अपने नागरिकों को सम्मानजनक जीवन जीने लायक बना पाना हमारी प्राथमिकता रही. इसलिए इन 75 वर्षों में हमने जो हासिल किया वह भी कम नहीं है. आज केवल आवश्यकता है इस प्रयास को जारी रखने की जिससे हम शीघ्र ही इन समस्याओं का समाधान कर एक विकसित राष्ट्र बन सकें.

* * *

# कृत्रिम भाषाएं - संक्षिप्त समीक्षा

**स्वप्निल संघवी**
अधिकारी, आणंद क्षेत्र

भाषा - यह शब्द सुनते ही कई नाम मन में आ जाते हैं - हिन्दी, अंग्रेजी, तमिल, गुजराती, संस्कृत, फ्रेंच, उर्दू इत्यादि. भाषा वह माध्यम है जिससे एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से संवाद कर सके, अपने विचार, भाव, अनुभव इत्यादि अभिव्यक्त कर सके जो कि लिखित, मौखिक या सांकेतिक स्वरूप में हो सकता है. सामान्यतः मनुष्य की सार्थक वाणी को भाषा कहते हैं. क्या आपको भी कभी विचार आया है कि आपकी मातृभाषा की उत्पत्ति कैसे हुई होगी या भारत अथवा विश्व में बोली या लिखी जाने वाली अन्य भाषाएं कैसे उत्पन्न हुई होंगी ? इन प्रश्नों का उत्तर विद्वानों ने अलग-अलग सिद्धांतों के माध्यम से दिया है- उदाहरण के तौर पर बो-वो थ्योरी, डिंग-डोंग थ्योरी, पुहु-पुहु थ्योरी, जेस्चर थ्योरी इत्यादि. हालांकि जिन भाषाओं को हम रोजाना बोलचाल में उपयोग कर रहे हैं, वे सारी सामान्यतः नैसर्गिक/ प्राकृतिक हैं अर्थात् ये भाषाएं मानव प्रजाति द्वारा लंबे समय से प्रयुक्त हो रही हैं और समय के साथ विकसित हुई हैं.

कृत्रिम भाषा वह है जिसका उच्चारण, शब्दावली तथा व्याकरण नैसर्गिक रूप से नहीं, परंतु किसी व्यक्ति या व्यक्ति समूह द्वारा किसी खास प्रयोजन हेतु निर्मित किया गया हो. कृत्रिम भाषा (artificial / constructed language) के निर्माण की कई वजह हो सकती हैं जैसे कि भाषा - विज्ञान में प्रायोगिक तौर पर, मानवीय संवाद को सरल बनाने हेतु या किसी उपन्यास/ कथा साहित्य/ चलचित्र में पात्र द्वारा उपर्युक्त भाषा को अधिक यथार्थ दिखाने हेतु.

अब आप सोच रहे होंगे कि आपने तो ऐसी कोई भाषा सुनी या पढ़ी ही नहीं है. है न? अरे. जरूर सुनी है, जैसे कि,

**1. किलिकी (Kiliki):** - क्या आपने कुछ वर्ष पूर्व प्रसारित चलचित्र 'बाहुबली-द-बिगिनिंग' देखा है? यदि हां, तो फिर आपको इस चलचित्र के एक खलनायक किरदार कालकेय

तो याद ही होंगे और उनके द्वारा बोली जाने वाली विचित्र भाषा भी. आपको जानकर हैरानी होगी कि वह सिर्फ ऊटपटांग शब्द या उद्‌गार नहीं थे परंतु बड़े ध्यानपूर्वक बनाई गयी एक भाषा, एक कृत्रिम भाषा - किलिकी थी. इस भाषा को श्री मदन कारकी ने खास तौर पर बाहुबली चलचित्र में प्रयोग करने हेतु बनाया था. इस भाषा में करीब 3000 शब्द हैं तथा इसकी वर्णमाला में 22 अक्षर हैं. वर्ष 2020 के अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर बाहुबली चलचित्र के निर्देशक श्री एस. एस. राजामौली ने किलिकी भाषा की आधिकारिक वेबसाइट भी लॉन्च की है तथा यह भाषा उत्तरोत्तर प्रगति कर रही है.

**2. नावी (Na'Vi)** : - किलिकी ही चलचित्र के लिए बनाई गयी मात्र एक कृत्रिम भाषा नहीं है, न ही प्रथम भाषा है. अगर आप हॉलीवुड चलचित्रों के शौकीन हैं तो आपने 2009 में निर्मित, जेम्स केमेरुन की अवतार फिल्म देखी ही होगी. इस फिल्म ने दुनियाभर से करीब रू. 284 करोड़ की रिकॉर्ड कमाई की है तथा दुनियाभर के फिल्म प्रेमियों को बहुत पसंद भी आई थी और उसी वर्ष ऑस्कर अवार्ड की 9 कैटेगरी में नामित हुई थी तथा 3 अवार्ड जीते थे. इस फिल्म में 'नीलरंगी' अवकाशी जीवों द्वारा बोली जाने वाली भाषा 'नावी' भी एक कृत्रिम भाषा है जिसे श्री पोल फ्रेमर ने विकसित किया है. जब फिल्म रिलीज हुई तब इसमें करीब 1000 शब्द थे, परंतु बाद में धीरे - धीरे श्री फ्रेमर ने इसके शब्दकोश को करीब 2600 शब्दों तक बढ़ाया है एवं उनके 'अवतार' सीरीज की आनेवाली फिल्मों में उपयोग किए जाने की संभावना है. श्री फ्रेमर ने नावी भाषा के व्याकरण नियम भी प्रकाशित किए हैं. नावी की एक खासियत यह है कि यह भाषा संस्कृत की तरह "free word order' भाषा है अर्थात इसमें वाक्य में शब्द को किसी भी स्थान पर उपयोग किया जा सकता है (अपवाद के तौर पर ज्यादा विशेषणों या नाम युक्त जटिल वाक्यों के अलावा).

**3. क्लिंगोन (Klingon)** : किलिकी और नावी के अलावा क्लिंगोन भाषा भी एक प्रख्यात हॉलीवुड फिल्म सीरीज 'स्टार ट्रेक' में उपयोग में ली गयी थी. इस भाषा को श्री मार्क

ओकरान्ड, श्री जेम्स दुहान तथा श्री जॉन पोविल दारा बनाया गया था. क्लिंगोन लेंगवेज़ इंस्टीट्यूट की स्थापना क्लिंगोन भाषा को बढ़ावा देने के लिए की गयी थी. इस संस्था द्वारा 13 वर्षों तक एक तिमाही पत्रिका का प्रकाशन किया गया तथा विविध उपन्यासों का क्लिंगोन भाषा में अनुवाद भी किया गया. यह संस्था पेंसिलवेनिया, यूएस में स्थित है.

**4. डोथराकी (Dothraki) और वेलिरियन (Valyrian) भाषा समूह : –** प्रख्यात साहित्यकार श्री जॉर्ज आर आर मार्टिन के उपन्यास 'अ सॉन्ग ऑफ आइस एंड फायर' तथा उससे प्रेरणा लेकर बनाई गई विश्वविख्यात अंग्रेजी सीरीज 'गेम ऑफ थ्रोन्स' में इन भाषाओं का प्रयोग किया गया. इनकी रचना का श्रेय डेविड जे. पीटरसन तथा जॉर्ज आर. आर. मार्टिन को जाता है. गेम ऑफ थ्रोन्स सीरीज के कुछ एपिसोड्स में नायिका द्वारा ड्रेगन को बोली जाने वाली वेलिरियन भाषा का शब्द 'ड्रकारिस' (dracarys) काफी प्रचलित हुआ था. इन दोनों भाषाओं के स्थापित व्याकरण नियम और शब्दावली हैं. भाषा सिखाने वाली वेबसाइट ड्यूओलिंगो ने जब हाई वेलिरियन भाषा सीखने का कोर्स शुरू किया था तब लगभग 12 लाख लोगों ने इसे सीखने में रुचि दर्शाते हुए नामांकन करवाया था.

उपर हमने जिन भाषाओं की चर्चा की, वह सारी फिल्मों के लिए बनाई गयी "constructed languages" हैं. अप्राकृतिक भाषाओं को constructed languages के अलावा कई अन्य प्रकार/नाम में वर्गीकृत किया जाता है जैसे कि artificial language, planned language, engineered language, auxiliary language, artistic language इत्यादि. हालांकि इस आलेख की विषय वस्तु और पाठकगण को ध्यान में रखते हुए इन विभिन्न प्रकारों की विस्तृत चर्चा न करते हुए आइये रुख करते हैं, विश्व की सबसे ज्यादा लोकप्रिय कृत्रिम भाषा की ओर.

**5. एस्पेरान्टो** (Esperanto) : - एस्पेरान्टो विश्व की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली अप्राकृतिक भाषा है. इस भाषा की रचना श्री लुडविक झामेनहोफ ने 1887 में की थी. इस भाषा की रचना के पीछे उनका उद्देश्य एक ऐसी भाषा की रचना करना था जो पूरे विश्व की 'दूसरी भाषा' बने और अलग-अलग भाषा बोलने वाले लोगों के लिए एक-दूसरे से संवाद का सरल माध्यम बने. अपने बहुत ही सरल व्याकरण जैसी खूबियों की वजह से एस्पेरान्टो ने विश्व के भाषा विद्वानों को प्रभावित किया और देखते ही देखते पूरे विश्व में खास कर यूरोप में प्रचलित हो गयी. एस्पेरान्टो भाषा में सिर्फ 16 व्याकरण के नियम हैं और इनमें कोई

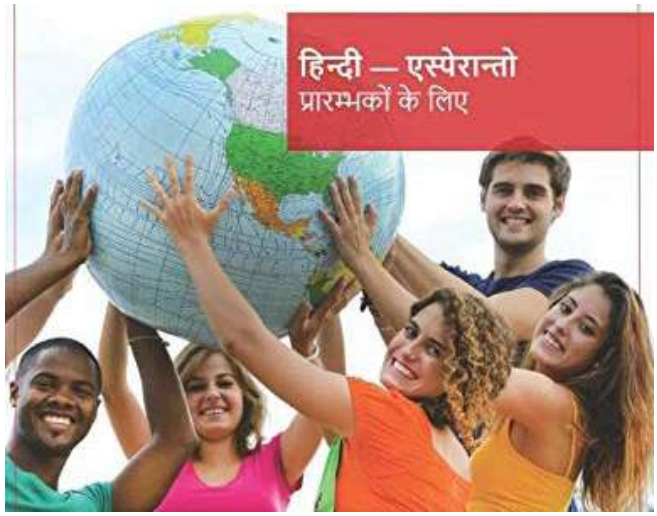


अपवाद नहीं है. एक अनुमान के अनुसार आज एस्पेरान्टो करीब 20 लाख लोगों की 'दूसरी भाषा' बन चुकी है. भारत में एस्पेरान्टो के प्रचार-प्रसार में श्री लक्ष्मीश्वर सिन्हा की भूमिका काफी रही. स्वीडन में उच्चाभ्यास करते समय उन्होंने एस्पेरान्टो सीखी और फिर वे भी इस अद्भुत भाषा के प्रचार-प्रसार में लग गए. उन्होंने श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'क्षुधित पाषाण' का एस्पेरान्टो भाषा में अनुवाद भी किया. एस्पेरान्टो भाषा की विश्व में लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि अब तक 30000 से भी ज्यादा पुस्तक इस भाषा में प्रकाशित हो चुकी हैं.

विभिन्न भाषाओं को जानना, समझना ही मानव प्रजाति की श्रेष्ठ खूबी है जो इसे अन्य जीवों से अलग बनाती है, उसमें भी कृत्रिम भाषाओं की रचना एवं समझ का मानव प्रजाति के इतिहास में विशेष स्थान रहेगा. ऊपर हमने जो चर्चा की है, वह भाषाओं के विशाल और हर पल विस्तारशील विश्व की बस एक छोटी सी झलक है. जो पाठक इस विषय में और अधिक जानना चाहते हैं वह कुछ और कृत्रिम भाषाओं एल्विश (elvish), न्यूस्पीक (newspeak) इत्यादि पर इन्टरनेट के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं.

संदर्भ सूची: –


*(i) 'Theories of the origin of language ',by somnath Sarkar, https://www.eng-literature.com/2020/09/theories-origin- language.html*

*(ii) https://en.m.wikipedia.org/wiki/contructed_language*

*(iii) https://www.kiliki.in/*

*(iv) https://en.m.wikipedia.org/wiki/NA%CA%Bcvi_language*

*(v) https://www.klik.org/about-klingon/klingon-history/*

*(vi) https://en.wikipedia.org/wiki/Dothraki_language*


* * *

# बड़ौदा मेधावी पुरस्कार

हमारे बैंक ने देश के जन समुदाय विशेषकर युवा पीढ़ी के बीच संपर्क भाषा हिन्दी को लोकप्रिय बनाने हेतु ''बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान'' नामक योजना शुरू की है. योजना के तहत एम.ए. हिंदी की अंतिम वर्ष की परीक्षा में विश्वविद्यालय स्तर पर प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले चयनित विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष नकद पुरस्कार तथा प्रशंसा पत्र प्रदान किए जाते हैं. इस योजना के अंतर्गत हम पत्रिका के पाठकों के लिए मार्च 2022 तिमाही में आयोजित कार्यक्रमों की संक्षिप्त झलकियां प्रस्तुत कर रहे हैं: – संपादक

## अंचल कार्यालय, जयपुर

## अंचल कार्यालय, कोलकाता

## क्षेत्रीय कार्यालय, अमृतसर

## क्षेत्रीय कार्यालय, हिसार

## क्षेत्रीय कार्यालय, आणंद

## क्षेत्रीय कार्यालय, मैसुरू

## क्षेत्रीय कार्यालय, हुब्बली

## क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

## क्षेत्रीय कार्यालय, एर्णाकुलम

## क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

# अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी बैंक के विभिन्न कार्यालयों/ शाखाओं में धूमधाम से अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया गया. इस अवसर पर बैंक में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां हम अपने पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं: – संपादक

## अंचल कार्यालय, भोपाल

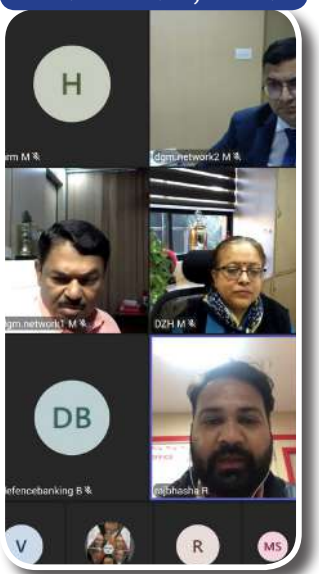


## अंचल कार्यालय, हैदराबाद

## अंचल कार्यालय, बड़ौदा

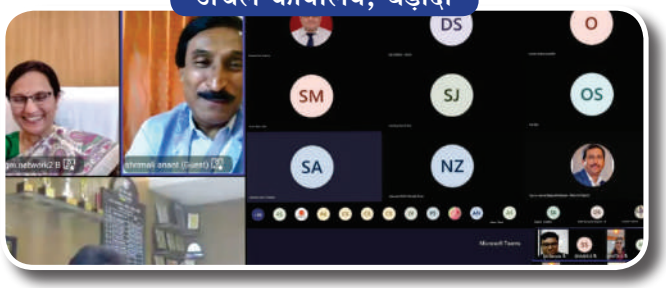


## अंचल कार्यालय, मंगलूरू

## अंचल कार्यालय, बेंगलूरू एवं क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरू दक्षिण तथा मध्य

## अंचल कार्यालय, नई दिल्ली

## क्षेत्रीय कार्यालय, रतलाम

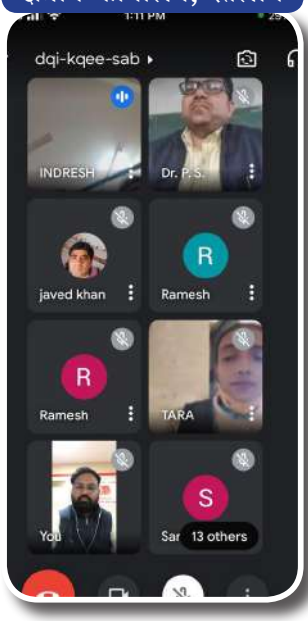


## क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर एवं बिलासपुर

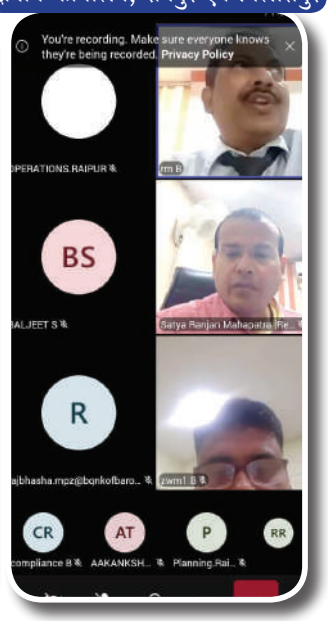


## क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद क्षेत्र 2

## क्षेत्रीय कार्यालय, आणंद

# अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय, गुड़गांव

क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर

सरकारी संपर्क एवं पी.एस.यू. व्यवसाय विभाग, नई दिल्ली

क्षेत्रीय कार्यालय, विशाखापट्टणम

क्षेत्रीय कार्यालय, औरंगाबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई मेट्रो पश्चिम

क्षेत्रीय कार्यालय, रायबरेली

क्षेत्रीय कार्यालय, मेहसाणा

क्षेत्रीय कार्यालय, बनासकांठा

# अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय, जलगांव

क्षेत्रीय कार्यालय, हिसार

क्षेत्रीय कार्यालय, फतेहपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा जिला

क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा शहर क्षेत्र 2

क्षेत्रीय कार्यालय, गोधरा

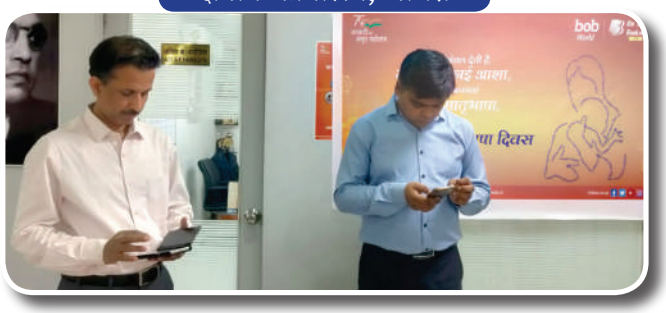

क्षेत्रीय कार्यालय, भरूच

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरू उत्तर

क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूर

क्षेत्रीय कार्यालय, तेलंगाना दक्षिण

## अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

**क्षेत्रीय कार्यालय, नवी मुंबई**

**क्षेत्रीय कार्यालय, कोटा**

**क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर**

**क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून**

**क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूरू शहर**

**क्षेत्रीय कार्यालय, शाहजहांपुर**

## नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा की 68वीं छमाही बैठक का आयोजन

दिनांक 28 जनवरी, 2022 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा की 68वीं छमाही बैठक का आयोजन नराकास (बैंक), वडोदरा के अध्यक्ष एवं मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री अजय कुमार खोसला की अध्यक्षता में वर्चुअल माध्यम से किया गया. इस अवसर पर उप निदेशक (कार्यान्वयन), पश्चिम क्षेत्र, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य, प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह, बड़ौदा अंचल के उप अंचल प्रमुख श्री पी एस नेगी, समिति के सदस्य सचिव एवं सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र तथा सदस्य बैंकों के कार्यालय/शाखा प्रमुख एवं राजभाषा अधिकारी/ प्रभारी उपस्थित रहे. बैठक के दौरान समिति की छमाही पत्रिका 'समन्वय' के नवीनतम अंक का विमोचन किया गया.

# भाषा बहता नीर

| क्र. | हिंदी | तेलुगु | तमिल | मलयालम |
|---|---|---|---|---|
| 1 | नमस्कार! क्या मैं अंदर आ सकता हूं? | नमस्कारमंडी! नेनु लोपलिकि रावोच्चा? | वणक्कम्! नान् उळ्ळे वरलामा? | नमस्कारम् ! ञान् अकत्त् वन्नोट्टे? |
| 2 | 'हां-हां' अवश्य आइए और बताइए मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूं? | 'अवुनु-अवुनु' तप्पकुंडा रंडी नेनु मीकु ए विधंगा सहायमु चेयगलनु? | 'आमाम्-आमाम्' कट्टायम् वारुंगल्, चौल्लुङ्गळ् नान् उङ्गळुक्कु ऐन्न चेय्य वेण्डुम्? | 'हां हां' तीर्चयायुम् वरू वन्निट् परयू, एनिक्यु निंगले सहायिक्कान् एन्तुचेय्यानाकुमेन्न्? |
| 3 | महोदय, मुझे अपने पुत्र के दाखिले के संबंध में आपसे बात करनी है. | अय्या, मा अब्बायि अड्मिषन् गुरिंचि मीतो माट्लाडालनुकुंटुन्नानु. | ऐया, ऐन मगन्निन् चेर्क्कै तोडर्बाग उङ्गळिडम् पेस विरुम्बुकिरेन्. | सर्, एन्टे मकन्टे स्कूल प्रवेशनत्ते कुरिच्च् एनिक्क् निङ्ङळोट् संसारिक्कणं. |
| 4 | कहिए, आप अपने पुत्र का कौन सी कक्षा में दाखिला चाहते हैं? | चेप्पंडि, मी अब्बायिनि ए तरगतिलो चेर्पिंचालनि अनुकुंटुन्नारु? | चोल्लुङ्गळ्, उङ्गळ् मगनै ऐन्द वकुप्पिल् सेर्क्क विरुम्बुकिरीर्गळ्? | परयू, निङ्ङळुट मकन एत् क्लासिल् चेर्क्कणमन्नाण् निङ्ङळ् आग्रहिक्कुन्नत्? |
| 5 | मैं अपने बेटे का दाखिला ग्यारहवीं कक्षा में कराना चाहता हूं. | नेनु मा अब्बायिनि पदकोंडु तरगतिलो चेर्पिंचालनि अनुकुंटुन्नानु. | ऐन्दु मगनै पतिन्रेन्राम् वकुप्पिल् सेर्क्क विरुम्बुकिरेन्. | ऐनिक् ऐन्टे मकने पतिनोन्नां क्लासिल् चेर्क्कणं. |
| 6 | उसने दसवीं कक्षा पब्लिक स्कूल राजौरी गार्डन से उत्तीर्ण की है. | तनु पब्लिक् स्कूल् राजौरि गाडन् नुंडि पदो तरगति पास अय्याडु. | पब्लिक् स्कूल् रजोरि गार्डनिल् पत्ताम् वगुप्पु तेर्च्चि परुळ्ळार्. | अवन् पब्लिक् स्कूळ् रजौरि गार्डनिल् निन् पत्ता क्लास् पासायि. |
| 7 | आप अपने बच्चे को पब्लिक स्कूल से यहां सरकारी स्कूल में पढ़ाना चाहते हैं, ऐसा क्यों? | मीरु मी अब्बायिनी पब्लिक पाठशाला नुंडि इक्कड प्रभुत्व पाठशालकु पंपालनुकुंटुन्नारु, एंदुकु? | उङ्गळ् कुळन्दैयै पब्लिक् पळ्ळियिल् इरुन्दु इङ्गुळ्ळ अरसुप् पळ्ळिक्कु अनुप्प एन् विरुम्बुगिरीर्गळ्? | निङ्ङलुट कुट्टिय पब्लिक् स्कूलिल निन् इविटयुल्ल सर्क्कार् स्कूलिलेक्क् अयय्क्कान् एन्तुकण्ट् निङ्ङळ् आग्रहिक्कुन्नु,? |
| 8 | मैंने इस स्कूल का काफी नाम सुना है. यहां पढ़ाई की उत्तम व्यवस्था है और खर्च नाम मात्र का भी नहीं है. | नेनु ई स्कूल गुरिंचि चाला सार्लु विन्नानु. इक्कड मंचि विद्यनु अभ्यसिन्चोच्चु मरियु खर्चुलु नाममात्रंगा कूडा लेवु. | इन्द पळ्ळियिन् पट्री केळिवप्पट्टिरुक्किरेन्. इङ्गु नल्ल कल्वि मुऱै उळ्ळदु, सेलवुगळ् पेयरळविल् इल्लै. | ञान् ई स्कूलिने पट्टि कुरे केट्टिट्टुण्ट्. नल्ल विद्याभ्यास सम्प्रदायं इविटयुण्ट्, चलव् नाममात्रमानु. |
| 9 | आप अपने बेटे का दाखिला किस वर्ग में करवाना चाहते हैं? | मीरु मी अब्बयिनी ए तरगतिलो चेर्चालनुकुंटुन्नारु? | उङ्गळ् मगनै एन्द वगुप्पिल् सेर्क्क विरुम्बुगिरीर्गळ्? | निङ्ङलुट मकन एत् क्लासिल् चेर्क्कानाण् निङ्ङल् आग्रहिक्कुन्नत्? |
| 10 | मुझे विज्ञान वर्ग में दाखिला दिलवाना है. | नेनु सैन्स् क्लास्लो अड्मिषन् तीस्कोवालिनि अनुकुंटुन्नानु. | नान् अरिवियल् वगुप्पिल् सेर्क विरुम्बुगिरेन्. | एनिक् सयन्स् क्लासिल् चेरक्कानाणु आग्रहम. |
| 11 | क्या आप मुझे विद्यालय में दाखिले के फॉर्म और दाखिले से संबंधित अन्य बातें विस्तार से बता सकते हैं? | पाठशाललो प्रवेशानिकि संबंधिंचिना अड्मिषन् फारं मरियु इतर विवरालनु नाकु तलियजेयगलरा? | सेर्क्कै पटिवम् मट्रुम पळ्ळियिल् सेर्क्कै तडर्बान् पिऱ विवरमळै एन्निडम् कूर मुडियुमा? | स्कूलिल प्रवेशनवुमायि बन्धप्पट्ट अड्मिषन् फोमुं मट्ट विशदांशङ्ङळुं न्नोट् परयामो? |
| 12 | जरूर, यह लीजिए फॉर्म और विद्यालय की सूचना पुस्तिका, जिसमें विद्यालय के सारे नियम और शर्तें लिखी हुई हैं. | तप्पकुंडा, ई फारम्नु मरियु पाठशाला समाचार बुक्लट्टु तीसुकोंडि, दीनिलो पाठशाल यक्क अन्नि निबंधनलु मरियु षरतुलु व्रायबडि उन्नायि. | निच्चयमाग, इन्दप् पडिवत्तैयुम् पळ्ळि तगवल् कैयेट्टैयुम् एडुत्तुक् कळ्ळुङ्गळ्, अदिल् पळ्ळियिन् अनैत्तु वितिमुरैगळुम् निबन्तनैगळुम् एळुदप्पट्टुळ्ळन. | तीर्च्चयायुं, इता फोमुं स्कूळ् विवरंगल उल्ल बुक्कलट्टुं, अतिल् स्कूलिन्टे एल्ला निबन्धनकलुं व्यवस्थकलुं एळुतिटुंडु . |
| 13 | इस फॉर्म को अच्छी तरह भरकर आप 10 दिनों के भीतर इसे जमा करा सकते हैं. | ई फारम्नु सरिग्गा पूर्ति चेसी, मीरु 10 रोजुललोपु समर्पिंचवच्चु. | इन्द पडिवत्तै सरियाग पूर्त्ति सैदु, 10 नाट्कळुक्कुळ् समर्प्पिक्कलाम्. | ई फों शरियायि पूरिप्पिच्, निङ्ङल् इत् 10 दिवसत्तिनुल्लिल समर्प्पिक्कां. |
| 14 | बहुत-बहुत धन्यवाद! मैं जल्द ही फॉर्म भर कर जमा करता हूं. | चाला धन्यवादालु! नेनु त्वरलो फारम्नु निंपि समर्पिस्तानु. | मिक्क नन्ड्रि! विरैविल् पटिवत्तै पूर्त्ति सैय्दु समर्प्पिक्किरेन्. | वलरे नन्दि! ञान् उडन् तन्न फों पूरिप्पिच् समर्प्पिक्कु. |
| 15 | जी जरूर. इस विद्यालय में आपका स्वागत है. | सरेनंडि, ई पाठशाललो मीकु स्वागतमु. | आम्, निच्चयमाग. इन्त पळ्ळिक्कु उंगलै वरवेर्किरोम्. | तीर्च्चयायुं. ई स्कूलिलेक्क् तांग़ल्क् स्वागतं. |

# आइये ! सीखें भारतीय भाषाएं

| क्र. | कन्नड | गुजराती | बांगला | मराठी |
|---|---|---|---|---|
| 1 | ನಮಸ್ಕಾರ! ನಾನು ಓಳಗೆ ಬರಬಹುದಾ? | નમસ્તે! શું હું અન્દર આવી શકું છુ? | নোমস্কার! আমি কি আসতে পারি? | नमस्कार! मी आत येऊ का? |
| 2 | 'ಹಾಂ ಹಾಂ' ಅವಶ್ಯವಾಗಿ ಬನ್ನಿ, ಮತ್ತೆ ಹೇಳಿ, ನಾನು ನಿಮಗೆ ಏನು ಸಹಾಯ ಮಾಡಬಹುದು? | 'હા-હા' આવો અને કહો હું તમારી શું મદદ કરી શકું? | 'হ্যাঁ-হ্যাঁ' অবশ্যই আসুন আর বোলুন, আমি কি ভাবে আপনার সাহায্য কোরতে পারি? | 'हो-हो' जरूर या आणि मला सांगा मी तुमची काय मदत करू शकतो? |
| 3 | ಸರ, ನನ್ನ ಮಗನ ದಾಖಲಾತಿ ಬಗ್ಗೆ ನಾನು ನಿಮ್ಮೊಂದಿಗೆ ಮಾತನಾಡ ಬೇಕಿತ್ತು. | સર, મારે મારા પુત્રના એડમિશન અંગે તમારી સાથે વાત કરવી છે. | মহাশয়, আমি অমার ছেলের ভর্তী বিষয়ে সম্বন্ধে আপনার সংগে কোথা বোলতে চাই । | सर, मला तुमच्याशी माझ्या मुलाच्या प्रवेशाबाबत बोलायचे आहे. |
| 4 | ಹೇಳಿ, ನಿಮ್ಮ ಮಗನನ್ನು ಯಾವ ತರಗತಿಗೆ ಸೇರಿಸಬೇಕೆಂದು ನೀವು ಬಯಸುತ್ತೀರಿ? | બોલો, તમે તમારા પુત્રનું કઈ કક્ષામાં એડમિશન કરાવવા માંગો છો? | বলুন, আপনার ছেলেকে কোন ক্লাসে ভর্তি করাতে চান? | सांगा, तुमच्या मुलाला कोणत्या वर्गात प्रवेश घ्यायचा आहे? |
| 5 | ನಾನು ನನ್ನ ಮಗನನ್ನು ಹನ್ನೊಂದನೇ ತರಗತಿಗೆ ಸೇರಿಸಲು ಬಯಸುತ್ತೇನೆ. | હું મારા પુત્રને ધોરણ અગ્યારમાં દાખલ કરવા માંગુ છું. | আমি আমার ছেলেকে একাদশ শ্রেণিতে ভর্তি করতে চাইঝী. | मला माझ्या मुलाला अकराव्या वर्गात दाखल करायचे आहे. |
| 6 | ಅವನು ಹತ್ತನೇ ತರಗತಿಯನ್ನು ಪಬ್ಲಿಕ್ ಸ್ಕೂಲ್ ರಾಜೌರಿ ಗಾರ್ಡನಿಂದ ಪಾಸಾಗಿದ್ದಾನೆ. | તેણે પબ્લિક સ્કૂલ રાજૌરી ગાર્ડનમાંથી ધોરણ દસ પાસ કર્યું છે. | সে পাবলিক স্কুল রাজৌরি গার্ডেন থেকে দশম শ্রেণি পাস করেছে। | पब्लिक स्कूल राजौरी गार्डन मधून तिने दहावी उत्तीर्ण केली आहे. |
| 7 | ನಿಮ್ಮ ಮಗನನ್ನು ಪಬ್ಲಿಕ್ ಶಾಲೆಯಿಂದ ಸರಕಾರಿ ಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಓದಿಸಲು ನೀವು ಬಯಸುತ್ತೀರಾ, ಹಾಗೆ ಏಕ? | તમે તમારા પુત્રને અહીંની પબ્લિક સ્કૂલમાંથી સરકારી સ્કૂલમાં ભણાવવા માંગો છો, શા માટે? | আপনি আপনার সন্তানকে পাব্লিক স্কুল থেকে এখানে সরকারি স্কুলে পডাতে চান, এমনী নো ? | तुम्हाला तुमच्या पाल्याला पब्लिक शाळेतून सरकारी शाळेत पाठवायचे आहे, का? |
| 8 | ನಾನು ಈ ಶಾಲೆಯ ಬಗ್ಗೆ ಬಹಳ ಹೆಸರು ಕೇಳಿದ್ದೇನೆ. ಇಲ್ಲಿ ಉತ್ತಮ ಶಿಕ್ಷಣದ ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಇದೆ ಮತ್ತು ಹೆಸರಿಗೂ ಕೂಡ ಖರ್ಚು ಇಲ್ಲಾ. | મેં આ શાળાનું ઘણું નામ સાંભળ્યું છે. અહીં શિક્ષણની સારી વ્યવસ્થા છે અને ખર્ચ પણ ના બરાબર છે. | আমি এই স্কুলের অনেক নাম শুনেছি। এখানে শিক্ষার ভালো ব্যবস্থা আছে এবং খরচও টা নামমাত্র নয় । | या शाळेचे मी खूप नावं ऐकले आहे. येथे शिक्षणाची उत्तम व्यवस्था असून खर्चही नाममात्र आहे. |
| 9 | ನಿಮ್ಮ ಮಗನನ್ನು ಯಾವ ವಿಭಾಗದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸಲು ನೀವು ಬಯಸುತ್ತೀರಿ? | તમે તમારા પુત્રને કયા વર્ગમાં દાખલ કરવા માંગો છો? | আপনি আপনার ছেলেকে কোন ক্লাসে ভর্তি করতে চান? | तुम्ही तुमच्या मुलाला कोणत्या वर्गात दाखल करू इच्छिता? |
| 10 | ನನಗೆ ವಿಜ್ಞಾನ ವಿಭಾಗದಲ್ಲಿ ಸೇರಿಸ ಬೇಕೆಂದಿದೆ. | મારે વિજ્ઞાન વર્ગમાં દાખિલો જોઇએ છે. | আমি বিজ্ঞান ক্লাসে ভর্তি হতে চাই। | मला विज्ञान वर्गात प्रवेश घ्यायचा आहे. |
| 11 | ಶಾಲಾ ಪ್ರವೇಶಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ದಾಖಲಾತಿ ಫಾರ್ಮ್ ಮತ್ತು ಇತರ ವಿವರಗಳನ್ನು ನೀವು ನನಗೆ ತಿಳಿಸುವಿರಾ? | શું તમે મને શાળામાં દાખિલાનું ફોર્મ અને દાખિલા સંબંધિત અન્ય વિગતો જણાવી શકો છો? | আপনি কি আমাকে ভর্তির ফর্ম এবং স্কুলে ভর্তি সংক্রান্ত অন-নান্ন বিবরণগুলো বলতে পারেন? | तुम्ही मला प्रवेश अर्ज आणि शाळेतील प्रवेशासंबंधी इतर तपशील सांगू शकाल का? |
| 12 | ಖಂಡಿತವಾಗಿ, ಈ ಫಾರ್ಮ್ ಮತ್ತು ಶಾಲೆಯ ಮಾಹಿತಿ ಪುಸ್ತಕವನ್ನು ತಗದುಕಳ್ಳಿ, ಇದರಲ್ಲಿ ಶಾಲೆಯ ಎಲ್ಲಾ ನಿಯಮ ಮತ್ತು ಷರತ್ತುಗಳನ್ನು ಬರಯಲಾಗಿದ. | જરૂર, આ લો ફોર્મ અને શાળાની સુચના પુસ્તિકા, જેમાં શાળાના તમામ નિયમો અને શરતો લખેલી છે. | অবশ্যই, এই নীন ফর্ম এবং স্কুল তথ্য পুস্তিকা নিন, যাতে স্কুলের সমস্ত শর্তাবলী লেখা আছে। | अर्थात, हा फॉर्म आणि शाळेची माहिती पुस्तिका घ्या, ज्यामध्ये शाळेच्या सर्व अटी व शर्ती लिहिलेल्या आहेत. |
| 13 | ನೀವು ಈ ಫಾರ್ಮ ಅನ್ನು ಸರಿಯಾಗಿ ಭರ್ತಿ ಮಾಡಿ 10 ದಿನದೊಳಗೆ ಸಲ್ಲಿಸಬಹುದು. | આ ફોર્મ યોગ્ય રીતે ભરીને, તમે તેને 10 દિવસની અંદર સબમિટ કરી શકો છો. | এই ফর্মটি সঠিকভাবে পূরণ করে, আপনি এটি 10 দিনের মধ্যে জমা দিতে পারেন। | हा फॉर्म योग्यरित्या भरून, तुम्ही तो 10 दिवसांच्या आत सबमिट करू शकता. |
| 14 | ತುಂಬಾ ಧನ್ಯವಾದಗಳು! ನಾನು ಬೇಗನೆ ಫಾರ್ಮ ಅನ್ನು ಭರ್ತಿ ಮಾಡಿ ಸಲ್ಲಿಸುತ್ತೇನೆ. | તમારો ખુબ ખુબ આભાર! હું જલ્દી જ ફોર્મ ભરીને સબમિટ કરી દઈશ. | অনেক ধন্যবাদ! আমি শীঘ্রই ফর্ম ভর্তী কোরে জমা দেব. | खूप खूप धन्यवाद! मी लवकरच फॉर्म भरून सबमिट करेन. |
| 15 | ಹಾಗೆ ಆಗಲಿ, ಈ ಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ನಿಮಗೆ ಸ್ವಾಗತ | હા, ચોક્કસપણે. આ શાળામાં તમારું સ્વાગત છે. | হ্যাঁ, অবশ্যই। এই স্কুলে স্বাগতম। | होय नक्कीच. या शाळेत आपले स्वागत आहे. |

# तरबूज

**शिव शंकर मित्रा**
मुख्य प्रबंधक
पिंपरी शाखा, पुणे जिला क्षेत्र

सोच रहा हूं कि कहां से शुरू करूं? क्या लिखूं? वैसे मैं नियमित रूप से नहीं लिखता, परन्तु आज बहुत सारी घटनाओं में से एक घटना ने मुझे लिखने पर विवश कर दिया. कुछ घटनाएं ऐसी होती हैं कि आदमी चाहकर भी उन बीते हुए लम्हों को अपने आप से जुदा नहीं कर पाता है. यादों की परत एक के बाद एक खुलती चली जाती है. बात उन दिनों की है, जब मेरा तबादला सिराथू जिला, कौशाम्बी, उत्तर प्रदेश में वरिष्ठ शाखा प्रबंधक के रूप में हुआ था. मैंने सिराथू शाखा अगस्त 2015 में संभाली थी. वहां मेरी नियुक्ति विशेष रूप से वसूली तथा अग्रिम को बढ़ाने के लिए की गयी थी. शाखा ज्वाइन करने के पश्चात् मैंने पाया कि उस शाखा में गैर निष्पादित आस्ति (NPA) बहुत अधिक है. मेरा सारा ध्यान NPA को कम करने में तथा वसूली करने में लग गया तथा मैंने एक NPA रजिस्टर बनाया. रजिस्टर बनाते वक्त मैंने एक बात ध्यान दी कि अधिकतर ऋण लगभग 15 हज़ार रुपए से कम थे. इसे एक सरकारी योजना SCP के तहत लगभग 60 से 70% ग्राहकों को दिया गया था जिनमें ज्यादातर महिलायें थी. SCP ऋण उन्ही लोगों को दिया जाता है जो गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करते हैं और जिनकी आर्थिक स्थिति बेहद ख़राब होती है. इस ऋण का मकसद लोगों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाना तथा आर्थिक मदद करना होता है. रजिस्टर बनाने के बाद मैंने एक सप्ताह के अन्दर सभी बकायेदारों को नोटिस भेज दिया. मुझे विश्वास था कि ऋणियों पर कुछ असर पड़ेगा और वे कुछ रकम अवश्य जमा करेंगे. कुछ दिन बीत जाने पर कुछ लोगों ने राशि जमा करना शुरू किया किन्तु SCP बकायेदारों ने एक भी रकम जमा नहीं की. इस तरह दो-तीन महीने बीत गए, पता ही नहीं चला. दिसम्बर 2015 की तीसरी तिमाही आ गई. वसूली का लक्ष्य पूरा नहीं हो पा रहा था. मैं अपने आप पर काफी दबाव महसूस कर रहा था. बाकी अन्य लक्ष्य तो लगभग पूरे थे. वसूली को लेकर चिंतित हो उठा. मैंने एक योजना के तहत काम करने के बारे में सोचा. हमारी शाखा में कुल तीन व्यवसाय प्रतिनिधि (BC) थे. मैं सप्ताह में तीन दिन वसूली के लिए निकलता था. सबसे पहले बड़े बकायेदारों के पास जाता था. उनमें आधे से ज्यादा लोग घर पर ही नहीं होते थे और जो मिलते वो कोई न कोई बहाना बनाकर एक-दो महीने की मोहलत ले लेते. उस दौरान मुझे SCP ऋणियों से मिलने का मौका नहीं मिला, चूंकि रकम बहुत ही छोटी थी. समय को देखते हुए छोटे बकायेदारों से नहीं मिले. आख़िरकार दिसम्बर 2015 का महीना भी चला गया और मैं अपने लक्ष्यों को हासिल करने में असमर्थ रहा. अंतिम तिमाही मेरे लिए बेहद चुनौतीपूर्ण साबित होने वाली थी. मैंने सारा ध्यान वसूली पर केन्द्रित कर दिया. कुछ बकायेदारों के ऋण एकमुश्त योजना तथा लोक अदालत के माध्यम से निपटने लगे. कार्य में प्रगति आने लगी. पहले मैं SCP बकायेदारों को नज़र अंदाज़ कर रहा था, अब उन्हीं पर ध्यान केन्द्रित कर दिया, क्योंकि NPA खातेदारों की संख्या भी घटानी थी. मैंने पाया कि 70 से 80 प्रतिशत SCP ऋण एक ही गांव अल्पी के लोगों को दिये गये थे. अत: मैंने और व्यवसाय सहयोगी ने अल्पी गांव जाने का फैसला किया. खूब अच्छी तरह याद है फरवरी का महीना था. धूप खिली हुई थी. करीब आधे घंटे में मैं और बीसी अल्पी गांव पहुंच गए. गांव जाने से पहले वहां के लोगों के विषय में जानकारियां इक्कठी करनी शुरु कर दी. राजेन्द्र ने बताया कि वहां जाने से कोई फ़ायदा नहीं है. अधिकतर लोग बाहर कमाने के लिए गए हैं. ज्यादातर औरतें ही गांव में रहती है. मैंने कहा कि लोन भी तो ज्यादातर औरतों को ही दिया गया है. सचमुच जैसा सुना था वैसा ही पाया, गांव बेहद ही पिछड़ा था. सभी घर झोपड़ी के बने थे. अधिकांश झोपड़ियां टूटी हुई थी. पास एक तालाब बना था, जिसमें छोटे-छोटे बच्चे क्रीड़ा कर रहे थे. बच्चे पानी से खेलकर कितने खुश लग रहे थे. मैं उन बच्चों को देखने लगा और अनायास ही मैं भी बचपन की यादों में गोता लगाने लगा, कितना सुंदर होता है न बचपन. न कुछ समझ होती है न ही कोई चिन्ता. फिर एक आवाज़ से मेरी तन्द्रा भंग हुई, देखा तो सामने एक औरत हाथ जोड़े खड़ी थी. चेहरे के भाव इतने करुणामयी थे कि उनके बिना बताये ही उसके चेहरे ने सबकुछ कह दिया. मेरे नाम पूछने पर उसने अपना नाम विमला देवी बताया. मैंने उसे एकमुश्त समझौता (OTS) के नियम समझाने के बाद खाता बन्द करने को कहा. उसने कहा मैं इतनी रकम कहां से जमा करुंगी. घर में खाने के लाले पड़े हैं. मैंने परिस्थिति को देखेते हुए 1000/- जमा

करके खाता बन्द करने को कहा. उसने अगले महीने के आखिर तक जमा करने का वादा किया. फिर मैं और बीसी दूसरे ऋणी के पास गए. वहां जो मैंने देखा उससे हतप्रभ हो गया. मेरे रोंगटे खड़े हो गए. एक महिला जिसकी आयु 40-45 के बीच रही होगी, परन्तु देखने में 60-65 की लग रही थी. नीम के पेड़ तले खटिया पर लेटी हुई थी, बदन पर नाम मात्र के कपडे थे. किसी तरह फटी हुई धोती से अपना बदन छुपाने का असफल प्रयास कर रही थी. बदन जर्जर कंकाल सा बन गया था. ऐसा लग रहा था मानो कई दिनों से खाना ही नहीं मिला. वह खड़े होने अथवा बैठने के लायक भी नहीं थी. मेरे नाम पूछने पर उसने कराहते हुए अपना नाम फूलकली बताया. मुझे लगा कि अगर इसी तरह चलता रहा तो एक-दो हफ्तों में ही यह मर जाएगी. मैंने फ़ौरन वसूली छोड़कर बीसी के साथ वापस शाखा जाने का फैसला किया. रास्ते भर उसी के बारे में सोचता रहा. क्या हमारे देश में लोग इस तरह जीते हैं? क्या मेरा भारत आज भी इतना पिछड़ा है? मन बेहद उदास था, उस दिन शाखा में ढंग से काम भी नहीं कर पाया. शाम में बीसी को अपने केबिन में बुलाया और फूलकली के बारे में पूछने लगा तो राजेन्द्र ने बताया कि फूलकली ने हमारी शाखा से बकरी पालन के लिए लोन लिया था. उसके परिवार के बारे में पूछने पर बताया कि उसके तीन छोटे-छोटे बच्चे हैं. जिसमें से दो लड़कियां तथा एक लड़का है. करीब एक साल पहले एक सड़क दुर्घटना में उसके पति की मौत हो गई. शायद इसी वजह से उसकी आर्थिक हालात दयनीय हो गई. बस इतनी ही जानकारी है मुझे, कहकर चला गया.

मैं बुझे मन से अपने कमरे में लौट आया. सारी रात बैचेनी में करवटें बदलता रहा. नींद आंखों से कोसों दूर थी, अंदर से टूटा महसूस कर रहा था. सुबह-सुबह मैंने सिराथू के एक डॉक्टर,जो कि मेरे घर के पास रहा करते थे, उनसे मिलकर सारी बातें बताई. पहले तो उन्होंने चलने से मना कर दिया, परन्तु मैंने उन्हें किसी तरह मना लिया. हमलोग करीब 7 बजे फूलकली के घर पहुंचे. फूलकली वापस मुझे देखकर घबरा गई. शायद वसूली के डर के कारण उसकी आंखों से आंसू बहने लगे, बस उसकी आंखों में क्षमा भाव नज़र आ रहे थे. मैंने उससे कहा 'घबराइये नहीं माता जी, मैं यहां वसूली के लिए नहीं आया हूं, डॉक्टर साहब को साथ लाया हूं जो आपका इलाज़ करेंगे. वह कातर दृष्टि से मुझे देखने लगी. पुनः उसकी आंखों से अविरल अश्रु की धारा बहने लगी. मैंने कहा सब ठीक हो जायेगा, बस आप रोना बन्द कर दीजिये. डॉक्टर साहब उनका चेक-अप करने लगे. चेक-अप करने के बाद उन्हें 2 सुई लगाई तथा दवा की एक पर्ची बनाकर दे दी. मैंने उस पर्ची को जेब में रख लिया और कहा कि वह क़र्ज़ को लेकर बिल्कुल चिन्ता न करे. जाते-जाते मैंने चावल, दाल, बिस्कुट आदि का थैला उनके पास रख दिया. बच्चे बिस्कुट देखकर ऐसे टूट पड़े मानो कई दिन से भूखे हों. पता नहीं क्यों? मेरी आंखों से आंसू टपक पड़े. डॉक्टर को छोड़ने के बाद मैं सीधे मेडिकल स्टोर पंहुचा और दवाइयां खरीदकर बीसी को देकर कहा कि यह दवा फूलकली को देकर तथा खाने का नियम बताकर आएं. दवा पूरे एक महीने की थी. बीसी के चेहरे पर आश्चर्य के भाव थे.

समय अभाव के कारण कुछ दिनों तक उस गांव न जा सका. अतः बीसी से कुछ खाने-पीने का सामान खरीदकर भेज दिया. वापस आकर बीसी ने बताया कि उनकी तबियत में काफी सुधार आया है. अब वह अपने से चल-फिर लेती हैं, जानकर संतोष हुआ. एक महीना बीते कुछ ही दिन हुए थे कि अचानक मुझे याद आया कि उनकी दवा तो समाप्त हो गयी होगी. उसी दिन 15 दिन की दवा और कुछ खाने का सामान लिए मैं अकेले उसके गांव पहुंचा. वह मुझे देखकर उठ खड़ी हुई और मेरे पैर पकड़ने लगी. मैंने अपने आप को पीछे हटाते हुए कहा ये क्या कर रही हैं. उनके चेहरे पर कृतज्ञता के भाव साफ नज़र आ रहे थे जिसको पढ़ना बेहद आसान था. मैं 15 दिन की दवाई तथा सामान देकर मन में ख़ुशी की उमंग लिए वापस आया. समझ में नहीं आ रहा था क्यों बहुत अच्छा लग रहा था.

वक्त बीतता चला गया. आख़िरकार मार्च 2016 समाप्त होने में 2-3 दिन ही शेष बचे थे. मेरा सारा ध्यान लक्ष्य पूरा करने में लग गया. वसूली को छोड़कर बाकी सारे लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया था. वार्षिक लेखाबंदी के चलते अप्रैल के दो सप्ताह यूं ही गुज़र गए. आखिरी सप्ताह में मैं गांव गया फूलकली से मिलने. जाने क्यों उससे मिलने की प्रबल इच्छा हो रही थी. सुबह करीब 8 बजे उनके घर पहुंचा. वह घर पर नहीं थी. उनके बच्चे से पूछने पर पता चला कि वह दूसरे के खेत में गेहूं काटने गई हैं. मैंने बच्चे को बुलाने भेजा, लगभग 15 मिनट बाद वह आई. मैंने उसे बैठने को कहा, फिर इधर-उधर की बातें पूछने लगा. लेकिन उसने कहा कि साहब मैं जानती हूं मैंने बैंक से क़र्ज़ लिया था, जिसे समय से चुका नहीं पाई, लेकिन साहब आप मुझे कुछ वक़्त दें तो मैं सारा क़र्ज़ चुका दूंगी, कहते-कहते उसने फटे हुए आंचल से 50 रूपए का नोट देकर कहा 'साहब अभी इतना ही है इसे जमा कर दें बाकी रकम 2-3 महीनों में जमा कर दूंगी. मैंने उसकी ईमानदारी और उसकी दयनीय स्थिति को देखते हुए पैसे लेने से इनकार कर दिया. मैंने कहा आप क़र्ज़ की चिन्ता बिल्कुल छोड़ दीजिये, अपने स्वास्थ्य पर ध्यान दीजिये तभी जाने क्यों मेरी जुबान से निकल गया कि आपका लोन खाता बन्द कर दिया है. आप कतई इसके बारे में न सोंचे. आपसे वसूली के लिए कोई नहीं

आएगा. यह सुनते ही उसे यकीन नहीं हुआ. उसने कहा कि मैंने तो पैसा जमा नहीं किया. मैंने समझाया कि कुछ रूपए मैंने जमा किये तथा शेष रकम बैंक ने माफ़ कर दिया. वह मेरे पैरों पर गिर पड़ीं, उनके आंसू रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे. वह भरे गले से सिर्फ इतना कह पाईं कि जिस तरह भगवान बनकर आप इस बेसहारा, असहाय गरीब पर जो उपकार किया है उसका भगवान आपको जरुर फल देगा. परन्तु वास्तविकता कुछ और ही थी, उनके लोन खाते में अभी भी लगभग 8700 रूपये बाकी थे जिसे मैंने बन्द नहीं किया था. मैं वहां से सीधा बैंक पंहुचा तब तक 11 बज चुके थे. सबसे पहले मैंने उनके खाते में 1000/- रूपये जमा किया तथा शेष रकम बट्टे खाते को नामे करते हुए खाते को बन्द कर दिया. खाता बन्द करने के बाद एक असीम आनंद की अनुभूति हो रही थी. मन के अन्दर एक सुकून महसूस कर पा रहा था, ऐसा लग रहा था कि आज मैंने कोई नेक काम किया है. ऐसे अनुभव को सिर्फ महसूस किया जा सकता है. ज़िन्दगी के भाग दौड़ में वक्त बीतता चला गया. यह घटना लगभग मेरे मानस पटल से धूमिल होने लगा था. फिर एक दिन अचानक वही औरत बैंक में मेरे सामने आई. उनकी ममतामयी आंखें बिना कहे सब कुछ कह गई. उनके हाथ में एक बड़ा सा तरबूज था. संकुचाते हुए उन्होंने उस तरबूज को मेरी तरफ बढ़ाई, न चाहते हुए भी मैं उस तरबूज को लेने के लिए विवश हो गया. तरबूज लेने के बाद मैंने उनसे हाल-चाल पूछा. वह बोली कि तबीयत अब बिल्कुल ठीक हो गयी है, खेतों में मजदूरी भी करने जाती हूं. यह सब आपके उपकार हैं. आपके कारण मेरी जान बच गई. भगवान आपका भला करे. मैं सोचने लगा कि मैं कौन होता हूँ किसी की जान बचाने वाला? मैं तो बस एक माध्यम था. मैं उस तरबूज को संभालकर घर ले आया. जितने दिन हो सकते थे, उसे फ्रिज में रखा. वह मेरे लिए सिर्फ एक तरबूज ही नहीं था, वह मेरे लिए एक प्रेरणा थी. हर दिन नेक काम करने के लिए मन ख़ुशी, उमंग, आत्मविश्वास से भर उठता था.

आज भी जब कहीं भी तरबूज देखता हूं तो अनायास ही फूलकली की घटनाएं आंखों के सामने तैरने लगती, ऐसा लगता मानो कल की ही बात हो.

* * *

## ''हिंदी का भविष्य और भविष्य की हिंदी'' विषय पर भाषायी चौपाल

बैंक में नवोन्मेषी एवं सृजनात्मक कार्यों की शृंखला के तहत हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं पर चर्चा-परिचर्चा एवं अपने बैंक के स्टाफ सदस्यों में भाषायी रुचि बढ़ाने हेतु नियमित अंतराल पर डिजिटल माध्यम से 'भाषायी चौपाल' का आयोजन किया जा रहा है. इस शृंखला के तहत चतुर्थ आयोजन दिनांक 10 जनवरी, 2022 को **''हिंदी का भविष्य और भविष्य की हिंदी''** विषय पर किया गया. इस भाषायी चौपाल में सुप्रसिद्ध आलोचक, साहित्यकार, भाषाविद् एवं पूर्व विभागाध्यक्ष (हिंदी विभाग), कोलकाता विश्वविद्यालय **डॉ. अमरनाथ** को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया.

## 'भाषा-विमर्श' कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 22 मार्च, 2022 को स्टाफ सदस्यों के लिए 'भाषा-विमर्श' नामक राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला के अंत में सभी प्रतिभागियों के लिए ऑनलाइन हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री अजयकुमार खोसला द्वारा किया गया.

# वृन्दावन की अविस्मरणीय यात्रा

**सर्वेश कुमार**
व्यवसाय सहायक
क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा

भगवान श्रीकृष्ण की नगरी वृन्दावन के दर्शन करने की योजना हमारे परिवार में काफी समय से चल रही थी. हमने अनेक बार योजना बनाई पर हर बार कुछ न कुछ व्यवधान आने से हमारी योजना बन नहीं पा रही थी. आखिरकार वह समय आ ही गया जब वर्ष 2021 में एकादशी के दिन वृन्दावन जाने का हमारा कार्यक्रम बना.

आगरा से वृन्दावन सड़क मार्ग से लगभग एक घंटे का रास्ता है. हम सभी परिवारजन सुबह-सुबह 5.30 पर वृन्दावन के लिए रवाना हो गये. इतनी जल्दी जाने की एक वजह यह भी थी कि वृन्दावन में ज्यादातर मंदिर दोपहर में 12.00 बजे तक बंद हो जाते हैं. सुबह लगभग 7.00 बजे हम लोग वृन्दावन पहुंच चुके थे. परिक्रमा मार्ग पर पार्किंग में गाड़ी खड़ी करने के पश्चात् हम सभी लोग पैदल ही मंजिल की ओर निकल पड़े. परिक्रमा के साथ-साथ रास्ते में पड़ने वाले मंदिरों में दर्शन करते हुए हम आगे बढ़ने लगे.

वृन्दावन भगवान श्रीकृष्ण की बाल-सुलभ क्रीड़ाओं के लिए जाना जाता है. वृन्दावन के घर-घर में राधा-कृष्ण की मूर्तियां अंकित रहती हैं. कहते हैं कि यहाँ के हर कण में राधा-कृष्ण बसते हैं. यह धरती भगवान कृष्ण की लीलाओं के लिए जानी जाती है. जन्माष्टमी के समय यहां के मंदिरों की अलौकिक सजावट और श्रीकृष्ण की लीलाओं को दिखाती झांकियों को देखकर मन भक्ति रस में डूब जाता है.

वैसे तो वृन्दावन को पर्यटन और धार्मिक शहर दोनों रुपों में जाना जाता है लेकिन यहां आने वाले सैलानियों में श्रद्धालुओं की संख्या ज्यादा रहती है. अधिकांश लोग धार्मिक भावना से यहां आते हैं. वृन्दावन मंदिरों का शहर है..... भक्ति भाव से सराबोर ..... तो चलिए करते हैं वृन्दावन की सैर.

## बांके बिहारी मंदिर, वृंदावन

बांके बिहारी मंदिर वृंदावन के पर्यटन स्थलों में सबसे अधिक लोकप्रिय मंदिर है. राजस्थानी शैली में बने इस मंदिर में श्री बांके बिहारीजी की प्रतिमा में राधा-कृष्ण की संयुक्त छवि के अलौकिक दर्शन होते हैं. श्री बांके बिहारी जी के आकर्षण और सुंदरता के कारण ही इस मंदिर में राधाकृष्ण की छवि निरंतर बदलती रहती है. छवि को मनमोहक बनाने के लिए थोड़ी-थोड़ी देर में परदे खींचे जाते हैं. ऐसी मान्यता है कि यदि कोई भक्त सच्चे हृदय से उनसे नज़रें मिला लेते हैं तो भगवान उसके साथ ही चले जाते हैं. भक्तगण दर्शन करते समय भगवान श्रीकृष्ण की इस छवि को अपने अंतरमन में उतार लेते हैं और जब भी उन्हें भगवान के दर्शन करने होते हैं तो आँखे बंद करते ही श्रीकृष्ण के दर्शन हो जाते हैं .

### राधावल्लभ मंदिर, वृंदावन

वृन्दावन के प्रसिद्ध मंदिरों में एक राधावल्लभ मंदिर में राधा और कृष्ण के दुर्लभ दर्शन होते हैं. यहां राधा में कृष्ण और कृष्ण में राधा समाये हुए हैं. उनकी छवि के आधे हिस्से में राधा और आधे में श्रीकृष्ण दिखाई देते हैं. ऐसी मान्यता है कि यदि आप निष्कपट होकर सच्चे मन के साथ श्री राधावल्लभ मंदिर में प्रवेश करते हैं तो भगवान आप पर प्रसन्न होते हैं और उनके दुर्लभ दर्शन आपके लिये सुलभ हो जाते हैं.

### प्रेम मंदिर, वृंदावन

वृंदावन के आकर्षक स्थलों में सबसे भव्य प्रेम मंदिर 54 एकड़ में बना है, जो 125 फुट ऊंचा, 122 फुट लंबा और 115 फुट चौड़ा है. इस अद्भुत मंदिर को हरियाली भरे बगीचों, फव्वारों से सजाया गया है. इसके अलावा इसमें श्रीगोवर्धन धारण लीला, कालियानाग दमन लीला, झूलन लीलाओं एवं राधा-कृष्ण की मनोहर झांकियां भी देखने को मिलती हैं. यहां संगमरमर की पट्टियों पर श्रीराधा गोविंद के सरल दोहे लिखे गए हैं जिससे इन्हें भक्त आसानी से पढ़ और समझ सकते हैं.

### निधिवन, वृन्दावन

वृन्दावन के लोकप्रिय स्थलों में निधिवन एक रहस्यमयी धार्मिक स्थान के रुप में जाना जाता है. रंग महल में चंदन के पलंग को शाम सात बजे के पहले ही पूरी तरह सजा दिया जाता है. पलंग के पास राधाजी के शृंगार का सामान, एक लोटा पानी और दातुन संग मीठा पान रख दिया जाता है. सुबह होने पर पाँच बजे जब रंग महल का दरवाजा खोला जाता है, तो लोटे का पानी खाली होता है, दातुन कुची हुई नजर आती है और पान का कुछ हिस्सा खाया हुआ मिलता है.

### इस्कॉन मंदिर, वृंदावन

वृन्दावन की घूमने लायक जगहों में सन 1975 में बना इस्कॉन मंदिर महत्वपूर्ण स्थान रखता है. इस मंदिर को श्रीकृष्ण बलराम मंदिर के नाम से भी जाना जाता है. लगभग 5000 वर्ष पहले भगवान कृष्ण और बलराम जिस स्थान पर दूसरे बच्चों के साथ खेला करते थे, ठीक उसी जगह पर इस मंदिर का निर्माण किया गया है. इस मंदिर को कई प्रकार की सुंदर चित्रकारी से सजाया गया है. मंदिर की दीवारों पर खूबसूरत नक्काशी और पेंटिंग की गई है. इन पेंटिंग में भगवान कृष्ण की शिक्षा का वर्णन किया गया है. इस मंदिर में 'हरे राम, हरे कृष्ण' का भजन गाते और नृत्य करते हुए कई विदेशी लोग दिखते हैं, इसलिए इसे अंग्रेजों का मंदिर भी कहते हैं.

### पागल बाबा मंदिर, वृन्दावन

इस मंदिर की कथा के अनुसार एक बार बांके बिहारी खुद अपने भक्त के लिए गवाही देने के लिए कोर्ट चले आए थे. कहते हैं कि बांके बिहारी के गरीब भक्त ने एक महाजन से कुछ रुपए उधार लिए और हर महीने उसे थोड़ा-थोड़ा करके चुकता करता गया. अंतिम किश्त जमा होने से पहले महाजन ने उस गरीब भक्त को अदालती नोटिस भेज दिया. अदालत में जज ने पूछा कोई गवाह है, जिसके सामने तुम महाजन को पैसा देते थे. तब ब्राह्मण ने गवाह के तौर पर बांके बिहारी वल्द वासुदेव, बांके बिहारी मंदिर, वृंदावन लिखवा दिया.

गवाही के दिन भगवान कृष्ण एक बूढ़े व्यक्ति का रूप धारण कर आये और यह बताया कि कब-कब रकम वापस की गई थी. जब जज ने सेठ का बहीखाता देखा तो गवाही सच निकली. रकम दर्ज थी और नाम फर्जी डाला गया था. जब जज को पता चला कि स्वयं बांके बिहारी गवाही देने आये थे तो वह जज अपना घर-बार आदि छोड़कर भगवान को ढूंढने के लिए निकल गया और संत बन गये. जब वह कई साल बाद वृंदावन लौट कर आए, तो लोग उन्हें पागल बाबा के नाम से जानने लगे. इस मंदिर का निर्माण उन्हीं 'पागल बाबा' ने करवाया था और यह मंदिर आधुनिक वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण भी माना जाता है.

### गोविन्द देव मन्दिर, वृन्दावन

वृन्दावन के प्राचीन मंदिरों में गोविन्द देव मन्दिर एक प्रमुख स्थान रखता है. 2100 वर्ष पहले बने इस मंदिर की बेजोड़ कारीगरी को देखकर लोग दंग रह जाते हैं. कुछ लोगों का तो यह भी मानना है कि इतना सुंदर काम आदमी के वश का नहीं ऐसा काम तो देवता ही कर सकते हैं. इस मंदिर की भव्यता देखकर आप दांतों तले उंगलियां दबा लेंगे. किवदंती है कि एक बार औरंगज़ेब ने आगरा के किले में शाम को टहलते हुए दूर दिखने वाली चमकती रोशनी के बारे जब पूछा तो उसे पता चला कि यह रोशनी की चमक वृन्दावन के वैभवशाली मंदिर के ऊपर जलने वाले घी के दिए की है. तब इस मंदिर की 7 मंजिलें हुआ करती थीं. औरंगजेब ने हमला करके तीन मंजिल तुड़वा दीं लेकिन इसकी भव्यता में आज भी कोई कमी नहीं आई है.

### रंगनाथ मंदिर, वृंदावन (श्री रंगजी मंदिर)

श्री रंगजी मंदिर वृंदावन का सबसे बड़ा मंदिर है. इस मंदिर में भगवान विष्णु शेषनाग की शैय्या पर विश्राम करते हुए दर्शन देते हैं. सन् 1851 में बने इस मंदिर का निर्माण दक्षिण भारतीय शैली में हुआ है. इस मंदिर के अंदर कई स्तंभ हैं और उन स्तंभों पर बहुत ही सुन्दर कलाकृतियां हैं. इस मंदिर में भगवान विष्णु के अलावा भगवान नृसिंह, देवी सीता, भगवान राम और लक्ष्मण, भगवान

वेणुगोपाल और भगवान रामानुजाचार्य के दर्शन भी होते हैं. मंदिर के अंदर 50 फीट ऊंचा सोने का स्तंभ बना हुआ है. रंगजी मंदिर का मुख्य आकर्षण यहां का कांच महल है. इसमें रथयात्रा के दौरान प्रयुक्त होने वाले सोने के पॉलिश किये हुए वाहन और प्रतिमाएं रखी हुई हैं.

### श्री गोपेश्वर महादेव मंदिर, वृन्दावन

श्री गोपेश्वर महादेव मंदिर वृन्दावन के सबसे प्राचीन मंदिरों में से एक मंदिर है. ऐसी मान्यता है कि एक दिन भगवान शिव श्रीकृष्ण भगवान और गोपियों की रासलीला देखने के लिए एक गोपी का रूप धारण करके रासलीला में शामिल हो गए थे लेकिन श्रीकृष्ण ने भगवान शिव को पहचान लिया. इस प्रकार वे गोपेश्वर नाम से वृन्दावन में स्थापित हो गये.

### केसी घाट

वृंदावन के खूबसूरत घाटों में केसी घाट का अपना ही अलग महत्त्व है. यह घाट अपने प्राकृतिक सौंदर्य के कारण लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है. इसी पावन घाट पर भगवान कृष्ण ने दुष्ट राक्षस केशी से युद्ध किया था और वृन्दावन वासियों को उसके अत्याचार से बचाया था. इस घाट पर कई प्रकार के छोटे-बड़े मंदिर हैं. ऐसी मान्यता है कि इस घाट पर यमुना में डुबकी लगाने से कई जन्मों के पाप धुल जाते हैं और पुण्य की प्राप्ति होती है.

इन प्रमुख मंदिरों के अलावा श्री मदनमोहन मन्दिर, श्रीराधा दामोदर मंदिर, श्रीराधा रमण मंदिर, शाहजी मंदिर, सेवाकुँज, जयपुर मंदिर, मीरा मंदिर और श्रीराधा रासबिहारी अष्टसखी मंदिर वृन्दावन के मुख्य मंदिर हैं.

### वृन्दावन में खरीदारी

वृन्दावन में हस्तशिल्प के सामान, भगवान कृष्ण के कपड़े और आभूषण, देवी-देवताओं के मंदिर, अष्टधातु से बनी प्रतिमाएं अधिकांश दुकानों में मिलती हैं. यहां आप अपने बच्चों को राधा-कृष्ण रूप में सजाने के लिए उनकी वेशभूषा (ड्रेस) ले सकते हैं. इसके अलावा ज्यादातर पूजा और प्रार्थना से संबंधित वस्तुएं जैसे कि मोती की माला, पीतल की मूर्तियां और पूजा के लिए बर्तन मिलेंगे. इन वस्तुओं से आपका घर और मंदिर अधिक सुंदर बन जायेगा और वृन्दावन की यादें भी साथ रहेंगी.

हम लोगों को मन्दिरों के दर्शन करते हुए लगभग 2.00 बज चुके थे और परिक्रमा भी समाप्त हो चली थी और हम सब भी चलते-चलते थककर चूर हो चुके थे. एकादशी होने की वजह से परिवार में ज्यादातर सदस्यों का व्रत था. इस वजह से सभी ने फलों से काम चलाया.

शाम होते ही वृन्दावन से जाने का समय हो गया लेकिन मन तो कृष्ण में डूबा हुआ था और जाने का नाम ही ले रहा था फिर भी जाना तो था ही. इसलिए रात हो जाने के डर से हमने प्रस्थान करना ही उचित समझा.

जल्द ही दोबारा आने की प्रार्थना करते हुए हम सभी ने भगवान कृष्ण की नगरी से विदा ली और आगरा की ओर रवाना हो लिए.

***

## बैंक के सभी राजभाषा प्रभारियों हेतु अभिप्रेरणा बैठक

**दिनांक 09 फरवरी, 2022 को मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री अजय कुमार खोसला की अध्यक्षता में बैंक के सभी राजभाषा प्रभारियों हेतु अभिप्रेरणा बैठक आयोजित की गई तथा सभी राजभाषा अधिकारियों को वार्षिक राजभाषा कार्ययोजना के लंबित मुद्दों के संबंध में आवश्यक कार्रवाई हेतु मार्गदर्शन/ अनुदेश दिए गए. इस बैठक में प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह तथा सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र भी उपस्थित रहे.**

# नराकास बैठकें

## नराकास, जयपुर

दिनांक 28 जनवरी, 2022 को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की 73वीं छ:माही बैठक का आयोजन किया गया. बैठक में महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष श्री महेन्द्र सिंह महनोत, उप महाप्रबंधक व उपाध्यक्ष श्री आर सी यादव, उप महाप्रबंधक नेटवर्क श्री प्रदीप बाफना, सहायक निदेशक, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार श्री नरेन्द्र कुमार मेहरा तथा प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति), प्रधान कार्यालय, बड़ौदा श्री संजय सिंह ने अपने विचार व्यक्त करते हुए मार्गदर्शन किया. बैठक के अंत में समिति की पत्रिका 'बैंक ज्योति' एवं विशेष प्रकाशन 'जयपुर संदर्भ' सहित समिति के वेबसाइट के क्यूआर कोड का विमोचन कार्यपालकों के द्वारा किया गया.

## वार्षिक राजभाषा समारोह : नराकास जयपुर

दिनांक 29 मार्च, 2022 को बैंक नराकास, जयपुर के वार्षिक राजभाषा समारोह का आयोजन किया गया. कार्यक्रम के दौरान अंतर बैंक राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता – वर्ष 2021 के विजेता कार्यालयों सहित विभिन्न प्रतियोगिताओं के 72 प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया. इसके अतिरिक्त राजस्थानी व मेवाड़ी भाषा के माध्यम से देश-विदेश में 21 से अधिक प्रस्तुति करने वाली व महामहिम राष्ट्रपति महोदय से वर्ष 2021 का नारी शक्ति सम्मान प्राप्तकर्ता भजन गायिका, श्रीमती बेगम खतून, जयपुर को समिति की ओर से चंदबरदाई भाषा सम्मान से अलंकृत किया गया. समारोह में सहायक निदेशक, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, श्री नरेन्द्र मेहरा, महाप्रबंधक व अध्यक्ष श्री महेन्द्र सिंह महनोत, उप अंचल प्रमुख व उपाध्यक्ष श्री आर सी यादव व प्रमुख (राजभाषा व संसदीय समिति) श्री संजय सिंह का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ.

## नराकास, जलंधर

दिनांक 28 जनवरी, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, जलंधर के संयोजन में एम एस टीम के माध्यम से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), जलंधर की 20वीं अर्द्ध-वार्षिक बैठक का आयोजन किया गया. बैठक में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग से सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, चण्डीगढ़ अंचल प्रमुख एवं महाप्रबन्धक श्री विमल कुमार नेगी, नराकास (बैंक) के अध्यक्ष श्री राजेय भास्कर एवं सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख व राजभाषा अधिकारी शामिल हुए. बैठक में अर्द्ध-वार्षिक पत्रिका 'नव प्रयास' का विमोचन भी किया गया.

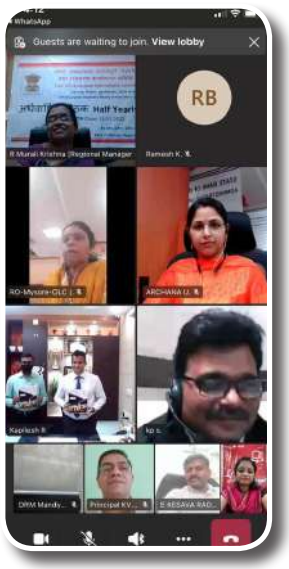


## नराकास, मंड्या

दिनांक 13 जनवरी, 2022 को क्षेत्रीय प्रमुख श्री कपिलेश. के. आर. की अध्यक्षता में नराकास, मंड्या की अर्द्ध-वार्षिक बैठक का आयोजन किया गया. बैठक में उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, बेंगलुरु श्री के पी शर्मा एवं प्रधान कार्यालय से सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र उपस्थित रहे. इस अवसर पर समिति की पत्रिका बृंदावन का भी विमोचन किया गया.

## नराकास, गरियाबंद

दिनांक 25 जनवरी, 2022 को नराकास, गरियाबंद की 7 वीं बैठक का आयोजन किया गया. इस बैठक की अध्यक्षता श्री राजीव रंजन, अग्रणी जिला प्रबंधक ने की.

# महिला सशक्तिकरण

**प्रियंका कुमारी**
अग्रिम विभाग
क्षेत्रीय कार्यालय, नवी मुंबई

''नारी'' यानी ''शक्ति''. नारी को सृजन की शक्ति माना जाता है अर्थात् नारी से ही मानव जाति का प्रादुर्भाव हुआ है. देवताओं के समय से ही नारी को प्रधानता दी गई है. पर समाज के बदलते नियमों के साथ आज सम्पूर्ण विश्व पुरुष प्रधान बन कर रह गया है. आज इस युग में हमें उसी शक्ति को सशक्त करने की जरूरत पड़ रही है. इस सृजन की शक्ति को विकसित-परिष्कृत कर उसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक न्याय, विचार, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, अवसर की समानता का सु-अवसर प्रदान करना ही नारी सशक्तिकरण है. महिला सिर्फ एक मानव रूप नहीं है अपितु वह इस समस्त संसार को आगे ले जाने वाली निर्माणकर्ता भी है.

'महिला सशक्तिकरण' तब संभव है जब महिलाएं परिवार और समाज के सभी बंधनों से मुक्त होकर अपने निर्णयों की निर्माता खुद बनें. आज के आधुनिक समय में महिला सशक्तिकरण एक विशेष चर्चा का विषय है. हमारे ग्रंथों में भी नारी के महत्त्व को मानते हुए बताया गया है कि ***''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:''*** अर्थात जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं. पूजा से आशय यह नहीं कि हम जैसे देवताओं की पूजा करते हैं वैसे करें. नारी की पूजा का मतलब है कि हम उन्हें प्रधानता दें. सरल शब्दों में यह है कि हमें उनकी भी राय लेनी चाहिए. इससे वह परिवार में सम्मान की पात्र बनती हैं और उनके अंदर आत्मविश्वास बढ़ता है. साथ ही साथ आज महिलाओं की आर्थिक सशक्तिकरण की भी आवश्यकता है. इसका अर्थ उनके आर्थिक फैसलों, आय, संपत्ति से है. इन सुविधाओं को पाकर ही वह अपने सामाजिक स्तर को ऊंचा कर सकती है. मुंशी प्रेमचंद का एक कथन मुझे याद आ रहा है कि 'स्त्री पुरुष से उतना ही श्रेष्ठ है जितना प्रकाश अंधकार से'.

राष्ट्र के विकास में महिलाओं के महत्त्व और अधिकार के बारे में परिवार एवं समाज में जागरुकता लाने के लिये मातृ दिवस, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस आदि कई सारे दिवस मनाए जा रहे हैं. पर ऐसा नहीं लगता कि हम केवल उस दिन ही उन्हें बहुत ज्यादा महत्व देते हैं. असल मायने में महिलायें तब सशक्त होंगी जब हमें यह दिन उनकी महत्ता को बताने के लिए न मनाना पड़े. क्योंकि जो हमारे और हमारे समाज के अस्तित्व का कारण है उसके लिए केवल एक दिन क्यों? हर दिन उनका है. भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों का हनन करने वाली उन सभी सोच को जड़ से उखाड़ फेंकने की जरूरत है, जैसे - दहेज प्रथा, अशिक्षा, यौन हिंसा, असमानता, भ्रूण हत्या, महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, वैश्यावृत्ति, मानव तस्करी, इत्यादि. एक ओर अगर हम निरपेक्ष भाव से कहें तो सृष्टि संचालन हेतु अधिकतर दायित्वों का निर्वहन महिलायें ही करती हैं. घर से लेकर बाहर तक का सारा काम संभालती हैं. बच्चों का पालन, उन्हें शिक्षित करना, तौर तरीके सिखाना, समाज में अपने परिवार की पहचान बनाना, अपने परिवार के विकास हेतु निरंतर कार्य करना. कामकाजी महिलायें भी घर की जिम्मेदारी के साथ-साथ कार्यालय का कार्य भी संभालती हैं. वो कहते हैं न एक नारी शिक्षित होती है तो पूरा घर परिवार शिक्षित होता है और एक शिक्षित समाज का जन्म होता है. तो हमें उन्हें इतनी इज्जत तो जरूर देनी चाहिए जितनी की वो हकदार हैं.

अपने देश में उच्च स्तर की लैंगिक असमानता है. जहां महिलाएं अपने परिवार के साथ ही बाहरी समाज के भी बुरे बर्ताव से पीड़ित है. भारत में अनपढ़ों की संख्या में महिलाएं सबसे अव्वल हैं.

नारी सशक्तिकरण का असली अर्थ तब समझ में आयेगा जब भारत में उन्हें अच्छी शिक्षा दी जाएगी और उन्हें इस काबिल बनाया जाएगा कि वो हर क्षेत्र में स्वतंत्र होकर फैसले कर सकें. भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता के बहुत से

कारण सामने आते हैं. प्राचीन काल की अपेक्षा मध्य काल में भारतीय महिलाओं के सम्मान स्तर में काफी कमी आयी है.

आधुनिक युग में भारतीय महिलाएं महत्वपूर्ण राजनैतिक तथा प्रशासनिक पदों पर पदस्थ हैं, फिर भी सामान्य ग्रामीण महिलाएं आज भी अपने घरों में रहने के लिए बाध्य हैं और उन्हें सामान्य स्वास्थ्य सुविधा और शिक्षा जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं हैं. व्यापक रूप से देखें तो शिक्षा के मामले में भी भारत में महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा पीछे हैं. भारत के शहरी क्षेत्रों की महिलाएं ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं के अपेक्षा अधिक रोजगारशील है. भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता का एक और मुख्य कारण वेतन में असमानता भी है. हमने कई जगहों पर ऐसा देखा होगा कि समान अनुभव और योग्यता के बावजूद भी भारत में महिलाओं को पुरुषों के अपेक्षा कम वेतन दिया जाता है. जबकि महिलायें पुरुषों की अपेक्षा अधिक जिम्मेवार होती हैं एवं मेहनत और लगन से कार्य करती हैं. हमारा देश काफी तेजी और उत्साह के साथ विकासशील से विकसित होने की तरफ बढ़ रहा है, लेकिन यह सपना तभी साकार होगा जब हम लैंगिग असमानता को दूर कर पाएंगे और महिलाओं के लिए भी पुरुषों की तरह समान शिक्षा सुनिश्चित कर सकेंगे. हम सभी जानते हैं कि भारत में लगभग 50 प्रतिशत आबादी केवल महिलाओं की है. मतलब, पूरे देश के विकास के लिए इस आबादी की भी जरुरत है जो कि अभी भी सशक्त नहीं है और कई सामाजिक प्रतिबंधों से बंधी हुई है. ऐसी स्थिति में हम नहीं कह सकते कि भविष्य में बिना हमारी महिलाओं को मजबूत किए हमारा देश विकसित हो पायेगा. उदाहरण स्वरूप हम ले सकते हैं कि जिस घर में महिलायें शिक्षित एवं अपने पैरों पर खड़ी होती हैं उस परिवार की हमारे समाज में एक अलग ही पहचान होती है. भारतीय समाज में महिलाओं को सम्मान देने के लिये माँ, बहन, पुत्री, पत्नी के रुप में महिला को पूजने की परंपरा है. यह भी सत्य है कि परिवार में पुरुष सदस्यों द्वारा काम करने की आजादी और शिक्षा का अधिकार उनके हाथ में है. हमारे ही समाज में सती प्रथा प्रचलित थी. श्री राजा राम मोहन रॉय ने इस प्रथा के अंत की मांग की और अंतत: यह प्रथा समाप्त हुई. पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं के खिलाफ होने वाले लैंगिक असमानता और बुरी प्रथाओं को हटाने के लिये सरकार द्वारा कई सारे संवैधानिक और कानूनी अधिकार बनाए गए और लागू किए गए हैं. हालांकि ऐसे बड़े विषय को सुलझाने के लिये महिलाओं सहित पूरे समाज को लगातार सहयोग करने की जरुरत है. आधुनिक समाज महिलाओं के अधिकार को लेकर ज्यादा जागरुक है. आज महिलाएं ज्यादा खुले दिमाग की हैं और सभी आयामों में अपने अधिकारों को पाने के लिये सामाजिक बंधनों को तोड़ रही हैं. हालांकि असामाजिक तत्व इसे अपराध के अवसर के रूप में इस्तेमाल करते हैं और फिर कहते हैं कि क्या जरूरत है स्त्रियों को देर तक बाहर रहने की और फिर समाज भी महिलाओं को ही दोषी ठहराता है और पाबंदियाँ बढ़ती है. जबकि ऐसे तत्वों के ऊपर पाबंदियाँ बढ़नी चाहिए.

भारतीय समाज एक ऐसा समाज है, जिसमें कई तरह की रिवाज, मान्यताएं और परम्पराएं शामिल हैं. इनमें से कुछ पुरानी मान्यताएँ और परम्पराएं ऐसी भी हैं जो भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए बाधा हैं. पुरानी और रुढ़िवादी विचारधाराओं के कारण भारत के कई सारे क्षेत्रों में महिलाओं के घर छोड़ने पर पाबंदी होती है. इस तरह के क्षेत्रों में महिलाओं को शिक्षा या फिर रोजगार के लिए घर से बाहर जाने के लिए आजादी नहीं होती है. पुरानी और रुढ़िवादी विचारधाराओं के वातावरण में रहने के कारण महिलाएं खुद को पुरुषों से कम समझने लगती हैं और अपने वर्तमान सामाजिक और आर्थिक दशा को बदलने में नाकाम साबित होती हैं क्योंकि उनमें आत्मविश्वास की कमी आ जाती है. कार्यक्षेत्र में होने वाला शोषण भी महिला सशक्तिकरण में एक बड़ी बाधा है. निजी क्षेत्र जैसे कि सेवा उद्योग, साफ्टवेयर उद्योग, शैक्षिक संस्थाएं और अस्पताल इस समस्या से सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं. समाज में पुरुष प्रधानता के वर्चस्व के कारण महिलाओं के लिए समस्याएं उत्पन्न होती हैं. पिछले कुछ समय में कार्यक्षेत्रों में महिलाओं के साथ होने वाले उत्पीड़नों में काफी तेजी से वृद्धि हुई है. समस्याएं केवल निजी संस्थाओं तक हीं नहीं है. हालांकि सभी संस्थाओं में एक विशेष प्रशिक्षण मॉडयूल सभी कर्मचारियों को करना अनिवार्य है जिसमें विस्तार से यह बताया गया है कि हमारा व्यवहार कार्यालय में कैसा होना चाहिए पर फिर भी ऐसी घटनाएं आमतौर पर देखने को मिलती ही हैं.

पिछले कुछ दशकों में सरकार द्वारा लिए गए प्रभावी फैसलों द्वारा भारत में बाल विवाह जैसी कुरीति को काफी हद तक कम कर दिया गया है लेकिन 2018 में यूनिसेफ के एक रिपोर्ट द्वारा पता चलता है. कि भारत में अब भी हर वर्ष लगभग 15 लाख लड़कियों की शादी 18 वर्ष से पहले ही कर दी जाती है. जल्द

शादी हो जाने के कारण महिलाओं का विकास रुक जाता है और वह शारीरिक तथा मानसिक रुप से वयस्क नहीं हो पाती हैं. ऐसी महिलाएं भी हैं जो शादी के बाद भी अपने सपनों को साकार कर पाती हैं. कामकाजी महिलाएं भी देर रात में अपनी सुरक्षा को देखते हुए सार्वजनिक परिवहन का उपयोग नही करती हैं. सही मायनों में महिला सशक्तिकरण की प्राप्ति तभी की जा सकती है जब महिलाओं की सुरक्षा को सुनिश्चित किया जा सके और पुरुषों की तरह वह भी बिना भय के स्वच्छंद रुप से कहीं भी आ जा सकें.

कन्या भ्रूणहत्या या फिर लिंग के आधार पर गर्भपात, भारत में महिला सशक्तिकरण के रास्ते में आने वाली सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है. कन्या भ्रूणहत्या का अर्थ लिंग के आधार पर होने वाली भ्रूण हत्या से है, जिसके अंतर्गत कन्या भ्रूण का पता चलने पर बिना माँ के सहमति के ही गर्भपात करा दिया जाता है. कई बार तो माँ भी ये जान रही होती है कि उनके गर्भ में एक कन्या है, भ्रूण हत्या के लिए तैयार हो जाती हैं. इसका कारण भी यही है कि वो समाज में पुरुषों को ज्यादा सम्मानित देखती हैं और उन्हें भी पता है कि अगर मैं एक बालक को जन्म दूंगी तो मेरी इज्जत परिवार एवं समाज में ज्यादा बढ़ जाएगी. कन्या भ्रूण हत्या के कारण ही हरियाणा और जम्मू कश्मीर जैसे प्रदेशों में स्त्री और पुरुष लिंगानुपात में काफी अंतर आ गया है. हमारे महिला सशक्तिकरण के यह दावे तब तक नही पूरे होंगे, जब तक हम कन्या भ्रूण हत्या की समस्या को मिटा न लें. हम बाकी जगहों पर तो तब समानाधिकार की बात करें जब हम शिशु को जन्म लेने में समानाधिकार दे सकें.

भारत सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए कई सारी योजनाएँ चलाई जाती हैं. इनमें से कई सारी योजनाएं रोजगार, कृषि और स्वास्थ्य जैसी चीजों से संबंधित हैं. इन योजनाओं का गठन भारतीय महिलाओं के परिस्थिति को देखते हुए किया गया है ताकि समाज में उनकी भागीदारी को बढ़ाया जा सके. इनमें से कुछ मुख्य योजनाएँ मनरेगा, सर्व शिक्षा अभियान, जननी सुरक्षा योजना, आदि हैं.

भारत सरकार द्वारा भारतीय महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए योजनाएँ इस आशा के साथ चलाई जा रही हैं कि एक दिन भारतीय समाज में महिलाओं को पुरुषों की तरह प्रत्येक अवसर पर बराबर का अधिकार प्राप्त हो.

### बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना –

यह योजना कन्या भ्रूण हत्या और कन्या शिक्षा को ध्यान में रखकर बनायी गयी है. इसके अंतर्गत लड़कियों की बेहतरी के लिए योजना बनाकर और उन्हें आर्थिक सहायता देकर उनके परिवार में फैली भ्रांति 'लड़की एक बोझ है' क़ी सोच को बदलने का प्रयास किया जा रहा है.

### महिला हेल्पलाइन योजना –

इस योजना के अंतर्गत महिलाओं को 24 घंटे इमरजेंसी सहायता सेवा प्रदान की जाती है. महिलाएं अपने विरुद्ध होने वाली किसी तरह की भी हिंसा या अपराध की शिकायत इस योजना के तहत निर्धारित नंबर पर कर सकती हैं. इस योजना के तहत पूरे देश भर में 181 नंबर को डायल करके महिलाएँ अपनी शिकायतें दर्ज करा सकती हैं.

### सपोर्ट टू ट्रेनिंग एंड एम्प्लॉयमेंट प्रोग्राम फॉर वूमेन (स्टेप) –

स्टेप योजना के अंतर्गत महिलाओं के कौशल को निखारने का कार्य किया जाता है ताकि उन्हें भी रोजगार मिल सके या फिर वह स्वयं का रोजगार शुरु कर सके. इस कार्यक्रम के अंतर्गत कई सारे क्षेत्रों के कार्य जैसेकि कृषि, बागवानी, हथकरघा, सिलाई और मछली-पालन आदि के विषयों में महिलाओं को शिक्षित किया जाता है.

### महिला शक्ति केंद्र –

यह योजना सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने पर केंद्रित है. इसके अंतर्गत छात्रों और पेशेवर व्यक्तियों जैसे सामुदायिक स्वयंसेवक ग्रामीण महिलाओं को उनके अधिकारों और कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं.

### पंचायती राज योजनाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण

2009 में भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल ने पंचायती राज संस्थानों में 50 फीसदी महिला आरक्षण की घोषणा की. सरकार के इस कार्य के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के सामाजिक स्तर को सुधारने का प्रयास किया गया.

कानूनी अधिकार के साथ महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए संसद द्वारा भी कुछ अधिनियम पास किए गए हैं. वे अधिनियम निम्नलिखित हैं –

(i) अनैतिक व्यापार (रोकथाम) अधिनियम 1956

(ii) दहेज निषेध अधिनियम 1961

(iii) समान पारिश्रमिक अधिनियम 1976

(iv) मेडिकल टर्मिनेशन ऑफ प्रेग्नेंसी अधिनियम 1987

(v) लिंग परीक्षण तकनीक अधिनियम 1994

(vi) बाल विवाह प्रतिपेथ्य अधिनियम 2006

(vii) कार्यस्थल पर महिलाओं का उत्पीड़न (रोकथाम निषेध व निवारण) अधिनियम 2013

बदलते समय के साथ आधुनिक युग की नारी पढ़-लिख कर स्वतंत्र है. वह अपने अधिकारों के प्रति सजग है तथा स्वयं अपना निर्णय लेती हैं. अब वह चारदीवारी से बाहर निकलकर देश के लिए विशेष महत्वपूर्ण कार्य करती है. महिलाएं हमारे देश की आबादी का लगभग आधा हिस्सा हैं. इसी वजह से राष्ट्र के विकास के महान काम में महिलाओं की भूमिका और योगदान को पूरी तरह और सही परिप्रेक्ष्य में रखकर ही राष्ट्र निर्माण के लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है.

भारत में भी ऐसी महिलाओं की कमी नहीं है जिन्होंने समाज में बदलाव और महिला सम्मान के लिए अपने अन्दर के डर को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया. अतिया पहली ऐसी मुस्लिम महिला हैं, जिन्होंने तीन तलाक के खिलाफ अपनी आवाज को बुलंद किया. तेजाब पीड़ितों के खिलाफ इंसाफ की लड़ाई लड़ने वाली वर्षा जवलगेकर के भी कदम रोकने की नाकाम कोशिश की गई, लेकिन उन्होंने इंसाफ की लड़ाई लड़ना नहीं छोड़ा. हमारे देश में ऐसे कई उदाहरण हैं जो महिला सशक्तिकरण का पर्याय बन रही हैं.

आज देश में नारी शक्ति को सभी दृष्टि से सशक्त बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं. इसका परिणाम भी देखने को मिल रहा है. आज देश की महिलाएं जागरूक हो चुकी हैं. आज की महिला ने उस सोच को बदल दिया है कि वह घर और परिवार की ही जिम्मदारी को बेहतर निभा सकती है. आज की महिला पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर बड़े से बड़े कार्य क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहीं हैं. फिर चाहे काम मजदूरी का हो या अंतरिक्ष में जाने का. महिलाएं अपनी योग्यता हर क्षेत्र में साबित कर रही हैं.

महिला सशक्तिकरण के बिना देश व समाज में नारी को वह स्थान नहीं मिल सकता, जिसकी वह हमेशा से हकदार रही है. महिला सशक्तिकरण के बिना वह सदियों पुरानी परम्पराओं और चुनौतियों से लोहा नहीं ले सकती. बन्धनों से मुक्त होकर अपने निर्णय खुद नहीं ले सकती. नारी सशक्तिकरण के अभाव में वह इस योग्य नहीं बन सकती कि स्वयं अपनी निजी स्वतंत्रता और अपने फैसलों पर अधिकार पा सके.

महिला अधिकारों और समानता का अवसर पाने में महिला सशक्तिकरण ही अहम् भूमिका निभा सकती है. क्योंकि स्त्री सशक्तिकरण महिलाओं को सिर्फ गुजारे-भत्ते के लिए ही तैयार नहीं करती, बल्कि उन्हें अपने अंदर नारी चेतना को जगाने और सामाजिक अत्याचारों से मुक्ति पाने की स्थिति भी तैयारी करती है.

जिस तरह से भारत आज दुनिया के सबसे तेज आर्थिक तरक्की प्राप्त करने वाले देशों में शुमार हुआ है, उसे देखते हुए निकट भविष्य में भारत को महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है. भारतीय समाज में सच में महिला सशक्तिकरण लाने के लिए महिलाओं के विरुद्ध बुरी प्रथाओं के मुख्य कारणों को समझना और उन्हें हटाना होगा. यह बहुत आवश्यक है कि हम महिलाओं के विरुद्ध अपनी पुरानी सोच को बदलें और संवैधानिक तथा कानूनी प्रावधानों में भी बदलाव लाएं.

भले ही आज के समाज में कई भारतीय महिलाएं राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, प्रशासनिक अधिकारी, डॉक्टर, वकील आदि बन चुकी हों, लेकिन फिर भी काफी सारी महिलाओं को आज भी सहयोग और सहायता की आवश्यकता है. उन्हें शिक्षा, आजादी से कार्य करने, सुरक्षित यात्रा, सुरक्षित कार्य और सामाजिक आजादी में अभी भी और सहयोग की आवश्यकता है. महिला सशक्तिकरण का यह कार्य काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत की सामाजिक-आर्थिक प्रगति महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक प्रगति पर ही निर्भर करती है.

महिला सशक्तिकरण महिलाओं को वह मजबूती प्रदान करता है, जो उन्हें उनके हक के लिए लड़ने में मदद करता है. हम सभी को महिलाओं का सम्मान करना चाहिए, उन्हें आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करना चाहिए. इक्कीसवीं सदी नारी जीवन में सुखद सम्भावनाओं की सदी है. महिलाएं अब हर क्षेत्र में आगे आने लगी हैं. आज की नारी अब जागृत और सक्रिय हो चुकी है. ***किसी ने बहुत अच्छी बात कही है ''नारी जब अपनी बेड़ियों एवं कड़ियों को तोड़ने लगेगी, तो विश्व की कोई शक्ति उसे नहीं रोक पाएगी.''*** नारी देवी दुर्गा का अवतार है. यह बात हमें स्मरण रहना चाहिए. उन्हें अपना ताज खुद बनाने की हैसियत रखनी चाहिए ताकि किसी का मोहताज न बनना पड़े. वर्तमान में नारी ने रुढ़िवादी बेड़ियों को तोड़ना शुरू कर दिया है. यह एक सुखद संकेत है. समाज जब नारी को शक्ति समझकर पूजता है, तब वह उन्नति करता है. किसी भी राष्ट्र का विकास तब तक नहीं हो सकता है, जब तक उस देश की महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर नहीं चलती हैं. आज के परिप्रेक्ष्य में देखे तो सोच बदल रही है, देश बदल रहा है.

* * *

# भारत की आज़ादी के आंदोलन में हिंदी की भूमिका

**गौतम कुमार सागर**
मुख्य प्रबंधक एवं संकाय
बड़ौदा अकादमी, बड़ौदा

''हम भारत के लोग....'' संविधान के प्रस्तावना में हिंदी में अंकित इस पुरोवाक तक देश को और हिंदी को पहुंचाने के लिए कितने ही वीर सपूतों ने स्वतंत्रता-यज्ञ में प्राणों की आहुतियां दी हैं. मध्य प्रांत में जहां बिस्मिल और अशफाक़ के हिन्दुस्तानी भाषा के नगमे गूंज रहे थे, तो पंजाब में 'इंकलाब ज़िंदाबाद' की अग्नि प्रज्वलित थी.

महाराष्ट्र में तिलक ''स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'' का उद्घोष कर रहे थे तो चंपारण से लेकर साबरमती तक गांधी के 'करो या मरो' का शंखनाद सुनाई दे रहा था. उधर नेता जी 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा' कहकर देश के युवाओं के रक्त को आलोड़ित कर रहे थे तो चंद्रशेखर आज़ाद अपनी मूंछों पर ताव देकर ठेठ हिन्दी में अंग्रेज़ो को चुनौती दे रहे थे कि ''दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे, आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे''.

1857 की मेरठ क्रांति से 1947 तक के इस नब्बे वर्ष के घोरतम स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी ने आज़ादी के दीवानों के देश प्रेम को मुखर किया. साथ ही करोड़ों जनों को यह भी लगा कि राष्ट्रीय गौरव के बिना, स्वराज के बिना जीवन व्यर्थ है. इसी राष्ट्रीय जागरण की भावना ने हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई को अपने परंपरागत धार्मिक मतभेदों को भुलाकर राष्ट्र नायकों के भाव और भाषा दोनों का अनुकरण कर अटल एकता का परिचय दिया.

## आज़ादी के आंदोलन में हिंदी-अस्मिता

किसी की आज़ादी के आंदोलन या क्रांति की सफल परिणति तब तक संभव नहीं है जब तक लोक मानस या जन चेतना का अभूतपूर्व जागरण न हो; और यह जागरण तब तक संभव नहीं है जब तक कि कोई एक व्यापक भाषा विचारों का संवाहक न बने.

भारतीय आंदोलन में शताब्दियों से दबी-कुचली अस्मिता को स्वर देने का कार्य प्रबल रूप से हिन्दी या यूं कहें कि हिन्दुस्तानी भाषा ने किया.

1924 में बेलगांव के अधिवेशन में जब कुछ वक्ता भारत की स्वतंत्रता और अंग्रेजों से मुक़ाबले की रणनीति पर चर्चा अंग्रेज़ी भाषा में कर रहे थे तब गांधी जी ने क्षुब्ध होकर भरी सभा में

कहा, ''यह कितने दुख की बात है कि हम स्वराज की बात भी अंग्रेजी में करते हैं.'' हिन्दी जिसे उस समय हिन्दुस्तानी भाषा भी कहा जाता था जिसमें कि न तो संस्कृत के क्लिष्ट शब्द थे न ही फ़ारसी/ उर्दू के न समझ में आनेवाले लफ़्ज़. बल्कि दोनों भाषाओं के उन शब्दों का समावेश हुआ जो जनसाधारण की जुबान पर पहले से थे. इसके साथ ही इस हिन्दुस्तानी भाषा में प्रांत -प्रांत के अपने विशेष शब्द शामिल होते गए और हिन्दी भाषा का सागर विस्तृत होता गया. कई अंग्रेजी के शब्द जैसे कोर्ट, रेल, टेलीग्राम, पुलिस आदि भी हिंदी में रच-बस गए.

## आज़ादी की लड़ाई और भारतेन्दु का हिन्दी युग

भारतेन्दु के वृहत हिंदी साहित्यिक योगदान के कारण ही 1857 से 1900 तक के काल को भारतेन्दु युग के नाम से जाना जाता है.

भारतेन्दु के समय में राजकाज और संभ्रांत वर्ग की भाषा फारसी थी. वहीं, अंग्रेजी का वर्चस्व भी बढ़ता जा रहा था. केवल भाषा ही नहीं, साहित्य में उन्होंने नवीन आधुनिक चेतना का समावेश किया और साहित्य को 'जन' से जोड़ा.

1882 में शिक्षा आयोग (हन्टर कमीशन) के समक्ष अपनी गवाही

में हिन्दी को न्यायालयों की भाषा बनाने की महत्ता पर उन्होंने कहा था- ***''सभी सभ्य देशों की अदालतों में उनके नागरिकों की बोली और लिपि का प्रयोग किया जाता है. यही (भारत) ऐसा देश है जहाँ अदालती भाषा न तो शासकों की मातृभाषा है और न प्रजा की. यदि आप दो सार्वजनिक नोटिस, एक उर्दू में तथा एक हिंदी में, लिखकर भेज दें तो आपको आसानी से मालूम हो जाएगा कि प्रत्येक नोटिस को समझने वाले लोगों का अनुपात क्या है.''***

## आज़ादी की लड़ाई, गांधी-युग और हिंदी

गांधीजी की मातृभाषा गुजराती थी. उनके पेशे (वकालत) की भाषा अंग्रेजी थी. लेकिन जब वे पहली बार स्वतंत्रता आंदोलन में कूदे तो संपूर्ण भारत वर्ष के भ्रमण के दौरान उन्हें आभास हुआ कि हिंदी अधिकांश जनता द्वारा बोली जाती है तथा इसकी संप्रेषणीयता अपार है. जब तक नेतागण इस भाषा का संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग नहीं करेंगे आम भारतीय कभी सीधे -सीधे स्वतंत्रता आंदोलन से नहीं जुड़ पाएगा. फलत: गांधीजी ने हिंदी में भी दो अखबार निकाले-नवजीवन और हरिजन सेवक. अपने ज्यादातर पत्रों का जवाब भी गांधीजी हिंदी में ही देना पसंद करते थे.

भारत लौटने के कुछ ही वक्त बाद 1918 में महात्मा गांधी ने इंदौर के हिंदी साहित्य सम्मेलन में कहा था, ''जैसे ब्रिटिश अंग्रेजी में बोलते हैं और सारे कामों में अंग्रेजी का ही प्रयोग करते हैं, वैसे ही मैं सभी से प्रार्थना करता हूं कि हिंदी को राष्ट्रीय भाषा का सम्मान अदा करें. इसे राष्ट्रीय भाषा बनाकर हमें अपने कर्तव्य को निभाना चाहिए.''

वे मानते थे कि भारतीयता, राष्ट्रीयता, स्थानीयता के गौरव के बोध के लिए अपनी भाषा में शिक्षा आवश्यक है. वे एक बारगी तो अंग्रेजी से खिन्न होकर इतना तक कह दिए थे कि ''यदि मेरे पास शासन की एकमुखी शक्ति (तानाशाही) होती, तो आज के आज, अपने छात्र-छात्राओं की परदेशी माध्यम द्वारा होती शिक्षा, रुकवा देता.''

तत्कालीन भारतीय राजनेताओं में गांधीजी पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने दक्षिण भारत में राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने के लिए हिंदी को विधिवत सिखाया जाना आवश्यक समझा और उसके लिए उन्होंने ठोस योजना प्रस्तुत की, जिसके अंतर्गत पुरुषोत्तम दास टंडन, वेंकटेश नारायण तिवारी, शिव प्रसाद गुप्ता सरीखे हिंदी-सेवियों को लेकर दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का गठन किया.

गाँधी जी ने 20 अक्टूबर 1917 ई. को गुजरात के द्वितीय शिक्षा सम्मेलन में दिए गए अपने भाषण में राष्ट्रभाषा के कुछ विशेष लक्षण बताए थे, वे निम्न हैं.

1. वह भाषा सरकारी कर्मियों के लिए आसान होनी चाहिए.
2. उस भाषा के द्वारा भारत का आपसी धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक कामकाज शक्य होना चाहिए.
3. उस भाषा को भारत के ज्यादातर लोग बोलते हों.
4. वह भाषा राष्ट्र के लिए आसान होनी चहिए.
5. उस भाषा का विचार करते समय क्षणिक या अस्थायी स्थिति पर जोर न दिया जाए.

*अंग्रेजी भाषा में इनमें एक भी लक्षण नहीं है. यह माने बिना काम चल नहीं सकता. हिंदी भाषा में ये सारे लक्षण मौजूद हैं. हिन्दी भाषा मैं उसे कहता जिसे उत्तर में हिन्दू और मुसलमान बोलते हैं और देवनागरी या फारसी में लिखते हैं.*

## आज़ादी की लड़ाई और हिंदी पत्रकारिता

*खींचो न कमानों को न तलवार निकालो*

*जब तोप मुक़ाबिल हो तो अख़बार निकालो :- अकबर इलाहाबादी*

हिंदी पत्रकारिता स्वतंत्रता- आन्दोलन के समय जागरण और क्रांति की उज्जवल मशाल लेकर चला करती थी. 1857 में ही निकले **पयामे आजादी** ने आजादी की पहली जंग को नई धार दी.

स्वतंत्रता आन्दोलन को तीव्र करने में कानपुर के प्रताप कार्यालय का योगदान अतुलनीय है. गणेश शंकर विद्यार्थी मात्र स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ही नहीं अपितु एक महान पत्रकार भी थे. वह नवयुवकों को आश्रय देकर, प्रशिक्षण देकर उन्हें राष्ट्रहित में सर्वस्व गवां देने के निमित्त जोश भरते थे.

*कर्मवीर, स्वदेश, प्रताप एवं सैनिक* जैसी पत्रिकाओं ने मिलकर अंग्रेजों के नाक में दम कर रखा था जिसके सूत्रधार विद्यार्थी जी ही थे. इसी समय मदन मोहन मालवीय ने 1907 में 'अभ्युदय' का प्रकाशन कर उत्तर प्रदेश में जन जागृति का बिगुल बजा दिया.

कर्मवीर पत्र ने स्वतंत्रता के समय ओज एवं जोशपूर्ण शीर्षक 'राष्ट्रीय ज्वाला जगाइये' के साथ देश के युवाओं के हृदय में देश भक्ति का भाव भर दिया. स्वतंत्रता संग्राम में 12 बार जेल की यात्रा करने वाले और 63 बार तलाशियां देने वाले माखन लाल चतुर्वेदी जी ने हिंदी पत्रकारिता को जुझारू व्यक्तित्व प्रदान किया .

इन हिन्दी अखबारों से जुड़े पत्रकार प्रतिबंधित काल में भूमिगत होकर, हस्तलिखित या साइक्लोस्टाइल पत्र प्रकाशित कर क्रांति के दीपक को प्रज्ज्वलित रखते थे. हिन्दी इस दीपक में शब्द घृत बनकर अपना योगदान करती रही.

## आज़ादी की लड़ाई और हिन्दी पद्य साहित्य

स्वतंत्रता, स्वराज, समानता का जो सपना हमारे लेखकों, कवियों के मन में था उसे पं. नरेंद्र शर्मा, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, नेपाली, माधव शुक्ल, गयाप्रसाद शुक्ल सनेही, सियारामशरण

गुप्त व सोहनलाल द्विवेदी अपनी रचनाओं में रूपायित कर रहे थे. नवीन की रचनाएं ओज के प्रवाह को गति देने वाली थीं तो सुभद्राकुमारी चौहान की विख्यात कविता 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी' सैनिकों में जोश भरने वाली थी. झांसी की रानी के शौर्य का चित्रण ऐतिहासिक उपन्यासकार वृंदावन लाल वर्मा ने भी अपने उपन्यास में भी किया है. जयशंकर प्रसाद के नाटक चंद्रगुप्त व स्कंद गुप्त में देशप्रेम की अनुगूंजें हैं तो उनके काव्य में गुलामी की जंजीर को तोड़ने का आह्वान मिलता है. वे अमर्त्य वीर पुत्रों को दृढ़ प्रतिज्ञ होकर आगे बढ़ने का आह्वान कर रहे थे.

प. माखन लाल चतुर्वेदी की ''पुष्प की अभिलाषा'' कविता हो या महाकवि जयशंकर प्रसाद द्वारा प्रस्तुत प्रयाण गीत (हिमाद्रि तुंगश्रृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती / स्वयंप्रभा समुंज्वला, स्वतंत्रता पुकारती).

जगदम्बा ''हितैषी'' की- शहीदों के मजारों पे लगेंगे हर वर्ष मेले/ वतन पे मरने वालों का यही बाकी निशां होगा-हो या श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' का झंडा गीत ...विजयी विश्व तिरंगा प्यारा/झंडा ऊँचा रहे हमारा... - ये सभी हिंदी पद्य-रचनाएं देशभक्ति का बिगुल फूंक रही थीं.

## आज़ादी की लड़ाई और हिंदी गद्य साहित्य

महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, अज्ञेय, जैनेन्द्र, मोहन राकेश आदि हिन्दी लेखकों ने निबंध, कहानी, उपन्यास के द्वारा बुद्धिजीवी वर्ग के साथ -साथ समाज के हर तबके को स्वतंत्रता के बारे में कभी खुलकर तो कभी संकेतों में बताया.

रूस की 1917 की बोल्शेविक क्रांति ने दुनिया के लेखकों में एक नई तरह की प्रगतिशीलता का जज्बा पैदा किया था. प्रेमचंद इसी चेतना का प्रतिनिधित्व करते थे. उन्होंने कहानियों और उपन्यासों के माध्यम में जहां भारत के सामंतवाद और ब्रिटिश नौकरशाही की आलोचना की, वहीं गुलामी व ब्रिटिश शोषण के अनेक रूपों को उजागर किया.

उपेंद्र नाथ 'अश्क', यशपाल व भगवती चरण वर्मा के कथा साहित्य में भी स्वाधीनता की आंच दिखती है. धनपत राय का लिखा सोजेवतन तो अंग्रेजी शासन में जब्त हुआ. चांद का फांसी अंक भी जब्ती का शिकार हुआ. उन जैसे लेखकों पर अंग्रेजों की निगाह रहती थी. इसलिए इस खुफियागिरी से आजिज आकर धनपत राय ने प्रेमचंद नाम से लिखना आरंभ किया तथा बाद में इसी नाम से प्रसिद्ध हुए.

अंग्रेज़ जब तक इन बगावती कहानियों या उपन्यासों पर प्रतिबंध लगाते तब तक लाखों लोग इसे छुप -छुपाकर पढ़ चुके होते थे और हिन्दी भाषा इस तरह पंजाब से लेकर महाराष्ट्र (तत्कालीन बंबई ) एवं राजकोट से लेकर बिहार तक मनोरंजक साहित्य के जरिये चेतना को जगाने के कार्य में अहर्निश लगी हुई थी.

## आज़ादी की लड़ाई और हिंदी के नारे

कहा जाता है कि हर क्रांति के एक या एक से अधिक सूत्र-वाक्य होते हैं. ये सूत्र-वाक्य (स्लोगंस) वेद ऋचाओं की तरह अभिमंत्रित होते हैं जो जन जागरण का पांचजन्य फूंकने में सहायता करते हैं.

गांधी जी ने जहां '**अंग्रेज़ो भारत छोड़ो**' के सुविख्यात नारे दिये तो वहीं सुभाष ने आज़ाद हिंदी फौज में **जय हिन्द** को अभिवादन वाक्य बना दिया. लाला लाजपत राय ने युसुफ मेहर अली का सुझाया नारा '**साइमन कमीशन वापस जाओ**' कहकर फिरंगियों को ललकारा तो भगत सिंह ने '**इंकलाब ज़िंदाबाद**' के नारे से क्रांति को अमर करने का सूत्रवाक्य दिया.

इस प्रकार से देखते हैं कि हिंदी भाषा के नारों (वंदे मातरम, स्वराज हमारा..., आराम हराम है आदि) ने एक ओर ब्रिटिश की ताबूत में कील ठोंकने का काम किया वहीं दूसरी ओर पूरे देश को एक सूत्र में जोड़ कर रखा. ये मंत्र धार्मिक और मजहबी मंत्रों से अधिक लोकप्रिय हुए एवं लोगों की अटूट आस्था के शब्द -ध्रुव तारे बनकर उभरे.

## निष्कर्ष

हिंदी भाषा ने समग्र राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष में अपना अभूतपूर्व प्रभाव छोड़ा. उस समय संचार के साधन अत्यंत सीमित थे लेकिन भाषा के द्वारा भावों के विनिमय ने अंग्रेजों के तार और टेलीफोन को भी पीछे कर दिया. अगर उस समय हिन्दी उठ खड़ी नहीं होती, प्रबल रूप से जनचेतना का माध्यम न बनती तो हो सकता था भारत वर्ष के आज़ाद होने में कुछ और दशक लग जाते.

हिंदी को कोई राज्य-प्रश्रय भी नहीं मिला था किंतु जनता की गोद में पलकर यह सही अर्थों में देश के गौरव के साथ मुखर और जनता-जनार्दन की आवाज बनकर उभरी.

* * *

### अपने ज्ञान को परखिए उत्तर (पृष्ठ सं. 46)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | ग | 8. | ग | 15. | ख |
| 2. | क | 9. | ख | 16. | ख |
| 3. | क | 10. | घ | 17. | क |
| 4. | घ | 11. | ख | 18. | ग |
| 5. | ग | 12. | क | 19. | घ |
| 6. | ग | 13. | ख | 20. | घ |
| 7. | क | 14. | क | | |

# विश्व हिंदी दिवस

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी बैंक के देश-विदेश स्थित कार्यालयों में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन धूमधाम से किया गया. हम पत्रिका के पाठकों के लिए इन आयोजनों की संक्षिप्त झलकियां प्रस्तुत कर रहे हैं: – संपादक

## अंचल कार्यालय, चण्डीगढ़

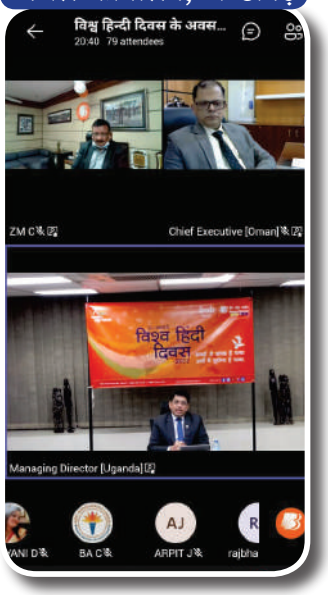


## अंचल कार्यालय, हैदराबाद

## अंचल कार्यालय, पटना

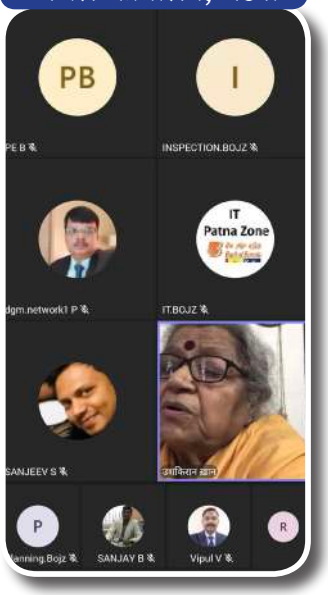


## अंचल कार्यालय, बेंगलूरु

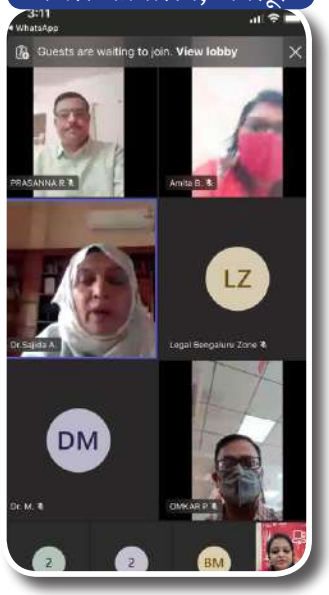


## अंचल कार्यालय, पुणे

## सिंगापुर कार्यालय

## अंचल एवं क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

## अंचल कार्यालय, मंगलूरु

## अंचल कार्यालय, अहमदाबाद

## अंचल कार्यालय, मेरठ

# विश्व हिंदी दिवस

## क्षेत्रीय कार्यालय, कोटा

## क्षेत्रीय कार्यालय, बांसवाड़ा

## क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूर

## क्षेत्रीय कार्यालय, झंझुनु

## क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलुरू जिला क्षेत्र

## क्षेत्रीय कार्यालय, हिसार

## सरकारी संपर्क एवं पी.एस.यू. विभाग, नई दिल्ली

## क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद क्षेत्र 3

## क्षेत्रीय कार्यालय, अमृतसर

## क्षेत्रीय कार्यालय, बनासकांठा

# विश्व हिंदी दिवस

## क्षेत्रीय कार्यालय, मेहसाणा

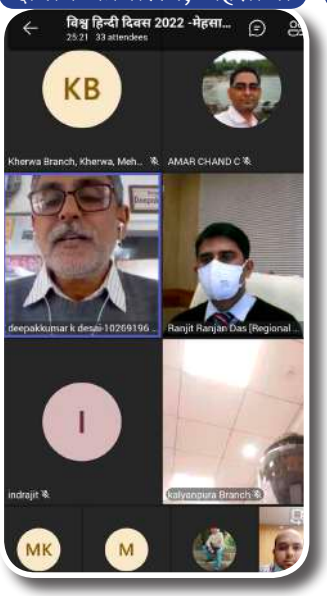


## क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर एवं बिलासपुर

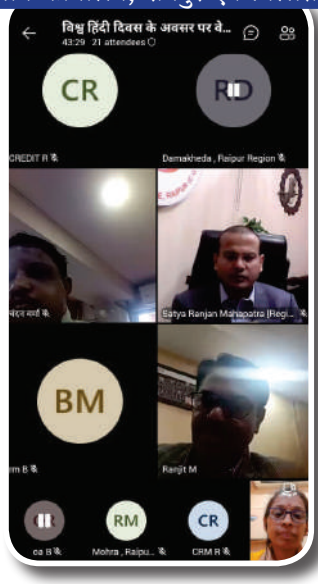


## क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर

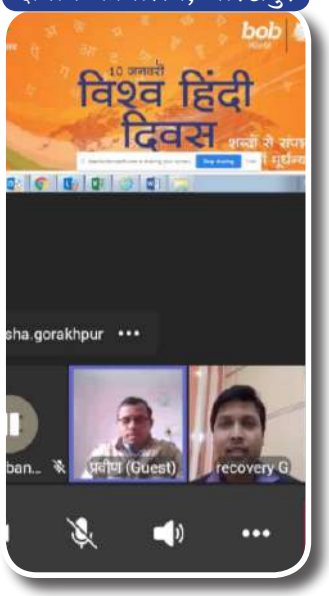


## क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी

## क्षेत्रीय कार्यालय, तेलंगाना उत्तर

## क्षेत्रीय कार्यालय, मुजफ्फरपुर एवं मुजफ्फरपुर 2

## क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर

## क्षेत्रीय कार्यालय, अजमेर

## क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर–2

## क्षेत्रीय कार्यालय, अमरावती

# विश्व हिंदी दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई मेट्रो उत्तर

क्षेत्रीय कार्यालय, रायबरेली

क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत शहर

क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा शहर 2

क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा जिला

क्षेत्रीय कार्यालय, भरूच

क्षेत्रीय कार्यालय, गोधरा एवं गोधरा 2

क्षेत्रीय कार्यालय, नवसारी

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरू उत्तर

क्षेत्रीय कार्यालय, नवी मुंबई

## 'बैंकिंग में साइबर अपराध' विषय पर अखिल भारतीय सेमिनार

बैंक ने 7 मार्च, 2022 को सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों, बीमा कंपनियों एवं अन्य वित्तीय संस्थानों हेतु 'बैंकिंग में साइबर अपराध' विषय पर मैसूरू (कर्नाटक) में अखिल भारतीय सेमिनार का आयोजन किया. सेमिनार का उद्घाटन बैंक के मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री अजय कुमार खोसला एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित कर्नाटक पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (सीआईडी) के पुलिस अधीक्षक श्री एम डी शरत द्वारा किया गया. सेमिनार की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए बैंक के उप महाप्रबंधक एवं प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह ने कहा कि बैंक द्वारा लगातार 8 वर्षों से हिंदी माध्यम में इस तरह के अखिल भारतीय सेमिनार का आयोजन किया जाता रहा है जिसमें एक ज्वलंत विषय पर बैंकों, वित्तीय संस्थानों एवं बीमा कंपनियों के स्टाफ सदस्यों से हिंदी में आलेख आमंत्रित किए जाते हैं एवं श्रेष्ठ आलेखों के लेखकों को प्रस्तुति हेतु सेमिनार में आमंत्रित किया जाता है. इस बार कोरोना के दौर में साइबर अपराधों एवं धोखाधड़ी में लगातार बढ़ोत्तरी को ध्यान में रखते हुए ''बैंकिंग में साइबर अपराध'' विषय को हिंदी में विचार-मंथन हेतु चयनित किया गया. हिंदी में ऐसे सेमिनार के आयोजन का मकसद बैंक से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों से संबंधित जानकारी आम लोगों की समझ में आनेवाली भाषा में उपलब्ध करवाना है. पुलिस अधीक्षक श्री एम डी शरत ने साइबर क्षेत्र में होने वाली धोखाधड़ियों के स्वरूप एवं उनकी कार्यप्रणाली पर विस्तृत जानकारी देते हुए आम लोगों को इसके संबंध में जागरूक करने की आवश्यकता पर बल दिया.

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में बैंक के मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री अजय कुमार खोसला ने कहा कि बैंकिंग क्षेत्र साइबर हमलों से अत्यधिक प्रभावित क्षेत्रों में से एक है. अतः बैंकिंग में उन्नत तकनीक के प्रयोग में दक्षता हासिल करने के साथ-साथ साइबर हमलों से सुरक्षा की सही जानकारी होनी जरूरी है. साइबर हमलों के स्वरूपों और बचाव के तरीकों का ज्ञान रखना और लोगों को इस संबंध में जागरूक करना हमारी प्राथमिकता है और इस तरह के आयोजन से साइबर सुरक्षा विषय पर लोगों में जागरूकता बढ़ेगी.

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सहायक निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (कार्यान्वयन), दक्षिण, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार श्री नरेंद्र मेहरा उपस्थित रहे. साथ ही, सेमिनार में बैंक के मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारी श्री सर्वेश गुप्ता, बेंगलुरू अंचल के महाप्रबंधक श्री सुधाकर डी नायक ए तथा क्षेत्रीय प्रमुख श्री आर मुरलीकृष्ण भी उपस्थित रहे. इस सेमिनार में भारतीय रिज़र्व बैंक सहित सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों एवं अन्य वित्तीय संस्थानों के उच्चाधिकारी तथा अन्य स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया. कार्यक्रम का संचालन बैंक के सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र ने किया.

# बैंक ऑफ़ बड़ौदा एवं महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय द्वारा 'महाराजा सयाजीराव वाद-विवाद प्रतिस्पर्धा' का आयोजन

बैंक ऑफ़ बड़ौदा एवं महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय द्वारा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए 'महाराजा सयाजीराव वाद-विवाद प्रतिस्पर्धा' तथा 'मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह' का आयोजन किया गया. इस आयोजन में बैंक के उच्चाधिकारीगण तथा विश्वविद्यालय के प्राध्यापकगण एवं विद्यार्थियों ने शिरकत की.

विश्वविद्यालय के कला संकाय के सहयोग से यह कार्यक्रम दो अलग-अलग राउंड में आयोजित किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने प्रतिस्पर्धा के दो विषयों 'सोशल मीडिया ने संबंधों को जीवंत बनाया है' तथा 'पर्यावरण संरक्षण एवं विकास परस्पर विरोधी संकल्पनाएं हैं' पर पक्ष एवं विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत किए. इस कार्यक्रम के अंतिम राउंड के पश्चात् सम्मान समारोह की शुरूआत विश्वविद्यालय के कला संकाय के प्रभारी अध्यक्ष डॉ. हितेश राविया के स्वागत सम्बोधन के साथ हुई. बैंक के प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह ने इस पूरे कार्यक्रम की पृष्ठभूमि पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला. बैंक के मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री अजय कुमार खोसला ने अपने मार्गदर्शी वक्तव्य में कहा कि प्रतिस्पर्धा के दोनों ही विषय बहुत ही प्रासंगिक हैं. उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रत्येक व्यक्ति को आगे बढ़ कर योगदान करना चाहिए. उन्होंने उपस्थित विद्यार्थियों को जीवन में आगे बढ़ने के लिए अपने गुरुजनों के प्रति सम्मान भाव रखने और अथक परिश्रम करने की आवश्यकता पर बल दिया. इस अवसर पर अपने विशेष वक्तव्य में विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉ. के एम चुडासमा ने कार्यक्रम के आयोजक बैंक ऑफ़ बड़ौदा तथा विश्वविद्यालय के कला संकाय की सराहना की. उन्होंने कहा कि बैंक ऑफ़ बड़ौदा के साथ विश्वविद्यालय का काफी पुराना संबंध है और बैंक कारोबार विकास के अलावा देश की भाषाओं के विकास के प्रति भी निष्ठापूर्वक नवोन्मेषी कार्यक्रमों का आयोजन करता रहता है जो कि अत्यंत सराहनीय है.

कार्यक्रम में बैंक की 'मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना' के तहत एम.ए (हिंदी) में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों, सुश्री प्रीति चौहान और श्री पटेल जिग्नेश कुमारगोरधन भाई को क्रमशः रु. 11,000 एवं रु. 7,500 एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए.

इस आयोजन के अलग-अलग सत्रों में विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, डॉ. अनीता शुक्ल, बैंक ऑफ़ बड़ौदा की वरिष्ठ प्रबन्धक सुश्री बबीता उपाध्याय ने संचालन किया तथा बैंक के सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापन किया.

# अपने ज्ञान को परखिए

1. हिंदी भाषा के लिए वर्ष 2021 का साहित्य अकादमी पुरस्कार किसे मिला है?
   (क) नव जीवन दत्त (ख) रामपाल चोपड़ा
   (ग) दया प्रकाश सिन्हा (घ) जलज गणेशन
2. किस देश ने दुनिया की पहली डुअल-मोड वाहन सेवा (Dual Mode Vehicle Service) शुरू की है?
   (क) जापान (ख) ऑस्ट्रेलिया
   (ग) चीन (घ) सिंगापुर
3. किस राज्य में भारत की पहली स्टील सड़क बनाई गयी है?
   (क) गुजरात (ख) महाराष्ट्र
   (ग) उत्तराखंड (घ) उत्तरप्रदेश
4. बौद्ध परंपरा के अनुसार, किस वृक्ष के नीचे रानी मायादेवी ने गौतम बुद्ध को जन्म दिया था ?
   (क) पिपल (ख) बरगद
   (ग) चंदन (घ) साल
5. कौन व्यक्ति हाल ही में, पंजाब नैशनल बैंक (PNB) के नए MDCEO बने हैं?
   (क) गणेश सक्सेना (ख) राहुल माधव
   (ग) अतुल गोयल (घ) महेश कपूर
6. प्रतिवर्ष 'रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया (RBI)' का स्थापना दिवस कब मनाया जाता है?
   (क) 01 जनवरी को (ख) 01 मार्च को
   (ग) 01 अप्रैल को (घ) 01 सितंबर को
7. 31 मार्च को पूरे भारत में आनंदी गोपाल जोशी का जन्म दिवस मनाया गया है, वह ..... थीं?
   (क) भारत की पहली महिला डॉक्टर
   (ख) भारत की पहली महिला इंजिनियर
   (ग) भारत की पहली महिला शिक्षक
   (घ) भारत की पहली महिला राज्यपाल
8. बार्क इंडिया (BRC India) के नए अध्यक्ष के रूप में किसे चुना गया है?
   (क) वेणुगोपाल शर्मा (ख) अरविन्द दिनकर
   (ग) शशि सिन्हा (घ) रघु चावला
9. निम्नलिखित में से कौन सा अंग मानव शरीर के विभिन्न भागों में ऑक्सीजन को प्रवाहित करता है?
   (क) प्लाज्मा (ख) लाल रक्त कोशिकाएं
   (ग) श्वेत रक्त कोशिकाएँ (घ) तंत्रिकाएं
10. हाल ही में, किस राज्य में भारत की पहली कागज रहित (Paperless) राज्य विधानसभा बनी है?
    (क) उत्तराखंड (ख) मणिपुर
    (ग) बिहार (घ) नागालैंड
11. किस राज्य में शयन मुद्रा में भगवान बुद्ध की सबसे बड़ी मूर्ति (100 फीट) बन रही है?
    (क) असम (ख) बिहार
    (ग) उत्तरप्रदेश (घ) नागालैंड
12. किस राज्य की सरकार ने हाल ही में, बेटियों के लिए कौशल्या मातृत्व योजना शुरू की है?
    (क) छत्तीसगढ़ (ख) झारखण्ड
    (ग) मध्यप्रदेश (घ) राजस्थान
13. निम्नलिखित में से कौन सा वायु प्रदूषक मनुष्य में रक्तदाब को बढ़ा देता है तथा हृदय संबंधी रोग पैदा करता है?
    (क) पारा (ख) केडमियम
    (ग) तांबा (घ) सीसा
14. हाल ही में, हुई घोषणा के अनुसार किस देश में भारत के बाहर पहला आईआईटी (IIT) संस्थान खोला जाएगा?
    (क) यूएई (ख) श्रीलंका
    (ग) नेपाल (घ) चीन
15. इन देशों में से किसमें तमिल एक प्रमुख भाषा है?
    (क) मॉरिशस (ख) सिंगापुर
    (ग) इंडोनेशिया (घ) म्यांमार
16. किस कंपनी ने हाल ही में, भारत का पहला गोल्ड पावर्ड कार्ड लांच किया है?
    (क) एचएसबीसी (ख) रूपीक
    (ग) क्रेडीला (घ) डीएचएफएल
17. टाटा संस ने हाल ही में, किसे एयर इंडिया (Air India) का नया प्रमुख नियुक्त किया है?
    (क) इल्कर आयसी (ख) जेम्स अर्नाल्ड
    (ग) ग्लिब्स मैक्स (घ) विटल ह्यूज
18. हीरे के संबंध में कैरेट क्या होता है?
    (क) शुद्धता (ख) द्रव्यमान
    (ग) भार (घ) घनत्व
19. हाल ही में, हुई घोषणा के अनुसार किस शहर में भारत का पहला बुलेट ट्रेन स्टेशन बनेगा?
    (क) अहमदाबाद (ख) मुंबई
    (ग) कानपुर (घ) सूरत
20. नागार्जुन सागर बहुद्देशीय परियोजना किस नदी पर स्थित है?
    (क) ताप्ती (ख) कोसी
    (ग) गोदावरी (घ) कृष्णा

(उत्तर के लिए पेज नं. 34 देखें)

# बैंकिंग शब्द मंजूषा

### Actuary बीमा–आकलनकर्ता

जोखिम–गणित का आकलन करने में महारत रखनेवाला व्यक्ति. जोखिम–गणित का आकलन विशेष रूप से बीमागत क्षेत्रों, यथा प्रीमियम, आरक्षित राशि, लाभांश एवं वार्षिक दरों से जुड़ा होता है. ये बीमा कंपनियों से जुड़े रहते हैं और इनका काम जोखिम के संदर्भ में आवेदनों का मूल्यांकन करना होता है.

### Bridging Loan पूरक–ऋण, तात्कालिक ऋण

किसी परियोजना में ऋण के आवेदन के संदर्भ में आधारभूत जमानत (सब्स्टैंटिव सिक्यूरिटी) उपलब्ध करवाने या ऋण से संबंधित नियमित करार को निष्पादित किए जाने की कार्रवाई विचाराधीन हो तो उस दौरान ऋण की कुल राशि का कुछ प्रतिशत पूरक ऋण के रूप में दिया जा सकता है. अंतरित ऋण की वास्तविक राशि का निर्धारण संबंधित मामले के स्वरूप के आधार पर किया जा सकता है. जमानत निर्मित किए जाने और नियमित ऋण–करार निष्पादित किए जाने तक किसी परियोजना की कुल ऋण–राशि के अधिकतम 90 प्रतिशत तक की राशि तात्कालिक ऋण के रूप में उपलब्ध कराई जा सकती है. तात्कालिक ऋण का सही–सही परिमाण हर मामले की पात्रता के आधार पर निर्धारित होता है. तात्कालिक ऋण पर संबंधित ऋण की सामान्य ब्याज–दर से कुछ अधिक ब्याज लिया जाता है.

### Cram-down deal अविकल्पी सौदा

किसी कंपनी का विलयन होने पर जब उसके शेयरधारकों के सम्मुख कोई बेहतर विकल्प नहीं बचता तो उन्हें मजबूरी में टेकओवर करनेवाली कंपनी द्वारा दिया जानेवाला ऑफर स्वीकार करना पड़ता है जो नकदी अथवा इक्विटी न होकर दोयम दर्जे के शेयर होते हैं जिनकी बाजार में अक्सर कोई साख नहीं होती. इसे अविकल्पी सौदा कहा जाता है.

### Free rider मुफ्त सवार

ऐसा निवेशक, जो बाजार के जोखिमों के बारे में पता लगाकर निवेश के बारे में उचित निर्णय लेने के बजाय दूसरों की दिखाई राह पर ही चलना पसंद करता है. ऐसा करके वह जोखिम की लागत और अन्य खर्चों से बच जाता है. वह किसी अग्रणी निवेशक द्वारा लिए गए निर्णय का केवल अनुकरण करके अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेता है.

### Golden parachute गोल्डन पैराशूट

अधिग्रहण की जानेवाली किसी कंपनी के निदेशक के साथ किया गया ऐसा करार, जिसमें यह शर्त निहित होती है कि कंपनी का अधिग्रहण किए जाने की स्थिति में उसे अत्यंत लाभप्रद पैकेज प्रदान किया जाएगा जिसमें बोनस के अलावा लाभप्रद स्टॉक विकल्प का भी समावेश होता है.

### Mirror account प्रतिरूप खाता

ऐसा खाता, जो मूल खाते का सही चित्रण और उसकी सही तस्वीर प्रस्तुत करता है. विदेशों से कारोबार करनेवाली कंपनियों द्वारा उस देश के बैंक–विशेष में खोले गए खाते का अपने देश के उसी बैंक में खोला गया खाता मूल खाते का प्रतिरूप खाता कहलाता है.

### Oligopoly अल्पाधिकार

ऐसा उद्योग या व्यापार, जिसमें समान उत्पाद बेचने वाले माल तथा सेवाओं के सिर्फ कुछ ही विक्रेता होते हैं. इसमें विक्रेताओं को किसी सांठ–गांठ के बिना कीमतों को नियंत्रित करने के लिए अव्यक्त अवसर मिलते हैं.

### Pure play company एकल व्यवसाय कंपनी

जब कोई कंपनी केवल एक ही प्रकार का व्यवसाय करती है तो वह इस श्रेणी के अंतर्गत आती है. बैंक ऐसी कंपनियों को ऋण देते समय अतिरिक्त सावधानी बरतते हैं क्योंकि ऐसी कंपनियों के कार्यकलाप अधिक जोखिमयुक्त होते हैं.

### Reserve currency आरक्षित मुद्रा

ऐसी विदेशी करेंसी, जो सरकार द्वारा धारित है क्योंकि सरकार का उसकी स्थिरता में विश्वास होता है और वह उसका उपयोग अंतरराष्ट्रीय ऋणों का निपटान करने के लिए करना चाहती है.

### Seed money बीज–धन

नए उद्यम की स्थापना में लगाया जानेवाला धन; उद्यम के लिए पूंजी उपलब्ध करवानेवाले द्वारा किसी नई कंपनी के गठन के पूर्व आवश्यक अनुसंधान और विकास के निधीयन के लिए प्रारंभ में प्रदत्त पूंजी.

# चित्र बोलता है.

**1**

गुड़िया तू अपनी पहचान बना,
खुद ही अपनी राह बना.
जीवन के इस पथरीले डगर पर
तू भी अपना पद-चिह्न बना ।।

भावना सिन्हा, वरिष्ठ प्रबंधक
बड़ौदा शहर-II क्षेत्र

**2**

दरिद्रता में पला एक सपना
मान सम्मान होगा एक दिन अपना
करेगी मेहनत, पाएगी अवसर,
फिर बेटी बनेगी अफसर

युक्ता चौधरी, वरिष्ठ प्रबंधक
सरकारी संपर्क एवं पी.एस.यू व्यवसाय विभाग,
नई दिल्ली

**3**

''क्या सोच रही हो तुम माँ, क्यूं इतना मुस्कुरा रही हो तुम माँ,
स्वप्न तुमने देखा था उसको पूरा करूंगी मैं माँ.
न रुकूँगी, न थकूँगी, आगे बढ़ूँगी मैं माँ,
देश की सेवा कर तुम्हें गर्वित करूंगी मैं माँ.''

कृष्णा शाह, व्यवसाय सहयोगी
बड़ौदा जिला क्षेत्र

मेरी बेटी मेरा मान,
देश का बढ़ाएगी सम्मान।
देश की सेवा में समर्पित है हमारी जान,
क्योंकि मेरा भारत देश है महान।

अंशिता वर्मा, अधिकारी
सावरकर पथ विदिशा शाखा, सागर क्षेत्र

बिटिया सुन यह मेरा मंतर
नहीं गरीबी तेरा मुकद्दर
मेरी तरह न गलती करना
पढ़-लिख कर तू बनना अफ़सर

गौतम कुमार सागर, मुख्य प्रबंधक
बड़ौदा अकादमी, बड़ौदा

माँ तेरे अनमोल सपनों को
मैं तेरी नन्हीं बिटिया करूँगी साकार,
ख़ूब पढ़ लिख कर मैं
आगे बढ़ूंगी हर बार.

इन्दु कुमारी, अधिकारी
झांझरडा शाखा, जूनागढ़ क्षेत्र

पढ़ लिखकर कुछ बनने का
तेरा है अधिकार.
बैंक ऑफ़ बड़ौदा साथ है
तो हर सपना हो साकार.

लीना परमार, व्यवसाय सहयोगी
कैलाश पुरी शाखा, आगरा क्षेत्र

है तुझको भी शिक्षा का अधिकार,
एक दिन तूँ ऐसा काम करे,
बिटिया तूँ ऊंची उड़ान भरे.
दुनिया में अपना नाम करे.

वंदना गुप्ता, वरिष्ठ प्रबंधक
बड़ौदा शहर-II क्षेत्र

**प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप रू. 500 का गिफ्ट कार्ड / राशि दी जा रही है**

'चित्र बोलता है' के स्थायी स्तंभ के अंतर्गत अक्टूबर-दिसंबर, 2021 अंक में प्रकाशित चित्र पर पाठकों से काफी उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं/रचनाएं प्राप्त हुई हैं. पाठकों से अनुरोध है कि इस शृंखला में प्रकाशित इस चित्र पर आधारित अपने विचार पद्य के रूप में हमें अधिकतम चार पंक्तियों में लिख कर भेजें. श्रेष्ठ तीन रचनाओं को पुरस्कृत (प्रत्येक को रू. 500/-) किया जाएगा और उन्हें हम 'अक्षय्यम्' के आगामी अंक में भी प्रकाशित करेंगे. पाठक अपने विचार हमें डाक से या ई-मेल पर अपने व्यक्तिगत विवरण और स्वरचित घोषणा सहित 25 जून, 2022 तक भेज सकते हैं.

## हिंदी का सरताज प्रतियोगिता का आयोजन

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर दिनांक 10 जनवरी से 12 जनवरी, 2022 तक बैंक के विदेशी टेरिटरी सहित सभी स्टाफ सदस्यों के लिए हिंदी का सरताज प्रतियोगिता का आयोजन डिजिटल माध्यम से किया गया जिसमें 14685 स्टाफ सदस्यों द्वारा प्रतिभागिता की गई. इस तीन दिवसीय प्रतियोगिता में भाषा एवं व्याकरण संबंधी विविध विषयों पर प्रश्नों के आधार पर प्रतियोगिता आयोजित की गई.

## ट्रांजेक्शन संबंधी एसएमएस सेवा के सक्रियण हेतु 'महालॉग–इन दिवस'

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में एक नवोन्मेषी प्रयास करते हुए इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर दिनांक 18, 19 एवं 21 फरवरी, 2022 को बैंक की बहुभाषी ट्रांजेक्शन संबंधी एसएमएस सेवा के सक्रियण हेतु बैंक के सभी कार्यालयों में 'महा लॉग–इन दिवस' मनाया गया. इस अवसर पर बैंक के स्टाफ सदस्यों एवं ग्राहकों के खातों में हिंदी में एसएमएस सेवा को सक्रिय किया गया. इस अभियान में बैंक के उच्च कार्यपालकों ने भी बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया.

# [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]